युद्ध के मोर्चे से

एक पायलेट बेटे के पत्र

सावित्रीदेवी वर्मा

1968

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-6

EK POILET BETE KE PATRA

BY

Savitri Devi Verma

प्रकाशक
रामलाल पुरी, संचालक
आत्माराम एण्ड संस
काश्मीरी गेट, दिल्ली-6

कहीं हम भूल न जाएँ

मै किसी भी प्रकार की कायरता पसन्द नहीं करता। अहिंसा मे जिस वीरता की जरूरत पड़ती है, वह कायरता से नहीं आ सकती। हिसा और अहिसा, दोनों ही के लिए बहादुरी जरूरी है। वस्तुतः अहिसा के लिए तो और अधिक, क्यों अहिंसा अगर सबसे ऊँचे दर्जे की बहादुरी नहीं है, तो वह अहिसा नही है।

चाहे कितनी भी बड़ी दुनियावी ताकत क्यों न हो, उसके सामने दृढ़तापूर्वक घुटने न टेकने से बढ़ कर कोई बहादुरी नहीं हो सकती। इसमे प्रतिशोध की भावना नहीं होनी चाहिए और वह पक्की धारणा होनी चाहिए कि आत्मा को छोड़कर और कोई चीज अमर नहीं है।

—महात्मा गांधी

\+ + +

लड़ाइयाँ बड़ी भयंकर होती हैं। इससे लाखों लोग मरते है, बड़ा विनाश होता है। बावजूद इसके सभी एक दिन मरते है और अगर किसी महान् उद्देश्य को पूरा करने मे हमे समय से कुछ पहले मरना पड़े तो यह दुःख की बात नहीं है। हमें वीरों की तरह मौत का सामना करना है।

—जवाहरलाल नेहरू

भारत के लाल ने कहा था

पाँच अगस्त एक ऐसी तारीख है, जो हमारे इतिहास मे, तवारीख म एक खास जगह पाएगा और इस तारीख को कुछ समय तक के लिए भूलना बहुत मुश्किल होगा। अभी वह 5 तारीख का सिलसिला खत्म नही हुआ। आप जानते हैं कि 5 अगस्त को काश्मीर के अन्दर पाकिस्तान के हजारो आदमी, हथियारो के साथ, काफी तेजी से बढे और जोरदार हथियारों के साथ काश्मीर आए और उन्होने न सिर्फ काश्मीर मे बल्कि हम सबके लिए एक खतरे की हालत पैदा की। एक सूबे के अन्दर अगर पाँच-सात हजार आदमी बाहर से पहुँच जाएँ, और हथियारों के साथ, तो आप अदाजा कर सकते हैं कि कितनी खतरनाक सूरत पैदा हो सकती है। कुछ महीने पहले भुट्टो साहब ने कहा था कि काश्मीर पर उनका एक 'मास्टर प्लान' है। कहा था कि हमारी कोई बडी स्कीम है और उस स्कीम के मातहत हम काश्मीर के अन्दर काम करेंगे, एक कदम के बाद दूसरा कदम उठाएँगे। यह बात हमने सुनी थी, उससे थोडे बहुत खतरे का हमे अन्दाजा भी हुआ था। लेकिन दर-असल यह ख्याल नही था कि कच्छ के झगडे के बाद और कच्छ पर एक समझौता होने के बाद इतनी जल्दी कश्मीर पर वे अपना 'मास्टर प्लान' चलाने की कोशिश करेंगे।

घुसपैठियों की स्कीम विफल

उनका ख्याल था कि काश्मीर मे एक बगावत होगी। वे समझते थे कि काश्मीर मे क्रान्ति होगी और सारा काश्मीर इसके लिए तैयार बैठा है कि वह पाकिस्तान के साथ जाए और उन्होंने उस क्रान्ति या उस इन्कलाब को पैदा करने के लिए काश्मीर मे हथियारबन्द आदमी भेजे। जब उन्होने उन्हे भेजा, तब हमे भी अपनी सिक्योरिटी फोर्सेस के जरिए उनका मुकावला ताकत के साथ करना पडा। यह कोई आसान बात नही थी, छिपे हुए, चुपके-चुपके सैकडो पहाड़ी रास्तो से उनका आना और कही आग लगा देना, कही पुलिस की चौकियो पर हमला कर देना, कोशिश करना कि वे हवाई अड्डे पर पहुँचे, बस्ती मे आग लगाएँ, इन तमाम चीजो को जब वे कर रहे थे तो जैसा मैंने कहा कि एक तरफ हमारी सिक्योरिटी फोर्सेस उनका मुकाबला कर रही थी, दूसरी तरफ काश्मीर के रहने वाले उनको न जगह देते थे, न पनाह देते थे और न खाने के लिए सामान

देते थे। उन्होंने यह साबित किया कि काश्मीर आजाद हिन्दुस्तान का हिस्सा है और उसका पाकिस्तान से कोई मतलब नही, कोई सरोकार नही।

छम्ब के इलाके मे सौ टैंकों के साथ हमला

मेरे ख्याल मे पाकिस्तान को इससे बड़ा धक्का लगा कि उन्होने जो तस्वीर बनाई थी, जो यह समझा था कि काश्मीर तो दो-तीन दिनो के अन्दर पाकिस्तान में आकर मिल जाएगा, वह गलत साबित हुई। जब उन्होंने देखा कि वे इस बात मे कामयाब और सफल नही हुए, तब उन्होंने हमले का एक दूसरा रास्ता अख्तियार किया। हमने अपनी तरफ से कोई आक्रमण, कोई हमला पाकिस्तान के एक भी इंच पर शुरु मे नही किया और जब वह काश्मीर में हमलावर भेज रहा था, तब भी हमने उनको रोकने का ही काम किया। लेकिन जब उसमे पाकिस्तान को नाकामयाबी हुई, काश्मीर मजबूती से डटा रहा, काश्मीर की गवर्नमेंट और काश्मीर के रहने वालों ने उनका मुकाबला किया, तब फिर पाकिस्तान ने सोचा कि अब फौजो के साथ काश्मीर पर हमला करना चाहिए। अभी तक तो [illegible] वह छिपा हुआ था, अभी तक उसने छिपकर हमला किया था। कहा जा रहा था कि जो लोग आए हैं, ये तो काश्मीर के अन्दर के लोग हैं, काश्मीर का रहने वाले हैं और यहाँ काश्मीर मे रहने वाले ही हिन्दुस्तान की गवर्नमेंट के खिलाफ काम कर रहे हैं। लेकिन यह बात कब तक छिपी रहती ? जब उनको उसमें सफलता और कामयाबी नही मिली, तब उन्होने छम्ब के इलाके मे पूरी फौज के साथ, सज-धज के साथ, पूरे सामान के साथ, सौ टैंको के साथ हमला किया।

काश्मीर—हिन्दुस्तान का अटूट हिस्सा

काश्मीर हिन्दुस्तान का अटूट हिस्सा है और वह टूट नही सकता है, यह बात आज समझ लेनी है। हमे रज है, हमे अफसोस है कि आज पाकिस्तान ने काश्मीर लेने के लिए एक फौजी हमला किया है। कौन-सा इटरनेशनल लॉ है, कौन-सा कानून है कि जहाँ कहीं, इस तरह का कोई मामला सिक्योरिटी कौंसिल मे पडा हुआ हो, वहाँ एक मुल्क दूसरे मुल्क पर हमला करे। फौजों के जरिए, अपनी ताकत और हथियारो के द्वारा उस पर कब्जा करना चाहे, यह कहाँ तक कानूनी है और यह कहाँ तक मुनासिब बात है ? इसलिए मैं चाहता हूँ कि आज दुनिया के सब देश और सिक्योरिटी कौसिल इस बात को महसूस करे कि आज हमारी हिन्दुस्तान की सही लीगल पोजीशन क्या है, हमारी कानूनी हैसियत क्या है ? ठीक है हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का सम्बन्ध अच्छा हो, उसके लिए कोई कोशिश करता है तो जरूर करे, उसमे हमे ऐतराज नही है। आखिर हमे पडौसी मुल्क बन कर रहना है। यह आपस मे खिंचाव, मनमुटाव, दुश्मनी के जज्बे और भावना से रहना, यह पडौसी मुल्को के अन्दर बहुत बडी मुसीबते और दिक्कते पैदा करता है, वह एक अलग बात है। लेकिन अगर काश्मीर को बुनियाद बनाकर समझौते की शक्ल बनाने की कोशिश करे, तो हमारे लिए उसे मानना नामुमकिन है और हम अपनी जगह से नही हट सकते हैं।

अन्तिम घोषणा

हमारे स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री शान्ति के दूत थे। ताशकन्द के समझौते के बाद उन्होने कहा—"हमने जिस दृढता से युद्ध का मुकाबला किया और विजय हासिल की, उसी दृढता और शक्ति से हम इस शान्ति-समझौते का पालन भी करेगे।"

भूमिका

एक कहावत है कि अन्त भला सो सब भला। पाकिस्तान हमारा पड़ोसी है। 1947 में देश का बँटवारा हुआ। खैर, भाई-भाई में बँटवारा हो ही जाता है पर इन्सानियत का यह तकाजा है कि अलग होकर भी वे भाई ही बने रहते हैं। पड़ौसी की तरक्की हो तो अपना भी लाभ ही है।

दुर्भाग्य है कि पाक-भारत परस्पर टकरा गए। पर शुक्र है कि ताशकन्द का समझौता इस दुखद घटना को सुखान्त बना गया। अपने स्व० प्रधानमन्त्री के शब्दों मे हमें पूरी आस्था है कि "हमने जिस दृढ़ता से युद्ध का मुकाबला किया और विजय हासिल की, उसी दृढ़ता और शान्ति से इस शान्ति-समझौते का पालन भी करेंगे।"

सारा देश इस घोषणा के पालन के लिए तैयार है। पर इस समझौते से जिन शहीदों ने देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी, उनके बलिदान का महत्त्व कम नही हो जाता।

वर्तमान पीढी और आने वाली पीढी के लिए हमें नया इतिहास लिखना है। उन वीरों की कहानियाँ लिखनी हैं जिन्होने देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने प्राणो की आहुति दी। जीवन सत्य है, पर मृत्यु उससे भी बडा सत्य है। मृत्यु भी जिनसे डर जाए, जिनके आगे झोली फैलाकर सहमी-सी खड़ी रहे, जो हँसते-हँसते अपने प्राण मृत्यु की झोली मे डाल दें, ऐसे रणबाँकुरे ही मातृभूमि का शृंगार हैं।

हमें समय की माँग को समझकर साहित्य रचना है। बच्चो, किशोरों और नवसाक्षरो के लिए ऐसा साहित्य रचना है जो उनमें वीर भावना पैदा करे, जो अपने देश की वर्तमान स्थिति से उन्हें परिचित कराये। रणबाँकुरों के अदम्य साहस और वीरता की कहानियो से उन्हे प्रेरणा मिले ताकि वीरों की परम्परा बराबर बनी रहे।

इसी उद्देश्य से यह पुस्तक लिखी गई है। इन पत्रो को लिखते समय पी० आई० बी०, आकाश-वाणी से प्रसारित तथा समाचारपत्रों में छपे लेखो और सूचनाओं का स्वतन्त्रतापूर्वक उपयोग किया है। इनके अतिरिक्त पायलेट बेटों के पत्र तथा जो इंटरव्यूज प्राप्त हो सकी उनसे भी मैटर लिया गया है।

पहली बार हमारी वायु-सेना इस युद्ध मे सक्रिय हुई। हमारी वायु-सेना के इस अमूल्य सहयोग ने एक ऐसा चमत्कार कर दिखाया कि स्थल-सेना का हौसला चौगुना हो गया और विजय हमारे हाथ लगी। इस पुस्तक में पत्रो के रूप मे अपने हवाबाजों की वैयक्तिक वीरता के कारनामो का वर्णन किया गया है।

यह बिलकुल ठीक कहा गया कि, चाहे भूमि पर हो अथवा आकाश मे, भारत की सबसे अधिक सर्वोच्चता उसके शानदार सैनिकों के रूप मे प्रकट हुई, न कि उसके साज-सामान के रूप मे।

यही वह विमान-चालकों का शौर्य था, जिसे देश ने पूरी शान के साथ आकाश मे चमकते हुए देखा। उसी शौर्य की कुछ झाँकियाँ इस पुस्तक मे प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है।

मै यह बात स्पष्ट कर देना चाहूँगी कि यह पुस्तक कोई इतिहास नही है। हो सकता है कि कुछ तथ्य इतिहास की कसौटी पर सही न उतरे। इतिहास तो हमेशा खोज का विषय रहा है और यथार्थता को सामने लाना इतिहासज्ञों का काम है।

अधिकाश पाठको, नवसाक्षरो को यह जानने की इच्छा होगी कि लडाई कैसे शुरू हुई, और अन्तिम समझौता क्या रहा ? इसीलिए पुस्तक के आरम्भ मे सक्षेप मे ये सूचनाएँ दे दी गई हैं। उसका अभिप्राय किसी देश पर दोषारोपण करना नही है। पर इतिहास के तथ्य चाहे अतीत काल की गाथा बनकर रह जाएँ, पर उन्हे मिटाया नही जा सकता। पाकिस्तान के भी जो वीर बहादुरी से लडते हुए शहीद हुए हैं, उन वीरो के प्रति भी हम आदर प्रकट करते हैं। वीरो का एक समाज है, शिष्टाचार है। युद्ध समाप्त होने पर वे एक-दूसरे के मित्र और प्रेम के पात्र हैं। जिनसे हम लडे हैं आज वही हमारे मित्र बन जाएँ, तो इससे बढकर और अच्छी सौभाग्य की बात क्या हो सकती है।

14, फैज बाजार
दरियागज, दिल्ली-6

—सावित्रीदेवी वर्मा

1 युद्ध के मोर्चे से—
एक पायलेट बेटे का पत्र

प्रलोभन देकर अपनी ओर मिलाना चाहा। काश्मीरी भली प्रकार पाकिस्तानियो की चाल समझते हैं। वे जानते है कि पाक-अधिकृत काश्मीर का जो हाल इन लुटेरों ने किया है, उससे बुरा हाल हमारा करेंगे।

इन घुसपैठियों की पीठ पर पाकिस्तानी सेनाएँ थीं। जब काश्मीरी जनता से उन्हें कुछ मदद नही मिली तो उन्होने काश्मीर पर खुला हमला कर दिया। पाकिस्तान का असली उद्देश्य भारतीय सेना के काफी बड़े हिस्से को नष्ट करने और इस विनाश के बाद भारतीय सुरक्षा को चुनौती देना था। उनकी यह योजना बहुत सोच-समझ कर, कई महीनों पहले, बडी तैयारी के बाद बनाई गई थी। पहली सितम्बर, 1965 को, जब छम्ब पर आक्रमण किया गया तो पाकिस्तान टैंकों की दो रेजिमैट लेकर आगे बढा और उनकी पीठ पर तोपखाना उनकी मदद के लिए था।

हम लोगों ने तो कभी यह सोचा भी न था कि युद्ध इतने व्यापक रूप से होगा क्योंकि हमारी नीयत युद्ध की कभी नही रही। केवल सीमा पर छेड़खानी होगी, ऐसा हमारा ख्याल था। पर पाकिस्तान अपनी योजना के अनुरूप छम्ब के युद्ध को निर्णयात्मक युद्ध बनाकर लडना चाहता था। इसीलिए उसने इतनी अधिक संख्या मे अपनी फौज तोपखाना और हवाई सेना दाँव पर लगा दी थी। उसका उद्देश्य था कि काश्मीर के साथ भारत का सम्बन्ध, सड़क और पुल तोड़ कर, काट दिया जाए और सप्लाई-लाइन कट जाने पर काश्मीर में हमारी सेना को घेर कर नष्ट कर दिया जाए। भारत उसकी चाल को समय रहते भाँप गया। भारतीय स्थल-सेना और वायु-सेना चौकस हो गई, और वे बड़े साहस के साथ न केवल मुकाबिले को अपितु शत्रु को परास्त करने के लिए भी कटिबद्ध हो गई। छंब-जोरियाँ क्षेत्र में जवाबी कारवाई करने में हमारे अनेक योद्धा वीरगति को प्राप्त हुए।

यकीन करना माँ, हमें ऐसा लगा मानो एक भारी झटका लगा हो। पर इस झटके ने हमें सावधान और अधिक सचेत कर दिया। तुरन्त मन्त्रणा की गई और समय हाथ से न निकल जाए, उससे पहले कार्रवाई करने का निश्चय किया गया। काश्मीर मे ही युद्ध किया जाता तो शत्रु अपने अड्डों से नया जीवन प्राप्त करके हमें वही घेर लेता।

इसलिए यह ज़रूरी था कि उसकी युद्ध-चौकियों को, सप्लाई-क्षेत्रों को नष्ट किया जाए। हमे अपनी आजादी की जीवन-रेखा को हर कीमत पर बचाना था। इसीलिए बचाव के लिए सीधी कार्रवाई करना बहुत जरूरी था। इसका तुरन्त नतीजा निकला। छम्ब पर दबाव घट गया और काश्मीर का बचाव हो गया। हम इतने पर ही रुक जाने को तैयार थे परन्तु पाकिस्तान के योजनाबद्ध हमले को रोकने के लिए हमें कायरता और हिंसा के बीच का चुनाव करना था। जो युद्ध हम पर थोपा गया, उससे भागना कायरता थी, और भारत माँ के बेटे कायर नही हो सकते। माँ, हमने स्वराज्य कुरबानी करके प्राप्त किया है। उन्होने केवल सौदेबाजी मे इसे हासिल किया है। इसलिए हमने शक्ति का नही, आजादी बनाये रखने के सकल्प का प्रदर्शन किया।

माँ, लुटेरो और रक्षको मे भारी अन्तर है। हमारा दृष्टिकोण है कि हमारी अखण्डता पर चोट न की जाए। क्योकि पाकिस्तान हर तरह से हमारी धर्म-निरपेक्षता और देश की अखण्डता को नष्ट करने पर जुटा हुआ है। इसलिए उसके दाँत तोडने जरूरी है। दुनिया के आगे उसकी बुरी नीयत का पर्दाफाश करना ही होगा। उसने भारत के देश-भक्त मुसलमानों के ईमान और विश्वास को खतरे मे डाला हुआ है। फूट डाल कर, प्रलोभन दिखाकर हमारे सिक्ख भाइयों को वह फुसलाना चाहता है। मुझे तुम्हारे इस पत्र से यह जानकर बडी तसल्ली हुई कि हमारे देश मे नागरिक रक्षा और शाति बनाए रखने में हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, पारसी सभी जाति-धर्म के लोग मिलकर सक्रिय है। सीमा पर सफलतापूर्वक लड़ाई चालू रखने के लिए देश की अन्दरूनी शान्ति और व्यवस्था को कायम रखना बहुत ही जरूरी है।

अच्छा, तो तुम और आशा तथा मौसी जी सभी रेडक्रास और मोहल्ले की सुरक्षा मण्डली मे हो। माँ, काश्मीर के अनेक शरणार्थियों के लिए गर्म पकड़े, मौज़े, टोपे आदि जुटाकर तुम आगे भेज रही हो, यह बहुत अच्छा काम है।

तुमने लिखा है कि शहर में रात को ब्लैक-आउट रहता है। चेतावनी का भोंपू (साइरन) बजने पर आप लोग आवश्यक सावधानी बरतती ही होंगी। इस लडाई में हवाई युद्ध का विशेष महत्त्व रहेगा। यद्यपि पाकिस्तान के पास बेहतरीन किस्म के

सैबर जैट है पर हमारे पायलेटों ने उनके दाँत खट्टे करने का निश्चय कर लिया है। इस समय हवाई युद्ध के विषय मे कुछ कहना जल्दबाजी होगी, पर आगामी पत्र में मै तुमको इस विषय में बता सकूँगा। तुम मेरी चिन्ता मत करना। माताओ की दुआएँ हमारे साथ है और हमारे हौसले बुलन्द है।

दो दिन तक पत्र लिखने का अवकाश नही मिला। आज इसे पूरा कर दूंगा। आज आसमान साफ है। सूरज चमक रहा है। हमारे हवाई जहाज गश्त कर रहे है। ये सतर्क प्रहरी जिन पर भारत को गर्व है, जो हमारी थल सेना के रक्षक बने हुए है, उसकी पुकार पर हरदम हाजिर है। मुझे उनकी सफलता पर बडा गौरव है, यह सोच कर कि आज मै भी एक पायलेट हूँ। अनेक युवक पायलेट जोकि मेरे सिखाये हुए है किस आन-बान और शान से सफलतापूर्वक शत्रु के अभिमान 'सेबर जैट' का ध्वंस करने में सफल हुए है। ये वे सेबर जैट है, जो अमेरिका ने, केवल चीन के विरुद्ध युद्ध में इस्तेमाल करने का वचन लेकर, पाकिस्तान को दिए थे। आज पाकिस्तान अमेरिका के दिए सभी शस्त्रों को भारत के विरुद्ध इस्तेमाल कर रहा है। हमे इन अभिमानियो का अभिमान तोड़ना है।

माँ, याद है जब मैंने एयर फोर्स ज्वाइन की थी, तुम कितनी व्याकुल हो उठी थीं ? कहती थी—'बेटा, तू तो मेरी पहलौठी का है और ऐसे खतरे की लाइन ज्वाइन करली है।' आज अपनी माँओ की यही बात मुझे मेरे शागिर्द भी सुनाते है। एक माँ ने तो मुझ से कहा भी था—'बेटा, किसी तरह मेरे पुत्र को हवाई सेना मे भर्ती होने से रोको।' मैने उससे पूछा—माताजी, यदि आप सभी माताएँ अपने-अपने बेटे के लिए ऐसा ही निश्चय करेंगी तो बताइए हमारे देश की हवाई सेना कैसे तैयार होगी ?

मेरे ऐसा कहने पर सभी समझदार माँएँ चुप हो जाती थीं। याद है माँ, तुम्हें भी तो एक दिन इसी प्रकार चुप करा दिया था और उस दिन से तुमने मुझे हमेशा प्रोत्साहन ही दिया है। माँ, तुम कहती हो, इन धोखेबाज दुश्मनो को अच्छा सबक सिखाया जाना चाहिए। वही तो हम अब करने जा रहे हैं। इन्हें अपने उधार माँगे हुए पंखों का घमण्ड है। इनका एक-एक पंख नोच लिया जाएगा तो ये पूँछमुँडे कौए रह जाएँगे। माँ, मै अगले पत्र में लिखूँगा कि हमने इनकी चालों को किस प्रकार

ाफल बनाया ।

सुना है विनोद को भी कोर्स पर से कॉल कर लिया गया है । उसका पत्र आया था । वह इस समय स्यालकोट के क्षेत्र मे लड रहा है । उसने लिखा है कि जालन्धर, अमृतसर, फिरोजपुर जहाँ-जहाँ से भी हमारे जवान गए, जनता ने उसका स्वागत किया, उन्हे प्रोत्साहन दिया । हर जगह उनके लिए चाय-पानी, गर्म-गर्म भोजन लेकर माताएँ और बहने इन्तजार करती मिली । स्कूल और कालिज के लडके-लड़कियों ने उन्हें उपहार-पैकिट दिए । हमारे जवानो को माँ-बहनो के इस सहयोग और शुभकामनाओ से बडा प्रोत्साहन मिला । बहिनों ने सीमा पर उनकी आरती उतारी, उनके माथे पर तिलक लगाया, उनके राखी बाँधी और कहा—"भैया, यह विजय-तिलक तुम्हे यशस्वी बनाए, यह राखी कवच बन कर तुम्हारी रक्षा करे ! भारत माता की लाज तुम्हारे हाथ है !" जयहिन्द के नारो से आकाश गूँज उठा । विनोद ने लिखा है कि हमारे जवानों के हृदय गद्गद हो गए, उनमें मानो अदम्य साहस और वीरता की भावना उछालें मारने लगी और देश की आन-बान बनाए रखने के लिए हमारी पलटने मार्च करती हुई आगे बढ रही है ।

शेष समाचार फिर—

आपका बेटा
जे० के०
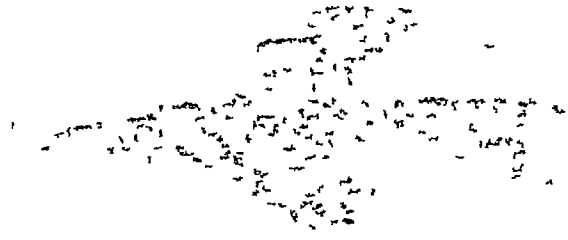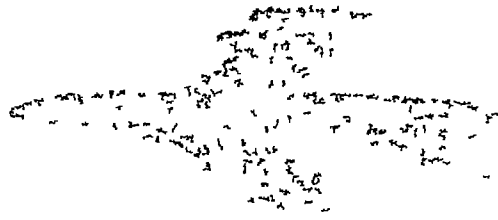
2 युद्ध के मोर्चे से— एक पायलेट बेटे का पत्र

प्यारी माँ,

जयहिन्द !

तुम्हारे पत्र मिलते रहे है, तुमने हर लिफाफे में पता लिखकर दो इनलैंड कवर जवाब देने के लिए भेजे है। और लिखा है कि केवल दस्तखत करके तारीख डालकर भेज दूँ ताकि तुम्हे तसल्ली हो जाए कि तुम्हारा बेटा सही-सलामत है। माँ, तुम इतना घबड़ाओ मत। युद्ध क्षेत्र का नज़ारा मिनटों में बदलता है और उसी के साथ सैनिकों की परिस्थिति भी। तुम यह समझो कि इस समय मेरी माँ भारत माता है और उसकी रक्षा के निमित्त ही हम सोचते-विचारते और करते है। तुम एक क्षत्राणी हो। अपने देश के लिए किसी क्षत्राणी का सबसे बड़ा समर्पण है अपना नौजवान बहादुर बच्चा !

तुम्हारे प्रेरणाप्रद पत्रों से मेरी हिम्मत बढ़ती है। यह जानकर मुझे प्रसन्नता होती है कि हमारी माँ-बहनें रक्षा-कोष के लिए धन इकट्ठा करने में जुटी हुई हैं। बीमारों की देखभाल, उनके परिवारों को सहयोग देने, धीरज बँधाने का काम सचमुच

में बहुत महत्त्व का है। जवान को जब यह अनुभव होता है कि मेरे पीछे मेरे परिवार, देश और समाज की धरोहर है, उनका दुख-सुख बँटाने वाले वहाँ एक नही अनेक है, तो वह बेफिक्र होकर सीमा पर लड सकता है।

माँ, विश्राम के कुछ क्षण जो हमे मिलते है उनमे हम फटाफट नहा-धोकर, कुछ खाकर सुस्ताने की सोचते है ताकि तरो-ताजा होकर फिर ड्यूटी पर पहुँच सकें। ऐसे भी दिन बीतते है जब दो-चार दिन तक नहाने-खाने की सुध ही नही रहती। ड्यूटी से आकर जमीन पर कुछ क्षण औंधे लेट कर झपकी-मात्र ही ले पाते है। कभी-कभी तो ऐसा होता है कि दो कौर ही गले के नीचे उतार पाते है, या आधी ही दाढ़ी शेव की होती है, अथवा बदन मे साबुन लगाकर नहाना शुरू ही किया होता है कि सायरन बज उठता है। दो मिनट मे तैयार होकर ड्यूटी पर पहुँच जाते है। जहाज उड़ाकर शत्रु के सेबर जैट के पीछे लग जाते है। उन्हे इस प्रकार खदेड आते हैं जैसे कि सिंह-शावक हाथियो के झुड को खदेड आए। हमारे छोटे पर फुर्तीले 'नैट' हवाई जहाज उनके शक्तिशाली सेबर जैटो के काल साबित हुए है। ततैयों की तरह उनकी दुम पर जा चिपटते है और गोलो से उनकी पेट्रोल की टकी और विग्स फोड़कर ही सन्तोष लेते है। तुमने रेडियो और अखबारो मे पढा ही होगा कि किस प्रकार हमारे बहादुर फ्लाइग लेफ्टिनेट कीलर ने उनका पहला सेबर जैट गिराया था।

3 सितम्बर, 1965 को काश्मीर के छम्ब क्षेत्र पर हुए पाकिस्तान के हवाई हमले के दौरान, दुश्मन के एफ-86 सेबर जैट विमान को मार गिराने वाले 30-वर्षीय स्क्वाड्रन-लीडर ट्रेवर कीलर भारतीय वायुसेना के वरिष्ठ नैट लडाकू विमान-चालको मे से है। पाकिस्तान के इस हवाई हमले को नाकामयाब बनाने के लिए जैसे ही हमारे विमान उस क्षेत्र के करीब पहुँचे, शत्रु के कई एफ-86 (सेबर) और एफ-104 (स्टार फाइटर) विमान हमारी सैनिक-चौकियो पर मँडराने लगे। हमारे विमानचालक तुरन्त पाकिस्तानी विमानो के साथ युद्ध मे भिड गए। इस सघर्ष मे स्क्वाड्रन-लीडर कीलर ने एक नाक सेबर जैट को गोली मारी और वह हवा में ही जलकर टूट गया।

1954 मे भारतीय वायु-सेना में नियुक्त स्क्वाड्रन-लीडर कीलर को इसी वर्ष

जनवरी में साहस, एकाग्रता और कार्यदक्षता के उच्च स्तर के लिए 'वायुसेना-पदक' प्रदान किया गया था। छम्ब के इस वीरतापूर्ण कार्य के बाद राष्ट्रपति ने उन्हे 'वीरचक्र' प्रदान करने की घोषणा की है। तुमको जानकर आश्चर्य और प्रसन्नता होगी कि कीलर लखनऊ के है।

पाकिस्तान के मौजूदा हमले के दौरान दुश्मन का दूसरा सेबर जैट गिराया फ्लाइट लेफ्टिनैंट वीरेन्द्र पठानिया ने। 4 सितम्बर को जब दोपहर के करीब तीन बजे हमारी अखनूर चौकी के ऊपर चार एफ-86 पाकिस्तानी विमान मंडराने लगे, तो उन्हे गिराने के लिए हमारे चार नैट विमान छोड़े गए। फ्लाइंग लैफ्टिनैंट पठानिया उनमे से एक नैट विमान के चालक थे। उन्होंने एक पाकिस्तानी सेबर जैट का पीछा किया और उस पर 600 गज की दूरी से निशाना साधा। निशाना अचूक रहा और एफ-86 विमान से धुआँ निकलने लगा। फ्लाइंग लेफ्टिनेंट पठानिया और करीब गए और फिर उन्होने 500 गज की दूरी से निशाना मारा। शत्रु विमान को अन्तिम रूप से ध्वस्त करने के दृढ़ संकल्प से उन्होने तीसरा निशाना 300 गज की दूरी से लगाया और दुश्मन का विमान खण्ड-खण्ड होकर गिरने लगा। कुछ देर बाद वह अखनूर के समीप गिर पड़ा और टूटकर जल गया। धर्मशाला, पठानकोट, होशियारपुर और श्रीनगर में शिक्षा प्राप्त 28वर्षीय फ्लाइंग लेफ्टिनैंट पठानिया नूरपुर, जिला कांगड़ा के हैं। राष्ट्रपति ने 4 सितम्बर, 65 के विमान-युद्ध मे दिखाई गई बहादुरी के लिए उन्हें भी 'वीर-चक्र' प्रदान करने की घोषणा की है। इन दोनों बहादुरों के विषय मे विस्तृत वर्णन अगले पत्र में लिखूंगा। पाकिस्तानियो को अमेरिका मे प्राप्त इन सेबर जैटो पर बड़ा घमंड था। उनका घमण्ड तो हमने ऐसा तोड़कर रखा कि उम्र-भर याद करेंगे। आगे-आगे देखना, होता है क्या।

पाकिस्तान को अमेरिका ने जो अस्त्र शस्त्र, हवाई जहाज, तोपखाना आदि की मदद की थी वह इस आश्वासन पर दी थी कि उसका उपयोग वह केवल चीन के विरुद्ध करेगा। एशिया में कम्यूनिजम को रोकने के लिए करेगा। 1954 में अमेरिका के राष्ट्रपति आइजनहावर ने हमारे तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री नेहरू को इस बात का

आश्वासन भी दिया था कि अमेरिका जो युद्ध के साधन पाकिस्तान को जुटा रहा है, उनका उपयोग भारत के विरुद्ध कभी भी नही किया जाएगा और यदि पाकिस्तान ने ऐसी गलती की तो अमेरिका और संयुक्त राष्ट्र फौरन उसे रोकने के लिए कदम उठा-येगा। पर मियाँ अय्यूब तो उसी समय से हिन्दुस्तान पर हावी होने की योजना बना रहे थे। यही कारण है कि वह काश्मीर को जबरन क़ाबू करने पर तुले हुए है।

वास्तव मे इस साल के शुरू में ही पाकिस्तानी सैनिको को छापामार लड़ाई की भरपूर ट्रेनिंग देने की जोरदार सैनिक तैयारी शुरूहो गई थी और मई मे चोरी-छिपे हमला करने की योजना बना ली गई थी। तभी तो मई मे जनरल मूसा ने युद्धविराम रेखा का उन दिनो कई बार दौरा किया। उन्होने अपने भेदिए काश्मीर मे भेजे जिन्होंने जनता को फुलसाना शुरू किया। हो सकता है कुछ चोर, उचक्के, डाकू लोगों ने उन्हे काश्मीर मे घुस आने मे प्रोत्साहन दिया हो पर काश्मीर की जनता इन डाकुओं का साथ कभी नही देगी, यह बात घुसपैठियो को अच्छी तरह पता लग गई है।

इन घुसपैटियो को आठ दस्तो मे बाँटा गया था। हर दस्ते में 6 कम्पनियाँ थी और प्रत्येक कम्पनी मे 110 फौजी थे। यानी घुसपैठियो के वेश मे पाकिस्तानी सेना काश्मीर पर चढ बैठी। माँ, यकीन करना सारी पाकिस्तानी सेना इन घुसपैठियो के पीछे है। धर्मयुद्ध, रण-नीति, मानवता के प्रति हमदर्दी उन्हे छू तक नही गई। उनका उद्देश्य पहले तो काश्मीर मे, फिर भारत मे गडबड फैलाना था। इसके लिए पुलो को नष्ट करना, सचार-व्यवस्था को भंग करना, रसद पहुँचाने की व्यवस्था, पुलिस-चौकियो और उद्योग-केन्द्रो को बर्बाद करना था, और देश मे साम्प्रदायिक झगडे फैलाकर मारकाट मचाना था। उन्हे यह गलतफहमी रही कि भारतीय मुसलमानो उनका साथ देगे। इस प्रकार सोच कर, हिन्दुओ की अपेक्षा मुसलमानो और सिक्खो के प्रति उन्होने अधिक नीचता दिखाई। भारत का प्रत्येक नागरिक चाहे वह मुसलमान है, चाहे सिक्ख या ईसाई, पहले भारतीय है, यह बात इस युद्ध मे भली प्रकार प्रमाणित हो गई है।

माँ, हम सभी भारत माता की सन्तान है। मोर्चे पर कधे-से-कधा मिलाकर जूझ रहे है। तुमने हमीद की दिलेरी के कारनामे पढ़े होगे। उस नौजवान ने पाकिस्तान

तीन 'पैटन टैंक' नष्ट किए और जब वह चौथा नष्ट करने जा रहा था तो एक बम लगने से वह वीरगति को प्राप्त हुआ। उस वीर की बहादुरी और निडरता की चर्चा कर-कर के हम लोग हुंकार भरते हैं। फूले नहीं समाते। मैंने शपथ खाई है कि भाई हमीद की मौत का बदला इस दुश्मनों को मार के यदि न लूँ तो मै तुम्हारा बेटा नहीं।

काश्मीर मे घुसपैठियो का सफाया काश्मीरी जनता और सुरक्षा सैनिकों की टुकड़ियों ने खूब तत्परता से किया है। अब वे लोग सिर पर पांव रख कर भाग खड़े हुए हैं। बहुत बडी संख्या मे वे लोग हथियार और गोला-बारूद छोड़कर भागे हैं। उन पर पी० ओ० एफ० लिखा हुआ है, जिसका अर्थ है 'पाकिस्तान आर्डनेन्स फैक्टरी'। अब तो इनका भण्डाफोड हो गया। काश्मीरी जनता ने विद्रोह किया है, इस सफेद झूठ का पर्दाफाश हो गया। कुछ हथियार विदेशो के भी हैं।

जो अफसर पकड़े गए हैं उनके बयान टेपरेकार्ड किये गए हैं। उन्होंने मंजूर किया है कि हमें यहाँ पर तोड-फोड के लिए भेजा गया है। उनका एक अफसर कै० सज्जाद युद्ध-विराम-रेखा पार करने वालो का नेता है। उसने बताया कि इन गुरिल्लाओं की टुकड़ियों की कमान पैदल सेना के एक जनरल अख्तर हुसैन मलिक के हाथ मे थी। एक दूसरे अफसर कै० गुलाम हुसैन ने भी इस बात को स्वीकार किया कि घुसपैठियो को इस बात पर बडी निराशा हुई है कि 'जम्मू और काश्मीर के लोगों ने उनके काम में सहयोग नहीं दिया। लुटेरों को काश्मीर में डरा-धमका कर या लोभ दिखा कर हमला करने के लिए भेजा गया था, पर ये किराये के टट्टू भी हमें दगा दे गए।'

निरीह जनता के धार्मिक स्थानों, गाँवो, खेतो आदि पर बम गिराते शर्म नही आई। तोड-फोड की कार्रवाइयो द्वारा काश्मीर को हथियाने की पाकिस्तानी योजना विफल हो गई। अब उन्होने खुले-आम हमला बोल दिया है। छम्ब मे उन्होने दो रेजिमैटे युद्ध मे झोंक दी। उसमें सत्तर पैंटन टैक भी थे। अपनी हवाई सेना को भी वे पूरे दल सहित ले आये। हमने इनकी ताकत का अन्दाज लगा कर कदम उठाया है, माँ, यकीन रखो, जल्द ही हम उन्हें जबरदस्त सबक सिखाने वाले है।

अगले पत्र मे मै आपको इसका परिणाम बताऊँगा। पिताजी को सादर नमस्ते, बहनो को प्यार !

आपका बेटा
जे० के०
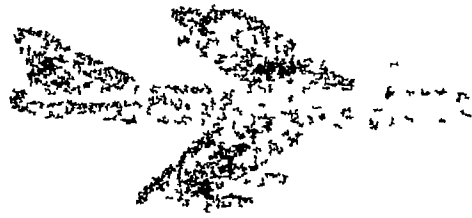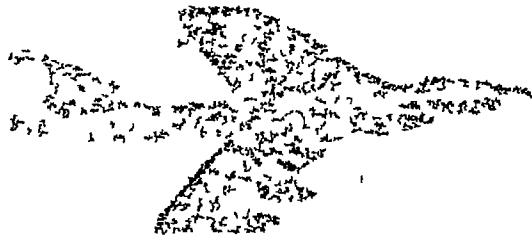
3 युद्ध के मोर्चे से— एक पायलेट बेटे का पत्र

प्यारी माँ,

जयहिन्द !

ता० 1 और 3 सितम्बर 65 भारत की वायु-सेना के इतिहास में अमर रहेंग
अन्तर्राष्ट्रीय सीमा के पार छम्ब क्षेत्र में पाकिस्तान के बख्तरबन्द डिवीजन द्वारा भ
हमला किये जाने पर ही हमारी वायु-सेना को बाध्य होकर इस युद्ध में कूदना पड़ा
हमारे विमानों ने शत्रु के 14 टैंक नष्ट कर दिए जिनमें से 11 टैंक तो जलकर स्व
हो गए। इस युद्ध में हमारे चार विमानों को नुकसान पहुँचा; पर शत्रु का साहस
कर उनके विनाशी टैंकों को नष्ट करके जो आत्मबल हमने प्राप्त किया वह हर
पर सस्ता था। मैंने पिछले पत्र में तुम्हे ता० 1 और 3 सितम्बर के वायु-युद्ध
विस्तृत विवरण देने को लिखा था। सो अब उस हवाई युद्ध का हाल उस दिन के
के शब्दों में ही लिखता हूँ। युद्ध का आरम्भ इस प्रकार हुआ—

हमारे विमानों को ललकारते हुए पाकिस्तानी स्टार फाइटर और सेबर जैट आ

में छाये हुए थे। उनके विमान हमारे विमानो के मुकाबिले में बहुत बडे और बढिया थे। उनकी उडान भी ऊँची थी तथा उनमें प्रक्षेपणास्त्र भी लगे थे। स्क्वा० लीडर ट्रेवर कीलर को हुक्म हुआ कि नैट विमान-चालको का व्यूह रच कर इनका मुकाबिला करे। हमारे नन्हे नैट विमनो की ओर शत्रुओ ने हिकारत की नजर से देखा। उन्हे विश्वास था कि वे हमारी धज्जियाँ उडा देगे। खैर, शत्रु के विमान व्यूह बना कर हमारी ओर आए।

उसके बाद क्या हुआ, उसका वर्णन स्क्वा० लीडर के शब्दो मे इस प्रकार है:
"हम लोगो ने निश्चय किया कि हम लोग आक्रमण और प्रतिक्षात्मक रण-कौशल से काम लेगे। जब हम लोग उस इलाके मे गए तब हम लोग बहुत नीची सतह पर उड़े और इस तरह तुरन्त धीमी रफ्तार से आराम के साथ चलने लगे कि उनके रडार में हम लोग आ जाएँ। यही हुआ। उनको रडार से हमारे आने का पता चल गया और वे लोग मुकाबिले के लिए आ गए। हम लोगो का भी यही विचार था कि वे आ जाएँ। चूंकि हम लोग आक्रमण करने को नीयत से गए हुए थे, इसलिए हम चाहते थे कि वे आएँ और हम उन्हे दिखा दे कि हम लोग उनसे बहुत ऊँचे दर्जे के है, और हम लोगो ने यह साबित भी कर दिया। हम लोगो ने कुछ सामरिक दाँव-पेचों से काम लिया। उनसे निश्चय ही वे लोग धोखे मे आ गए। पारिणामस्वरूप एक विमान मेरे दाएँ ओर आ गया। वह आगे चलने वाला विमान और पीछे चलने वाले मेरे विमान के बीच में आ गया। हम लोगों ने उस पर गोली-वर्षा की। (चूंकि मै उसके करीब पहुँच रहा था इसलिए मैने देखा) उसके पास दो-तरफा प्रक्षेपणास्त्र (मिसाइले) थी। उस समय तक मै उसकी मार के दायरे से थोडा ही बाहर था; इसलिए मैने तुरन्त अपने विमान को आगे बढाया क्योकि हमारे विमानो मे हैरत पैदा करने वाली तेजी है और इस प्रकार बडी तेजी से निकट पहुँच गया। मैने उस पर निशाना लगाया और मेरे पहले ही वार से उसके विमान का दायाँ हिस्सा टूट कर टुकड़े-टुकड़े हो गया। वह अपने पीछे से कडकड-चटचट टूटता हुआ बिलकुल अनियन्त्रित हालत मे हो गया और इस तरह वह नीचे गिर पड़ा। इसी बीच ऊपर मेरा विमान कठिन समय से गुजर रहा था। हम लोगों को शत्रु के एक स्टार फाइटर और दो सेबर जैटो से निबटना पड रहा था।

हम उनसे वडी अच्छी तरह निवटे भी और यह साबित कर दिया कि हम लोग इन विमानो को उन सतहों पर मात दे सकते है, जिन पर जाने की योजना हम लोगों ने वनाई थी और दॉव-पेच के साथ जहाँ हम लोग उन्हे ले गए थे।

"जहाँ तक हौसले और मनोवल का ताल्लुक है, मै समझता हूँ कि दुश्मन ने हर चीज खो दी थी। मैने एक सेवर को गोली दागी तथा दो और विमानो पर भी गोली चलाई। लेकिन चूँकि हम लोग उस विमान को मार गिराने ही वाले थे कि दुश्मन भाग खड़ा हुआ।"

स्क्वा० लीडर ने एक और मजेदार घटना सुनाई। उन्होंने बताया, "जिस दिन मेरे साथिया ने पृष्ठ भाग मे वहुत-से टैंको को तहस-नहस कर डाला उनमें से बहुतों पर सही दुरुस्त हालत में कब्जा कर लिया, उसी दिन यह कहानी चारों ओर फैल गई कि जब हमारी सेनाओं का कमाण्डर टैंको और चालको को अपने कब्जे मे ले रहा था तो उसने सेल्यूट लिया और 'थैंक्स ए लौट' (धन्यवाद) के वदले मे कहा कि 'वहुत-वहुत टैंक' (टैंक्स ए लौट)।

स्क्वा० लीडर कीलर की इस सफलता का समाचार जव उनकी पत्नी को दिया गया तो उनकी पत्नी ने मुस्करा कर कहा—मेरे पति के लिए ऐसी सफलता प्राप्त करना कोई ताज्जुब की बात नहीं है।

कीलर के एक भाई डेजिल कीलर भी वडे वहादुर हैं। इन दोनो भाइयों की वहादुरी पर सारे देश को गौरव है। हमारे एयर मार्शल अर्जुनसिंह ने कीलर-वन्धुओं के पिता मि० चार्ल्स कीलर को पत्र लिखा—"आपके दोनों वेटो ने शुरू मे शत्रु के जो दो सेवर गिराए, उससे हमारी वायु-सेना का हौसला वढ़ गया। मैं इतना ही कह सकता हूँ कि मुझे कीलर-वन्धुओं और उनके परिवार पर गौरव है।"

माँ, तुमने लिखा है कीलर के पिताजी जब झाँसी गए थे, स्टेशन पर अपने वेटों की फोटो लगी देख उन्हें वडा हर्ष हुआ। लोगो ने उन्हें ऐसे वीर पुत्रों के पिता होने पर बधाई दी तो उन्होंने विनम्रता से कहा—कीलर मेरे ही नहीं, भारतमाता के वेटे है।

सच में माँ, हमारी भूमि वीर-प्रसू है। भारत का शौर्य अब हुंकार करके जाग उठा है।

माँ, ता० 1 और 3 सितम्बर को हमने शत्रु के विमानो का जिस प्रकार नाश किया वह उसे कभी भूलेगा नही । पर हमारी इस विजय को शायद उन्होंने एक संयोग ही समझा । ता० 4 सितम्बर को पाकिस्तानी लडाकू सेबर के सग फिर हमारी मुठ-भेड हुई । इसका पीछा फ्ला० ले० पठानिया ने किया । उस युद्ध का वर्णन उनके ही शब्दो मे सुनिए—

"अब यह खास सेबर अखनूर की ओर बढा और मै उसका पीछा करने लगा । दरअसल मै उसके करीब 100 फुट नीचे था और ठीक अखनूर के ऊपर था। जब मै गोलाबारी के दायरे मे था, मतलब कि लगभग 600 गज की दूरी पर था, मैंने उस पर पहला गोला चलाया। पहले वार के बाद मैंने देखा कि दुश्मन के विमान से धुआँ निकलने लगा है। उससे घना धुआँ बाहर निकल रहा था, फिर भी वह बढता ही आ रहा था इसलिए मै करीब 100 गज तक और आगे जाकर उसके करीब पहुँचा तथा लगभग 500 गज की दूरी से मैंने उस पर दूसरा गोला मारा । इस पर मैंने देखा कि छोटे-छोटे टुकड़े दुश्मन के विमान से निकल कर हवा मे उड़ रहे है, लेकिन विमान फटा नही । इसलिए मैंने दबाव डाला और करीब 400 गज की दूरी से तीसरा वार किया । इस पर दुश्मन के विमान ने काला घना धुँआ उगलना शुरू किया और अन्त में जब मैंने देखा कि मेरी तोपे रुक गई है तो मै विमान से बाहर निकला और अच्छी तरह से देखा और पाया कि उस विमान का भाग नि:शेष हो चुका है और मैंने यह भी पाया कि विमान मे जिस जगह चालक बैठता है वहाँ (काकपिट मे) कोई भी चालक नही है ।"

अब दुश्मन का हौसला पूरा का पूरा पस्त हो चुका था। फ्लाइग लेफ्टिनेंट पठानिया के ही शब्दो मे, "वे बराबर हम लोगो से कतराते थे और जब भी हमारी उनसे मुठभेड हुई, वे बराबर पीठ दिखाकर अपने घरो को वापस भाग जाते थे ।"

हमारे विंग कमाण्डर गुडमैन ने, जो कि मिस्टियर चलाने मे विशेष योग्यता प्राप्त किये हुए है और जिन्हे वीरता के लिए 'महावीर चक्र' भी मिला है, हमारे वायुयान-चलाको की प्रशंसा करते हुए कहा—"हमारे लड़के बिजली के समान थे और देखते

ही देखते सारा का सारा स्थान दुश्मन के जलते हुए टैंकों और मोटरगाड़ियों के साथ लपलपाती हुई आग मे लाल हो उठा था। हमारी सेना का हौसला विस्मयकारी था। यह बुलन्द हौसले की हद थी...मुझे विश्वास है कि दुश्मन मिस्टियर को कभी नहीं भूलेगा।"

माँ, इस सफलता से हमारे चालकों का हौसला बहुत बढ गया है। वायु-सेना का सहयोग पाकर स्थल-सेना भी निधडक आगे बढ़ती जा रही है। शत्रु किटकिटा कर रह गए हैं। उनका घमड चूर-चूर हो गया है। अच्छा माँ, आज बहुत थक गया हूँ। थोड़ा आराम कर लूँ। शेष अगले पत्र में—

आपका बेटा

जे० के०
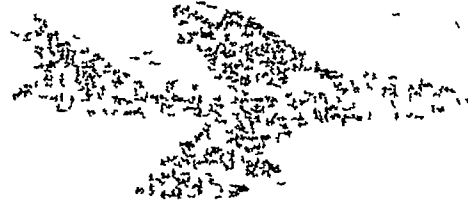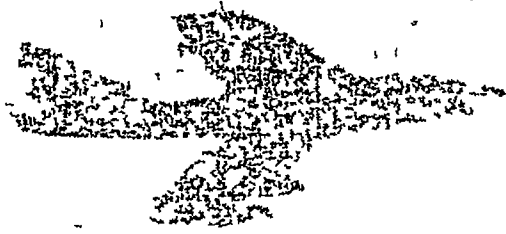
4 युद्ध के मोर्चे से— एक पायलेट बेटे का पत्र

मेरी प्यारी माँ,

जयहिन्द !

तुम्हारा पत्र मिला। अच्छा, तो ये पाकिस्तानी दिल्ली तक अपने 'पेरा ट्रूपर' उतारने पहुँच भी गए। हाँ, अय्यूब मियाँ तो यही सोचे बैठे थे कि टहलते-टहलते दिल्ली पहुँच जाएँगे ! अब जब उनके सब सपने ढह गए तो निहत्थी भारतीय जनता को सताने पर तुल आए। हाँ, मैंने भी सुना था कि पाकिस्तान का एक सी-130 विमान दिल्ली पर हमला करने के लिए एक हवाई टुकड़ी के साथ आया था और भारतीय वायु-सेना के बहादुरो ने उसे मार भगाया। और एक जहाज मेरठ के पास तोप की मार से फट कर कुलाटियाँ खाता हुआ गिर पड़ा। चलो, गाँव के लोगों के लिए एक नुमाइशी तमाशा बन गया। अब वे लोग हवाई जहाज के बिखरे हुए टुकड़ो को देखेंगे और पाकिस्तान के विमान-चालको की खिल्ली उडायेंगे।

पाकिस्तान को अपने बेहतरीन टैंकों और सेवर हवाई जहाजो का गरूर था पर

हमारे नैट हवाई जहाज उनके सेबर जैटो का काल बने हुए है और हमारी सेना ने उनके टैकों के धुर्रे उड़ा दिए है। पाकिस्तान की कुल सैनिक शक्ति अन्दाजन 17 और 25 हजार के बीच बताई जाती है। उसके पास लगभग 200 विमान है। इनमें दो स्क्वेड्रन अमेरिका के एफ०-104, स्टार-फाइटर, अमेरिकी एफ०-85 सेवर जैट्स के चार स्क्वेड्रन तथा कैनबरा विमानों के दो स्क्वेड्रन शामिल है। पाकिस्तानी नौ सेना 7.700 है, जिसके पास एक क्रूजर, पॉच डेस्ट्रोयरर्स, आठ बारूदी सुरंगे उठाने वाले और दस अन्य जलपोत आदि है ऐसा अन्दाजा कहा जा सकता है।

जब शुरू में लड़ाई छिड़ी तो लोगों का ख्याल था कि हमारी अपेक्षा पाकिस्तान के पास अधिक आधुनिक ढग के अस्त्र-शस्त्र, टैक और वायुयान है। पर माँ, लड़ाई में शस्त्र-अस्त्र थोडा न लडते हैं। लडाई तो देश के वीर अपने रण-कौशल और बहादुरी तथा हिम्मत के बल पर लड़ते है। युद्ध में हमारे जवानो ने पैटन टैकों की जो पिटाई की और सेबर जैटों की जिस प्रकार धज्जियाँ उडा दी उसे देख कर सारी दुनिया चकित रह गई है।

वर्तमान युद्ध में जिस विमान ने वास्तव मे अपने जौहर दिखाए हैं, वह है भारत में निर्मित नेट विमान। बंगलौर की हिन्दुस्तान एयरोनोटिक्स लिमिटेड द्वारा निर्मित यह संसार का सबसे हल्का जैट विमान माना जाता है। नैट की रफ्तार 700 मील प्रति घण्टा है और यह 40 हजार फुट की ऊँचाई तक उड़ता है। नैट मे दोनों ओर 3(मिलीमीटर की एक-एक तोप होती है। जो एक चक्कर में 100 गोले फेंकती है।

अमेरिका के स्टार फाइटर के समान भारत के नैट मे भी केवल एक चालक बैठत है और उसी के समान इनमे भी सब कुछ स्वचालित होता है। नैट के द्वारा बम और राकेट ले जाए जाते है। अमेरिकी सेबर जैट की तुलना में अत्यधिक हल्का होने के कारण ही नैट पाकिस्तानियो को पराजित करने में सफल रहा है यह झट से उड़कर सेबर की दुम पर पहुंच जाता है। जब तक सेबर चक्कर काट कर इसे घेरे यह उड़न छू होकर फिर उनकी दुम पर आ जाता है। हमारे कई पायलेटों ने बिलकुल समीप पहुँच कर सेबर जैट पर बार-बार निशाना मारा। नतीजा यह हुआ कि सेबर जैट के

धुएँ उडते नजर आए ।

मॉ, यकीन करना प्रत्येक पायलेट इस समय पाकिस्तान के सेबर जैट को शिकार बनाने की शपथ खाए हुए है। हमारे नैट विमानों को देखकर उनके छक्के छूट गए हैं। वे हमसे कतरा कर निकल जाते है। उनका उद्देश्य तो केवल बम-वर्षा करना है। वायु युद्ध मे उलझने से वे कतराते है। पर हम उनको देखकर ही घेर लेते है।

मॉ, इस युद्ध मे वायु-सेना और स्थल-सेना का इतना सुन्दर सहयोग रहा कि बस क्या वताऊँ ! हमारी वायु-सेना ने कमाल का जौहर दिखाया। इस वात का श्रेय एयर मार्शल अर्जुनसिह को जाता है। उन्होने वायु-सेना का नेतृत्व योजनाबद्ध किया। हमारे सेनाध्यक्ष जनरल चौधरी ने उनको वायु-सेना की अभूतपूर्व सफलता पर बधाई दी।

माँ, आज 9 सितम्बर है। खूब घमासान युद्ध हो रहा है। अभी ड्यूटी पर से लौटा हूँ। सोचा, इस अधूरे पत्र को पूरा करूँ। हमारी वायु-सेना ने आज सुवह फिर दुश्मन के खिलाफ कार्रवाई की। सेना की मदद के लिए उड़ान भरते हुए विमानो ने डेरा बाबा नानक क्षेत्र मे दुश्मन के चार टैंक नष्ट कर दिए। सुलेमाकी हेडवर्क्स के पास, जहाँ भारत पर हमला करने के लिए पाकिस्तानी फौज जमा थी, एक हवाई हमले मे चार और टेंक ध्वस्त किये गए। इन दोनो क्षेत्रों में भारी सख्या मे दुश्मन की गाड़ियाँ तहस-नहस कर दी गई।

शत्रु खिसियाने हो गए है, पर उनकी कुछ पेश नहीं जा रही हमारे आगे। निरे वेवकूफ है। निशाना लगाना ही नही आता। कई तो भगदड़ में अपनी ही सीमा में वम गिराकर भाग जाते हैं। आजकल तो प्रत्येक भारतीय पायलेट आकाश मे 'शिकार' की खोज में चक्कर लगाता है मुझे मालूम है। नानाजी जव शेर मारकर लाते थे तो कितना खुश होते थे। कुछ उसी तरह की खुशी हम पायलेटों को प्राप्त करने का सौभाग्य मिला है। पर दुश्मन तो दगावाज होता है, असावधान पाकर ही हमला करने की ताक में रहता है।

लाहौर के उत्तर-पश्चिम में सरगोधा पर हवाई हमले में हमारे विमानों ने शत्रु के दो एफ-86 सेवर जैट और एक एफ-104 विमान जमीन पर ही नष्ट कर दिए।

एक और एफ-104 विमान को आज सुबह अमृतसर के पास विमान-भेदी तोपों की मार से गिरा दिया गया। जालन्धर के निकट आदमपुर के पास हवाई लड़ाई में पाकिस्तानी बमवर्षक बी-57 नष्ट कर दिया गया। अब दुश्मन ने हमारे हवाई अड्डों को नष्ट करने की ठानी है। उन्होंने पठानकोट, हलवारा, आदमपुर, कलाईकुंड, जामनगर आदि पर हमला किया। हम पूर्वी पाकिस्तान पर हमला तो नही करना चाहते पर यदि उन्होने मजबूर किया तो फिर पीछे नही हटेंगे।

आज सुबह दुश्मन के विमानों ने जब कलाईकुण्ड के हमारे वायुसेना के अड्डे पर हमला किया, तो तीन पाकिस्तानी एफ-86 सेवर जैट विमान हवाई लड़ाई मे नष्ट कर दिये गए। इनमे से दो आकाश मे ही जल गए और तीसरा गिरकर जमीन पर ध्वस्त हो गया। इस विमान के चालक की लाश बरामद कर ली गई है। इस लड़ाई में हमारे जमीन पर रखे दो बेकार विमान नष्ट हुए।

दुश्मन का एक बी-57 विमान जामनगर के पास नष्ट हुआ। इस विमान के चालक और दिशा-निर्देशक (नेवीगेटर) की लाश बरामद कर ली गई। चालक की डायरी से पता चलता है कि पाकिस्तान हमले की तैयारी अप्रैल, 65 से कर रहा है।

आज शाम साढे चार बजे दुश्मन के चार सेवर जैट विमानो ने श्रीनगर पर हमल किया। इसमे एक डकोटा विमान नष्ट हुआ और राष्ट्र संघ का कैरीबून विमान जल गया।

कल बहुत जबरदस्त लड़ाई हुई। आज उसका विस्तृत वर्णन पता चला है। भारतीय वायुसेना कल बहुत सक्रिय रही और उसने दुश्मन के कई सैनिक ठिकानों पर हमले किए। कल रात हमारी वायुसेना ने रावलपिण्डी के नजदीक चकलाला हवाई अड्डे पर बम गिराए। आज सबेरे हमारे विमानो ने पश्चिमी पजाब में सरगोधा हवाई अड्डे पर बम गिराए। सरगोधा मे उन्हे दुश्मन से कड़ा मुकावला करना पड़ा पर भारतीय वायुसेना ने कल काफी सफलता प्राप्त की।

कल हमारी सेना ने पाकिस्तानी वायुसेना के 9 अमरीकी विमानों को नष्ट किया। [illegible] अन्य विमानों को नुकसान पहुँचाया। इसके अलावा 16 पैटन टैंक और शर्मन टैंकों

विभिन्न क्षेत्रो मे नष्ट किया गया। साथ ही 14 तोपो, दो हल्की विमानभेदी तोपों और 30 से 40 बख्तरबन्द गाड़ियो को नुकसान पहुँचाया। इसके अतिरिक्त हमारी वायुसेना ने एक तेलवाहक रेलगाडी और कई फौजी गाड़ियो के जमघट को तथा एक मालगाडी को, जिसमे फौजी सामान ले जाया जा रहा था, नष्ट किया। साथ ही दुश्मन की कुछ तोपो और एक सैनिक अड्डे को भी आग लगा दी। अनेक टैको और वख्तरबन्द गाड़ियो को भी नुकसान पहुँचाया गया।

दुश्मन के जिन विमानो को नष्ट किया गया है, उनमे चार इजन वाले दो अमरीकी परिवहन-विमान भी शामिल है। ये दो विमान और दो एफ-104 विमान जमीन पर ही क्षतिग्रस्त किए गए। इसके अलावा विभिन्न क्षेत्रो की हवाई और जमीनी लड़ाई मे 6 अमरीकी सेबर जैट और एक बी-57 बमवर्षक विमान को नष्ट किया गया।

कल पाकिस्तानी वायुसेना ने पठानकोट से जामनगर तक हमारे कई हवाई अड्डो पर हमला किया। जामनगर पर कई बार हवाई हमले किए गए, लेकिन हवाई अड्डे को वहुत कम नुकसान पहुँचा तथा इस अड्डे पर ठीक से कामकाज चल रहा है। अमृतसर में पाकिस्तानी वायुसेना ने शहरी आबादी पर बम वरसाये। इससे जो नुकसान पहुँचा उसका अन्दाजा लगाया जा रहा है। पाकिस्तान ने पूर्वी क्षेत्र मे भी कल लड़ाई छेड़ दी। पाकिस्तानी वायुसेना ने कलकत्ता के नजदीक कलाईकुड हवाई अड्डे पर हमला किया। पाकिस्तानी विमानो को मार भगाया गया।

आज वहुत थक गया हूँ। घर मे सवको मेरा यथायोग्य कहना। शिब्बू का क्या कोई समाचार मिला ? मौसोजी से कह देना फिक्र न करे, आप लोगो का आशीर्वाद हमारी रक्षा कर रहा है। मेरा यह विश्वास और पक्का हो गया है कि सत्य की जय होगी।

आपका वेटा,
जे० के०
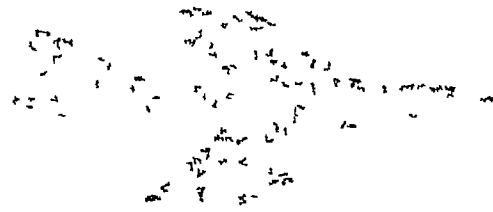
5 युद्ध के मोर्चे से— एक पायलेट बेटे का पत्र

प्यारी माँ,

जय हिन्द !

कीलर और पठानिया को भारत सरकार ने 'वीर चक्र' से विभूषित किया है। अब तुम देखना सब चालकों में सेबर को गिराने की होड़ होकर रहेगी। यह तो नैट का कमाल था, पर हमारे हंटर भी कम गजब नहीं ढाह रहे। कल कसूर क्षेत्र पर डटकर मुकाबला हुआ। कल कसूर क्षेत्र में हवाई युद्ध भी खूब डटकर हुआ। ज्योंही शत्रु के सेबर जेट हमला करने आए हमारे हंटर उन पर झपटे। दस मिनट तक पोजीशन लेने के लिए दाँव-पेंच चलते रहे अन्त में हमारा एक हंटर शत्रु की दुम पर जा पहुँचा। दो उसे बचाने की पोजीशन पर रहे। दुम पर पहुँचे हंटर ने अपनी तोप का मुँह खोलकर सेबर को गिरा दिया। इस युद्ध को नीचे खड़े सैनिक उसी चाव मे देखते रहे जैसे दो पतंगों के दाँव-पेंचों को पतंग की शौकीन जनता देखती है।

आठ सितम्बर की शाम की बात है कि शाम को हमारे चार हंटर विमानों को

हुक्म मिला कि रायविन्द-खेमकरण मे दुश्मन के अड्डो पर हमला करे। इस विमान-व्यूह के नेता फ्लाइग ले० के० के० मेनन थे। चारो विमान फौरमेशन मे चले जा रहे थे। जब वे रायविन्द स्टेशन के ऊपर से उड़ रहे थे तो उनकी नजर एक मालगाडी पर पडी जो कि सैनिक सामान से लदी हुई थी। व्यूह के नेता ने सोचा, अरे यह सामान शत्रु के डिपो पर ही तो ले जाया जा रहा है। हमने वहाँ जाकर भी तो सामान नष्ट करना ही है तो हम मार्ग मे ही क्यो न नष्ट कर दे ? डिपो तक पहुँचने ही क्यो दे ? बस, हमले का निश्चय करके चारो विमानो ने पोजीशन ले ली। शत्रु के एटी एयरक्राफ्ट गन की दृष्टि उनपर पड गई। बस, तोपची ने तोपों का मुँह इनकी ओर खोल दिया। तोपें घनघना उठी। इसलिए हटरो ने अपनी दिशा फौरन बदली और तोप की मार से दूर पर पहले से अधिक फायदे की पोजीशन लकर मालगाडी के पास पहुँच गए और मेनन से सकेत पाते ही विमानो ने हमला कर दिया। सबसे पहले मेनन के विमान ने राकेटो से मालगाड़ी के बाई ओर हमला किया। फिर औरो ने भी हमला किया। बस मालगाड़ी मे आग लग गई और सारे डिब्बे धू-धू जल उठे, और देखते-ही-देखते राख हो गए। इनके बाद चारों विमान कसूर की ओर बढे। जरा नीचे की ओर गोता मार कर उन्होने यह भाँप लिया कि शत्रु के टैको के दो दल कूच करने को तैयार खडे है। इसी बीच नीचे से शत्रु के तोपचियों ने भी विमानो पर गोले छोडने शुरू कर दिए। पर अपना बचाव करते हुए इन लोगो ने टैको के एक दल पर गोले बरसा दिए, जिससे तीन टैंक जल कर नष्ट हो गए। उस दिन इन चार विमानो ने बडा काम किया। शत्रु के शेप टैंक ईंधन आदि की कमी के कारण कूच नही कर सके।

माँ, हमारे हवाई जहाजो ने पेडो की ऊँचाई तक आकर युद्ध किया है। इसमे खतरा तो पूरा था कि कही पेड़ो से विमान टकरा जाता तब ? पर युद्ध का तो एक बार उन्माद चढ जाए तब वीरों को शत्रु के नाश करने के सिवाय कुछ नही सूझता। कोई अपनी माँ पर हाथ उठा दे, उसके आँचल पर अपने अपवित्र क़दम धर दे तो क्या बेटे यह सह सकेंगे ? हमारी मातृभूमि को शत्रु पददलित करने की जुर्रत करे, यह भला भारत माँ के सपूतों को कैसे बरदाश्त होगा ?

हमारे विमान-चालकों ने चविन्दा इलाके पर शत्रु को घेर-घेर कर खदेड़ा है और मारा है। वो मारा है, वो मारा है कि बस, बच्चू उम्र-भर याद रखेंगे। माँ, जब भी इनके दुष्कर्मो को सोचता हूँ मेरी मुट्ठियाँ बँध जाती है। दाँत किटकिटाने लगते है।

तुम्हे मैंने पहले लिखा था कि किस प्रकार स्क्वा० लीडर कीलर ने शत्रु का पहला सेबर जैट मार गिराया था। स्क्वा० लीडर डेंजिल कीलर उन्हीं के बड़े भाई है। उस दिन चविन्दा पर खूब लडाई छिडी हुई थी। इस दल के लीडर डेंजिल कीलर को हुक्म मिला कि अपने जो चार मिस्टियर विमान युद्ध मे जूझ रहे है उनकी रक्षा के लिए विमान लेकर पहुँचे। उनके सहयोगी के रूप मे एफ० ओ० राय तथा सब सेक्शन-लीडर के रूप मे फ्लाइट लेफ्टिनेंट वी० कपिल तथा चौथे आफीसर के रूप में फ्लाइग लेफ्टि-नेंट मायादेव भी थे। नैट विमान चीनी सतह पर उड कर मिस्टियरों की मदद कर रहे थे। पर जैसे ही वे अपने लक्ष्य पर हमला करने लगे कि एण्टी एयरक्राफ्ट गन के तोपची ने उन्हे देख लिया और गोलाबारी शुरू कर दी। पर हमारे बहादुर चालक डरे नही।

इसके साथ-ही-साथ फ्लाइग अफसर मायादेव ने सहसा देखा कि चार पाकिस्तानी सेबर जैट मिस्टियरों पर हमला करने के लिए गोता लगाते चले आ रहे है। उन्होने चेतावनी दी और लडाई तुरन्त शुरू हो गई। हमारे नैट विमानों ने देखा कि सेबर जैट उनकी बाई ओर लगभग 400 फुट ऊपर है। स्क्वा० लीडर कीलर और उनके अन्य सहयोगी विमान-चालक मुश्किल से जमीन से 300 फुट की ऊँचाई पर थे। सेबर जैटों को रास्ते मे रोकने के लिए वह अपने दस्ते को बाई तरफ से चढते हुए ऊपर ले गए ताकि वे अपने को सेबर जैटो के पीछे रख सके। जैसे ही दो विमानो की दूरी बडी तेजी से कम हुई वैसे ही उन्होंने देखा कि उनके विमान के निचले सिरे का ख्याल रखते हुए फ्लाइंग लेफ्टिनेंट कपिल, फ्लाइग लेफ्टिनेंट मायादेव के साथ हमला करने की सबसे अच्छी पोजीशन में है, इसलिए उन्होंने आदेश दिया कि वे सबसे पास वाले सेबर जेट से भिड़ जाएँ।

तब फ्लाइंग लेफ्टिनेंट कपिल ने बड़ी कुशलता के साथ उनमे से एक पर झपट्टा

मारा, तो पाकिस्तानी विमान खतरे से अवगत हो गया और बचाव की भयकर कार्रवाई करने लगा ।

सेबर जैटो मे से एक बड़ी तेजी से बाईं ओर मुडा। फ्लाइग लेफ्टिनैट कपिल उस पर टूटने ही वाले थे लेकिन उनकी मजबूरी यह थी कि वे उस पर गोलाबारी करने की अनुकूल स्थिति मे नही थे। हडबडी और निराशा की हालत मे उस सेबर ने अचानक उलट कर सीधा नीचे दाई ओर मोड लिया। अब फ्लाइग लेफ्टिनैट कपिल के लिए अनुकूल मौका था। वह फौरन ठीक पोजीशन लेकर बडी आसानी से गोलाबारी करने की स्थिति में पहुँच गए और जब दूरी 500 गज से भी कम रह गई तो नजदीक से वार किया और गोला तुरन्त निशाने पर जा लगा।

माँ, इस प्रकार के हमलो मे फैसला मिनटो मे होता है। शत्रु का विमान चोट खाकर पख-कटे कबूतर की तरह लडखडाता हुआ नीचे आ पडता है। अव्वल तो आग लग जाने पर वह जलता हुआ नीचे आकर बिखर जाता है या फिर नीचे आते-आते खत्म हो जाता है।

माँ, विमान-चालको का जीवन भी मौत और जिन्दगी के झूले पर झूलता रहता है। पर वीरो का इसी मे गौरव है। वह जिन्दगी भी कोई जिन्दगी है जो माँ के आँचल मे छुपकर गुजरे। जिस राष्ट्र मे युवक ऐसे डरपोक हो वह भला स्वतन्त्रता का अधिकारी कैसे हो सकता है ? हम भारतीय तो न्याय और धर्म का युद्ध कर रहे है। हमारी नजर किसी देश की धन-दौलत या वहाँ की हूरो पर नही रही है। नारी तो सर्वत्र पूजनीय है। हमने वहाँ की जनता को बचाकर बमबारी की जबकि पाकिस्तान ने हमारी निहत्थी जनता पर बमवर्षा की। यह तो यह उन्होने जिस प्रकार नागरिको के वेश मे घुसपैठियो को भारत मे भेजा, उसी प्रकार उन्होने अपने हवाई जहाजो पर इण्डियन एयर फोर्स (I A R) लिखवा कर और चालको को भारतीय विमानचालको की वेशभूषा मे हमला करने भेजा। परन्तु हमारे चालको ने जब उनसे साकेतिक भाषा मे बात की तो वे जवाबी साकेतिक शब्द नही कह सके। गौर से देखने पर उन्हे पता चला कि विमान सेबरजैट है। बस भारतीय चालको के सदेह की पुष्टि हो गई और उन्होने शत्रु के हवाई

जहाज को गिरा लिया। पायलेट पैराशूट से जब नीचे उतरा तो उसे पकड़ लिया गया। उसके पास कई फर्जी आज्ञा-पत्र भी निकले।

इसी धोखे मे बेचारे फ्लाइट लेफ्टिनेंट हुसैन के सग बुरी गुजरी, क्योंकि लोग सचेत थे और पैराशूट से उतरने वाले लोगों को सन्देह की दृष्टि से देखते थे। फ्लाइट-लेफ्टिनेंट हुसैन का मिस्टियर विमान पाक क्षेत्र मे हमला करने गया हुआ था; वहाँ विमान मे तोपची की गोली लग गई। हुसैन फौरन अपने जहाज को भारतीय सीमा तक ले आया। अपने जहाज को छोड़कर पैराशूट से उतरने में भी चालक को सख्त अफसोस होता है। क्योंकि प्रत्येक चालक हवाई जहाज की कीमत समझता है। पर जब हवाई जहाज बचता नजर नही आया तो हुसैन पैराशूट से कूद पड़ा। गाँव वालो ने उसे पकड लिया और सन्देह होने पर उसके दो-चार हाथ भी जड़ दिए। हुसैन अपनी टूटी-फूटी हिन्दी मे कहता ही रहा—भाइयो, मै भारतीय हवाबाज हूँ। देखो मेरी यूनीफार्म। पर गाँव वाले बोले—अजी, परसों ही पाकिस्तानियों का एक चलता-पुर्जा चालक भारतीय यूनीफार्म मे ही पकडा गया है। कौन जाने, तुम भी उनके ही जासूस हो। हुसैन ने उत्तेजित भीड़ को देख कर हिम्मत रखी। उसने कहा—अच्छा, चलो मुझे किसी एयर फोर्स आफीसर के पास ले चलो। तब तो तुम्हे तसल्ली होगी।

संयोग से एयरोड्रोम से कुछ दूर एक परिचित एयरमैन हुसैन को दिखाई पड़ा। उसने आगे बढकर हुसैन को सेल्यूट मारा और गाँव वालों से बोला—भाई, तुम लोग हमारे साहब को कैदी की तरह क्यों पकड़ लाए हो ? ये तो अपने ही भाई हैं। बस गाँव वालों ने हुसैन से माफी माग ली।

बाद मे हुसैन ने अपने सिर के गूमड़े हमें दिखाए, जो कि चौकस गाँव वालों की मार मे उभर आए थे। मा, हमारी सीमा पर जनता बड़ी सजग है। सेना को सुख सुविधा पहुँचाने के लिए वह जी-जान से जुटी हुई है। मजाल है जो शत्रु देश का कोई परिन्दा भी हमारे देश मे फटक जाए।

माँ, तुम्हारी ही तरह सभी माएं अपने बेटों की चिट्ठी का इन्तजार करती है और उन पत्रों को सहेज कर रखती है। कौन जानता है मौत और जिन्दगी पर झूलते हुए

उनके बेटे का यह अन्तिम पत्र ही हो। एक ऐसी ही घटना सुनाता हूँ। माँ, फ्लाइट लेफ्टिनैट तपिन चौधरी एक बहादुर अफसर था। जैसा कि मैने तुम्हे लिखा कि हमें पत्र लिखने का समय कम हो मिलता है। तपिन चौधरी भी एक उड़ान पर जा रहा था, उसने जल्दी मे अपने पिता को पत्र लिखा, "बाबा, हम लोग ता० 5 सितम्बर से शत्रु पर कहर बरसा रहे है। हमने शत्रु के सभी महत्वपूर्ण स्थान एक के बाद एक नष्ट कर दिए। मेरे विमान पर तो शत्रु एक खरोच भी नही लगा सका। बस अब फिर उडान भरने जा रहा हूँ। शत्रु को मजा चखाने का यह सुअवसर और लडने मे कैसी थ्रिल है इसका बयान करना कठिन है। अच्छा, जल्दी मे हूँ। बस।"

पत्र पोस्ट करके तपिन अपनी उडान पर चल दिया। चम्बा क्षेत्र मे उसने शत्रु के अड्डो पर गोले बरसाए। खूब डट कर लडाई हुई। उस वायु-युद्ध मे उसका विमान बुरी तरह घायल हो गया। पर तपिन ने हिम्मत नही छोडी। वह अपने विमान को लेकर भारतीय अड्डे पर आ गया। उसे तो विमान की फिक्र थी। उसे इस बात का पता ही नही था कि वह भी घायल हो गया है। जैसे ही वह विमान से नीचे उतरा, अपनी मातृभूमि की गोद मे ऐसा ढह गया कि फिर नही उठा।

अच्छा माँ, आज यही तक। आपके पत्र का इन्तजार रहेगा। मुझे यह जानकर वडी तसल्ली होती है कि आप वास्तविक स्थिति को समझकर एक समझदार माँ की तरह व्यवहार कर रही है। आखिर बेटो की हिम्मत बढाने के लिए माँओ को खुद भी तो हिम्मत रखनी होगी।

सब को यथायोग्य।

आपका बेटा,
जे० के०
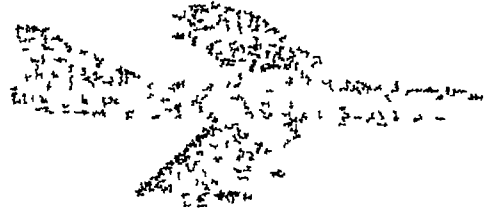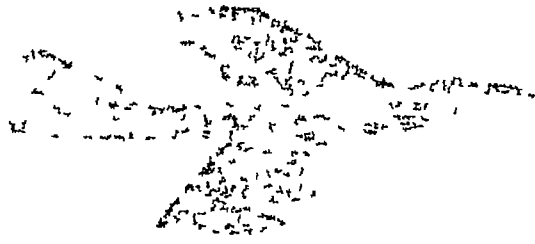
6 युद्ध के मोर्चे से—
एक पायलेट बेटे का पत्र

प्यारी माँ,

जय हिन्द !

मैंने अपने पिछले पत्र में तुम्हे बताया था कि पाकिस्तान हमारे हवाई अड्डों व नष्ट करने पर तुला हुआ है। अब हमे भी उसको सबक सिखाना होगा।

हमारी भारतीय वायु-सेना ने पश्चिम पाकिस्तान के कई हवाई अड्डों पर आ हमले किए। उनका मुख्य लक्ष्य सरगोधा हवाई अड्डा था। इन हवाई अड्डों क काफी नुकसान पहुँचाया गया। लाहौर क्षेत्र में एक हवाई हमले मे भारतीय वायुसेन ने तीन पाकिस्तानी टैंकों में आग लगा दी और दस गाड़ियो को क्षति पहुँचाई।

पाकिस्तानी वायुसेना ने आज सेवर जैटों से जम्मू शहर पर तीन हमले किए हमारी जमीनी तोपों ने इसमे से दो को गिरा दिया। इनमे से एक जम्मू शहर के नजदीक गिरा। यह विश्वास किया जाता है कि एक और सेवर जैट विमान को क्षति पहुँची है और वह पाकिस्तान क्षेत्र मे कहीं जा गिरा है।

भारतीय विमानचालक अपने कौशलतथा बहादुरी का परिचय लगातार दे रहे है। एक मिस्टियर भारतीय विमान क्षतिग्रस्त हो गया था, लेकिन उसके चालक फ्लाइट लेफ्टिनैट हुसैन ने बडी चातुरी से उसे सकुशल भारतीय क्षेत्र मे उतार लिया और तब उसमें से सकुशल निकल आया। उसे अब अपने अड्डे पर वापस ले जाया गया है और वह दूसरी उडान भरने के लिए तैयार है।

दो दिन अवकाश नही मिला। काम अधिक है जल्दी-जल्दी मे कुछ समाचार दे रहा हूँ। सम्भव है, पत्र आज भी न खत्म कर पाऊँ। खैर, कोई बात नही। मै तुम्हारे भेजे हुए अन्तर्देशीय कवर पर हस्ताक्षर करके तो भेज ही देता हूँ। इससे तुम्हे मेरे सकुशल होने का प्रमाण तो मिल ही जाता है।

कल शाम साढ़े चार बजे पाकिस्तानी सेबरजैट विमानो ने बागडोगरा हवाई अड्डे पर हमला किया। हमारी जमीनी तोपो ने एक सैबर जैट मार गिराया। हमारा एक पैकेट और एक वैम्पायर विमान जमीन पर नष्ट हो गए। दो वायुसेना अधिकारियो को भी सख्त चोट आई।

कल रात फिर भारतीय वायु सेना के विमानों ने सरगोधा और पश्चिम पजाब के अन्य हवाई अड्डो पर बम बरसाए, जिसमें पाकिस्तानी विमान और हवाई अड्डे के यन्त्र नष्ट हुए। दुश्मन की विमानभेदी तोपों की जबरदस्त मार के बावजूद भारतीय वायुसेना ने ये हमले किए। यह देखा गया कि हवाई अड्डों पर खडे पाकिस्तानी विमानो पर गोले पड़े और जबरदस्त धमाकों को आवाज आई।

हमारे सब विमान सुरक्षित लौट आए है।

कल रात पाकिस्तान के एक बी-57 बमवर्षक विमान को विमानभेदी तोप की मार से नष्ट कर दिया गया। यह विमान हमारे एक हवाई अड्डे पर हमला करने की कोशिश कर रहा था।

भारतीय वायुसेना के विमानों ने स्थल सेना का मार्ग साफ करने के लिए सफल उडाने भरीं। शत्रु के अड्डों को भारी नुकसान पहुँचाया। अमृतसर पर पाक के तीन बी-57 बमवर्षक विमानों ने हमला किया। उनकी मदद के लिए चार सेबर जैट भी

आए थे। हमारे अचूक निशानेबाज राजू ने उनका एक बमवर्षक गिरा लिया। यह देख कर शत्रु के अन्य हवाई जहाज दुम दबाकर भाग गए।

माँ, तुम यकीन करना जब आसमान मे हवाई लड़ाई होती है तो अमृतसर में लोग छतो पर चढ़कर तमाशा देखते है और जब शत्रु का कोई जहाज जलकर नीचे लहराता हुआ आता है तो लोग ताली बजा-बजा कर कहते है—'वो काटा' 'वो मारा'। मानो पतंग के पेंच लड़ा रहे हो। यहाँ के लोग इतने निडर और बहादुर है कि उनकी हिम्मत देखकर हृदय गद्‌गद हो जाता है। प्राण हथेलो पर रख कर, सिर पर कफन बाँध कर युद्ध-क्षेत्र मे हिम्मत के साथ आगे बढ़ने वाले हमारे पजाबी, गढ़वाली, राजपूत, गोरखे, जाट, सिख आदि देश के बहादुर बेटो पर सारे देश को अभिमान है। पाकिस्तानी समझते थे कि उनके देश के छःफुटिया ऊँचे-तगड़े लोग हमें मरोड़ कर धर देंगे। पर उन्हे पता नहीं था कि ये भेड चाल चलने वाले, जिन्हे वहाँ के नेता भेड़ों की तरह हाँक रहे हैं, हमारी रणकुशलता के आगे मात खा जाएँगे।

हाँ मा, मैं यहाँ बैठा हुआ तोपो की आवाज सुन रहा हूँ। अभी मेरे दो साथी कसूर क्षेत्र पर हमला करके आए है। उन्होने बताया कि शत्रुओं का उन्होंने काफी नुकसान किया। हमने उनके तोपों के ठिकानो को नष्ट कर दिया। गुरदासपुर में एक पाकिस्तानी विमान गिराया गया था। इसका चालक अल्लादीन अहमद विमान से बाहर कूद पड़ा लेकिन गिरते ही मर गया। उसकी जेब से जो जरूरी कागज मिले उनसे हमे पता चला कि पाकिस्तानी विमान सेना हमारे हलवारा हवाई अड्डे को नष्ट करने पर तुली हुई है। पिछले 24 घण्टो में भारतीय वायु सेना को पर्याप्त सफलता मिली है।

पाकिस्तान के जो विमान आगे के हवाई अड्डों से कुछ समय मे दूर ही रहे है उन्हे ढूंढ निकालने के लिए पेशावर और कोहाट के हवाई अड्डो पर हमारे विमानों ने प्रहार किए जिनमें शत्रु के हवाई अड्डों की इमारतो और यन्त्रो, पेट्रोल आदि के भंडारों और पाकिस्तानी विमानों को पर्याप्त क्षति पहुंची। हमारे सब विमान सुरक्षित वापस लौट आए, यद्यपि पाकिस्तानी विमानो ने उन्हे घेरने की कोशिश की। विश्वास है कि पाकिस्तान के एक और हवाई अड्डे पर भारतीय वायुसेना के विमानों के प्रहार के

फलस्वरूप 3 पाकिस्तानी विमान नष्ट हो गए ।

माँ, लड़ाई मे सफलता सबके परस्पर सहयोग से ही होती है । जैसे ही पायलेट जहाज को नीचे उतारता है, मिस्त्री और पेट्रौल भरने वाले अपने-अपने कामो में जुट जाते हैं और सब देखभाल कर जहाज को मिनटो में उडने के लिए तैयार कर देते है। इस युद्ध मे हमारे मकैनिको ने बड़ी तत्परता से अपना काम किया ।

इसके अतिरिक्त कुछ पायलेट केवल चौकसी के लिए आसमान मे गश्त करते रहते है। वे हमे शत्रुओ की हलचल का पता देते है । ये चालक हमारी रक्षा-सेनाओ की मानो आँख है । राजौरी क्षेत्र मे पाक हमलावरो के जमाव के बारे मे निश्चित सूचना प्राप्त करने की समस्या थी, मौसम खराब था, ऊँची-नीची चोटियों वाला विषम पहाडी प्रदेश, मगर एक विमान-चालक सामने आया और बोला कि मै पता लगाऊँगा । घने बादलों के बीच विशेप प्रकाश न होने के बावजूद वह साहस के साथ एक विषम घाटी मे घुस गया और शत्रु के जमाव के ठीक स्थान के बारे मे आकर निश्चित सूचना दी।

ये सभी साहसी चालक हमारी वायु सेना के चौकसी विमान-टुकडी के थे। शत्रु के विरुद्ध की जा रही लड़ाई मे इस चौकसी विमान-टुकडी का स्थान बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। यही हमारी रक्षा-सेना की आँख व कान है ।

चौकसी विभाग के इन विमानो मे केवल एक चालक ही होता है और उसके विमान मे किसी भी प्रकार के हथियार नही होते। इसका कार्य सुबह से शाम तक चौकसी उड़ाने भरना तथा शत्रु के जमाव आदि के बारे मे सूचना लाना है। छम्ब क्षेत्र मे शत्रु के भारी आक्रमण की सूचना इसी विमान ने दी थी जिस पर स्थल सेना व वायु सेना ने तत्काल कार्रवाई कर शत्रु को आगे बढने से रोक दिया था।

चौकसी विमान मे चालक विमानभेदी तोप-चालको को भी शत्रु के विमान की सही दिशा व कोण आदि के वारे मे सूचना देते है जिससे कि वे उस विमान की धज्जियाँ उड़ा सके। इसी सहयोग से गत कुछ दिनों में ही जम्मू क्षेत्र मे शत्रु के छ सेबर जैट विमान गिराए जा चुके हैं। हमारे चालक वड़े जवाँमर्द और हिम्मती है। यदि उनका विमान दुर्भाग्य से शत्रु की गोली का शिकार हो जाता है, तो चालक की

हरदम यह कोशिश रहती है कि अपने ही क्षेत्र में जहाज को लाकर उतारे या यदि पैराशूट से कूदना भी पड़े तो अपनी सीमा मे ही उतरे। जम्मू मे शत्रु ने हमारे एक विमान के ढाँचे को नष्ट कर दिया, उसके डैनों को गोलियों से वेध दिया, मगर हमारे चालक का साहस देखिए कि वह फिर भी घबराया नही, इसी हालत में शत्रु-प्रदेश से उडता हुआ वापस अपने ठिकाने पर पहुँचा और शत्रु पर घातक चोट पहुँचाने के सम्वन्ध में महत्त्वपूर्ण जानकारी दी।

एक अन्य घटनामे शत्रु ने नीचे से गोलावारी कर हमारे एक विमान के डैनों तथा पहियो को नष्ट कर दिया, मगर चालक फिर भी साहस न खो अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए शत्रु केप्रदेश पर उडता गया और आवश्यक जानकारी प्राप्त करके ही अपने मुख्य शिविर पर पहुँचा।

अच्छा माँ, अब पत्र वन्द करता हूँ। अभी-अभी समाचार मिला है कि हमारे एक वहादुर चालक ने गुजराँवाला से दस मील उत्तर मे शत्रु का राडार वेकाम कर दिया। इस समय सभी लोग उसी की वात कर रहे है। कल तुम्हे उसका पूरा विवरण लिखूँगा।

आदर सहित।

आपका वेटा

जे० के०
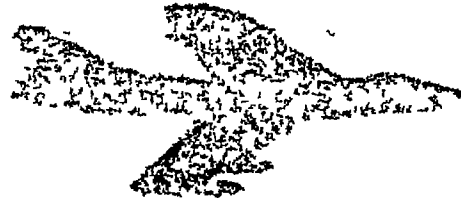
7 युद्ध के मोर्चे से— एक पायलेट बेटे का पत्र

प्यारी माँ,

जयहिंद !

तुम्हारा पत्र मिला। बडी तसल्ली हुई। तुम्हारे आशीर्वाद से मुझे बडी प्रेरणा मिलती है। माँ, छुटपन मे तुम हमे महाभारत और राजपूत वीरो की कहानियाँ सुनाया करती थी। पर माँ, भारत का नया इतिहास हमारे वीरो की गाथा से भरेगा। इस युग के आत्म-बलिदानी वीरों के शौर्य की कहानियाँ भी बच्चों को प्रेरणा देंगी। उन वीरों में हवाबाज जसवीरसिंह का नाम अग्रणी रहेगा। उसने अपने अद्भुत पराक्रम, सूझबूझ और आत्म-बलिदान से भारत माँ का भाल ऊँचा कर दिया। मौके पर निश्चय करके सहर्ष मृत्यु का वरण करना साहसिक वीरो का ही काम है।

घटना इस प्रकार है। स्क्वा० लीडर जसवीरसिंह गुजराँवाला क्षेत्र का ही रहने वाला था। इसे उस स्थान की चप्पा-चप्पा जगह का पता था। इसलिए हर बार वह हवाई टुकड़ी के साथ गुजराँवाला के आसपास बम गिराने जाता था। पाक का वह हवाई

अड्डा आधुनिकतम साधनों से युक्त है। यह हवाई अड्डा एक समझौते के अनुसार कई करोड़ रुपयों की लागत से बनाया गया है। हम कई बार इस हवाई अड्डे को नष्ट करने के लिए हमला कर चुके है। क्योंकि यहाँ से भी हवाई जहाज उड़कर हमारे देश के अड्डों पर हमला करते रहे है। हम भी गुजरांवाला और चकलाला हवाई अड्डों पर जवाबी बमबारी करते रहे है। हमने इनके अनेक विमान और टैंक नष्ट भी किए। कल भारत और पाक हवाई सेना के बीच 24 घंटे का भयंकर युद्ध हुआ। शत्रु को भारी नुकसान पहुँचा। हमारे भी कुछ विमान नष्ट हुए। दूसरे दिन चलने से पहले चालकों मे इस बात की चर्चा थी कि गुजराँवाला और सरगोधा के हवाई अड्डों पर जो राडार है वे हमारी हवाई कार्रवाइयों में बड़े बाधक है। क्योंकि हमारी सब गतिविधि उनके कारण शत्रु को पता चल जाती है। नतीजा यह होता है कि हम अभी अड्डे पर हमला करने के लिए पहुँच भी नही पाते कि शत्रु के जहाज झुंड बना कर हमसे लड़ने आ जाते है। इस युद्ध मे हमारे कई अच्छे हवाबाज बेकार हो चुके थे। हम लोगों ने इन स्थानो व राडारों और इसकी सिगनल-व्यवस्था को नष्ट करने की कई बार चेष्टा की, पर सब व्यर्थ गया।

जसबीर अपने सहयोगियो की अड़चनों को समझता था। वह उनकी सब बात चुप-चाप सुनता रहा। फिर बोला—मित्र, यदि हमारे यहाँ भी जापान की तरह 'सूसाइडिल चालक' होते तो काम बन जाता। द्वितीय महायुद्ध मे जापान के दो युवक चालक अमेरिका के विशाल जलपोत की चिमनी मे अपना जहाज लेकर जा गिरे थे और वे दोनो जहाज नष्ट हो गए।

एक चालक बोला—हाँ भाई, है तो यह बहुत हिम्मत का काम। मृत्यु को जानबूझ कर वरण करना कुछ मायने रखता है।

बहादुर जसबीर ने सुना और मन मे कुछ निश्चय करके अपने विमान में जा बैठा। फॉरमेशन में चार जहाज उड़े। जैसे ही ये शत्रु के सैनिक अड्डे की ओर बढ़े वि शत्रु के जहाज आकर अड़ गए। घमासान लड़ाई हुई। भारतीय हवाबाजों ने जल्दी से गोले गिराए और ग्रुप-लीडर ने साथियों को लौटने का हुक्म दिया, क्योंकि शत्रु

को नुकसान पहुँचाने के अतिरिक्त आत्म-रक्षा तथा अपने विमान को नुकसान से बचाने का भी ध्यान रखना जरूरी होता है। जसवीर के जहाज में आग भी लग गई थी और उसने सोचा होगा कि बचकर निकलने की सभावना कम है इसलिए मरते-मरते भी कुछ कर जाना चाहिए। अभी भी उसने दो गोले बचा रखे थे। उसने मुडकर देखा और उसे लगा गुजराँवाला के राडार यन्त्र को जहाँ से सिगनल दिया जा रहा था, काफी नुकसान नही पहुँचा है। यद्यपि उन चारों ने मिलकर काफी नीचे आकर राडार पर हमला किया था। और राडार के आस-पास से तेज लपटे निकल रही थी। उसने सोचा, काश मै निशाने पर एक गोला और दाग दूँ। अन्य तीनो विमान तेज़ी से आगे निकल गए थे। जसवीर कुछ निश्चय करके लौट पड़ा। उसे अपने साथियो की बात याद आई कि काश! हमारे यहाँ भी आत्म-बलिदानी चालक होते। उसने सोचा— मै क्यो न वैसा होने का सौभाग्य प्राप्त करूँ ? मरना तो एक दिन सभी ने है। बस, मौत की अवहेलना कर वह वीर लौट पडा। ग्रुप-लीडर ने उसे लौटते देख आदेश दिया—न० फोर, लौटो। अकेले हमला करने मत जाओ। तुम घिर कर मारे जाओगे। लौटो ! लौटो ! यदि विमान मे आग लग गई है तो बेल आऊट हो जाओ।

जसवीर ने बात अनसुनी की। वह तो मृत्यु को वरण करने जा रहा था। रण-चण्डी मानो अपना खप्पर फैलाकर खडी थी। आज इस वीर के उत्सर्ग का वह स्वागत कर रही थी। ऐसे वीर जो मृत्यु को भी अपनी भयकरता और उत्सर्ग से लज्जित कर दें, विरले ही होते है।

जसवीर ने हुकार भरी। शत्रु के हवाई जहाज़ उसकी ओर लपके। पर वह उनकी उपेक्षा करके तीव्र गति से राडार को निशाना बना कर उस पर टूट पड़ा। शत्रु के विमान-चालक यह देखकर हैरान रह गए कि भारतीय चालक ने स्वय को अपने विमान और बम-सहित राडार की आँख पर जा पटका। जोर का धड़ाका हुआ। राडार नष्ट हो गया। यह सब कुछ पलक झपकते घट गया।

धमाके की आवाज अन्य तीन भारतीय चालको ने भी सुनी। ग्रुप लीडर ने कहा—एक कीमती जान चली गई। देश के लिए माँ का एक वीर सपूत बलि हो

गया। उस दिन अखबार में छपा आज हमारे चार हवाबाज गुजराँवाला से दस मील उत्तर एक राडार पर भयंकर बमवर्षा करने में सफल हुए। इस कार्य मे एक बमवर्षक शहीद हो गया। जिसने भी जसबीर की बहादुरी के विषय में सुना, दिल थाम लिया भावावेश में कुछ कहना असम्भव था। सजल नेत्रो से साथी पायलेटों ने आकाश की ओर देखा। मानो उस दिव्य आत्मा की दिव्य ज्योति को प्रणाम कर रहे हों।

माँ, जसबीर हमारा एक हँसमुख और नेक साथी था। स्वभाव से जरा खामोश पर बड़ा साफ़ दिल का। उसका चौडा जबड़ा और ऊँची नाक देखकर मै मजाक किया करता था—यार, तू तो बड़ा जिद्दी और अडियल स्वभाव का है। वह हँस देता और कहता—हाँ, मेरी माँ भी यही कहती है कि तू अपनी टेक का पक्का है। सचमुच मं वह एकान्तसेवी और अपने निश्चय का पक्का था। उसने दुश्मन के हवाई अड्डे को मौत के फौलादी दुर्ग को, भस्म कर दिया। इस वीर ने मानो भारतीय विमानचालकों के मुँह पर एक चमक ला दी, उनके हृदय में मर मिटने की एक साध पैदा कर दी उसने अपनी मृत्यु को एक मरणोत्सव बना कर दिखा दिया।

सच जानो माँ, जब-जब मुझे उसकी याद आती है, कलेजे मे एक हूक-सी उठती है। जी चाहता है कि शत्रुओ पर लगातार बम-वर्षा करता रहूँ। पाकिस्तानियों ने कभी सोचा भी न होगा कि उनका एक फौलादी दुर्ग, जहाँ से भारत के विमान चालकों की सब गतिविधि जानी जा सकती थी, इस प्रकार नष्ट कर दिया जाएगा। जिस समय वह अपने साथी बमबारो की पंक्ति को छोड़ कर अपने ध्येय की ओर मुड़ा होगा, उन कुछ क्षणों मे कितने विचार उसके हृदय मे आए होंगे? कितने प्रियजनों की सूरतें, अनुरोध, सजल आँखें उसके दिमाग मे कौंधी होंगी? सोचो माँ, सोचो, उन कुछ क्षणों में ही उसके मरण को वरण करने का निश्चय कर लिया होगा। धन्य हैं उनके माता-पिता! धन्य है वह देश, जहाँ ऐसे वीर पुंगव जन्म लेते है। बहादुर जसवीर आज व्यक्ति, समाज और देश की सीमा को लांघकर सारे संसार के गौरव का कारण बन गया। उसके शौर्य पर सभी दाँतों तले उँगली दबाते है। पाकिस्तान की वह भूमि जहाँ उसने जन्म लिया था, बचपन में जिसकी माटी मे वह लोट-पोट कर बड़ा हुआ

था, उसकी भस्मी से पवित्र होकर वीरों के लिए तीर्थस्थान बन गई है। कुछ साथियो का ख्याल है कि शायद जसवीर बच गया हो या बेल-आउट हो गया हो। क्योंकि जब तक मृत्यु का प्रमाण नही मिल जाता, किसी के लिए ऐसा कहना उसकी सुरक्षा के लिए ठीक नही है। इस विषय में सरकार कुछ समय बाद ही घोषणा कर सकी। रक्षा-मत्री ने बाद मे इस वीर के बलिदान की पुष्टि की और उसे पुरस्कृत करने की घोषणा भी की।

बस माँ, आज तो यही तक। अन्य मोर्चो पर भी वायुयानों से हमले हो रहे है। भारतीय वायुसेना के विमानों ने आज भी पश्चिम पाकिस्तान के विभिन्न क्षेत्रो मे सैनिक अड्डोपर हवाई हमले किए और दुश्मन को बहुत नुकसान पहुँचाया। पाकिस्तान के विमानो ने भी भारत के अनेक शहरो पर हमले किए। कुछ शहरो से प्राप्त समाचारो से पता चला है कि पाकिस्तानी पायलटो के निशाने घटिया दर्जे के हैं और उनके बम लक्ष्य से मीलों दूर पड़ रहे है।

आज सुबह हमारे चार हण्टर विमानों ने कसूर क्षेत्र में एक हवाई हमले मे तोपों के ठिकानों को नष्ट किया, दुश्मन की फौज के एक ठिकाने पर गोलियाँ चलाईं और 40-50 गाड़ियों को आग लगा दी।

जसवीर के बलिदान से सभी हवाई चालकों की भुजाएँ फडक उठी है। जल्द ही तुम्हे इसका प्रमाण मिलेगा। आगामी पत्र में अपने वीर चालको के अन्य कारनामे आपको लिखूँगा।

विनोद और शिब्बू को मेरा कुशल समाचार सूचित कर देना। सबको यथायोग्य, नमस्ते।

सादर,

आपका बेटा

जे० के०

8 युद्ध के मोर्चे से—
एक पायलेट बेटे का पत्र

प्यारी माँ,

जयहिन्द !

हमारी वायुसेना ने पिछले दिनों पंजाब सीमा के उस पार दुश्मनों के ठिकानो पर जोरदार हमले किए है । उनके टैंक ले जाने वाली एक ट्रेन भी जलाकर राख कर दी गई है। उनके एक सैनिक शिविर को भी, जहाँ तोपें लगी हुई थी ध्वंस कर दिया गया। सैनिक काफिला तथा रसद ले जाने वाली ट्रेन भी नष्ट कर दी। हमारी इस सफलता से स्थल सेना के हौसले बुलन्द हो गए।

माँ, सच जानना युद्ध इन्सान को क्रूर बना देता है। दुख है कि इस युद्ध ने अब हिन्द और पाक को परस्पर दुश्मन बना दिया है। बँटवारे से पहले तो हमारा वतन एक ही था। हम दोनों ने कंधे से कंधा मिलाकर स्वतन्त्रता के युद्ध मे भाग लिया। मुझे पहले के [illegible] दिन याद आते है जब कि हम ननसाल जाते थे और इस्मादीन चाचा हमें ईद की [illegible] खिलाने अपने घर ले जाता था । मुहर्रम का जलूस देखने हम रहीम भाईसाहब

के साथ जाया करते थे। हिन्दू मुसलमानो में कितना प्यार था परस्पर ! मौहल्ले की बेटी सबकी बेटी समझी जाती थी। माँ, इन अग्रेजो ने बँटवारे से पहले ही हिन्दू-मुसलमानो के दिलो मे नफरत पैदा कर दी और अब रही-सही कसर यह लड़ाई पूरी कर रही है। वहाँ के हुक्मरानो ने किस प्रकार अपने देश के लोगो के दिलो में हिन्दुस्तान के प्रति विष भरा हुआ है इसका एक उदाहरण देता हूँ। स्यालकोट के मोर्चे पर एक गाँव की बुढिया ने गोली चलाकर हमारे कई सिपाही जख्मी कर दिए और जब वह पकडी गई तब भी यही चिल्लाती रही कि 'कोई काफिर मुझे न छुए !' उसके दिल मे नफरत कूट-कूट कर भरी हुई थी। लेकिन अब वही बुढिया पहले से काफी ठीक हो गई है। उसके परिवार के लोग तो उसे छोडकर भाग गए थे। हमारे सैनिको ने उसे भोजन दिया। उसके घावो की मरहम-पट्टी की।

जब हमारी फौज बरकी के हिस्से मे घुसी तो हम मे से बहुतो को तो ऐसा लगा कि यही तो वह भूमि है जहाँ हम खेल-कूद कर बडे हुए थे। उजडे हुए गाँवो में हमने बूढो को, लाचारो को सहारा दिया। उन्होने हमे दुआएँ दी। इन्सान-इन्सान का नफरत का नही, पर प्यार का रिश्ता ही कुदरती है।

माँ, हर मोर्चे पर हमारी फतह हो रही है। छम्ब-जोडियाँ क्षेत्र मे भी हमारी वायु-सेना को कई सफलताएँ मिली। वायुसेना के जहाजो ने 5 और पाकिस्तानी टैंको, 2 बहुत भारी तोपो, 10 अन्य तोपो और एक दर्जन सामान ले जाने वाली गाड़ियाँ नष्ट कर दी। कई बख्तरबन्द गाडियो को भी नुकसान पहुँचाया गया। हमारे सब विमान कुशल अपने अड्डो पर लौट आए।

माँ, हमारी वायुसेना बडी बहादुर है। उसके उडाकू पाकिस्तान की योजना को विफल करने में बडे सफल रहे। हम तो केवल शत्रु की रण-सामग्री को ही नुकसान पहुँचाते , परन्तु शत्रु के विमान हमारे खेतो, खलिहानो, मन्दिर-मस्जिद, गुरुद्वारे,-गिरजाघरों, अस्पतालो सभी को अनदेखा-सा करते हुए निशाना बना रहे है।

भारतीय वायुसेना न सिर्फ केवल हमारी स्थल सेना को कारगर मदद दे रही है, बल्कि उसने उन अड्डों को भी निशाना बनाया है, जहाँ से पाकिस्तान हमारे क्षेत्रो पर

हमला करता रहा है ।

स्थल सेना की सहायता से हमारे विमानों ने डेरा बाबा नानक क्षेत्र मे शत्रु पर मार की । हमारे विमानों ने सुलेमान हेडवर्क्स पर जमा पाकिस्तानी स्थल सेना पर भी मार की । पाकिस्तानी सेना भारत पर आक्रमण करने को तैयार थी। पाकिस्तान के सरगोधा और चकलाला हवाई अड्डों पर भी हमारे विमानो ने कई बार हमला किया, क्योकि इन अड्डो से उड़कर पाकिस्तानी विमान आक्रमणकारी पाकिस्तानी सेना को सहायता देने के लिए हमारे ऊपर आक्रमण करते थे। हमारी वायु सेना ने पाकिस्तानी विमानों को हमारे देश के दूर-दूर फैले हुए भागो मे नगरों और हवाई अड्डों पर आक्रमण करने से भी रोका है । पाकिस्तानी विमानो ने पश्चिम में जामनगर से लेकर पूर्व मे कलकत्ता के पास कलाईकुड पर भी आक्रमण किए । हमारे विमानो ने शत्रु के विमानो को रोका और उन्हें मार भगाया। इसके पहले पाकिस्तानी विमानों ने गौरिय और रणवीरसिंहपुरा के शहरी क्षेत्र पर बमबारी की थी । अमृतसर और फिरोजपु पर तथा अन्य असैनिक स्थानों पर भी शत्रु हमला कर रहे है पर उन्हे कुछ विशे नुकसान करने मे सफलता नही मिली ।

युद्ध दिन पर दिन जोर पकड़ता जा रहा है। हम सचेत है और शत्रु की हर चा विफल करने का दम रखते हैं । माँ, कसूर का युद्ध बडा सैनिक महत्त्व रखता है। इस हमारी विजय जरूर होनी चाहिए और होकर रहेगी ।

कसूर क्षेत्र मे स्थल सेनाओं को सहायता देने के लिए हमारी वायुसेना ने आ प्रात: कई हवाई हमले किए। एक हवाई हमले मे चार पाकिस्तानी टैंक तहस-नह कर दिए गए। एक दूसरे हमले मे कई तोपों के ठिकानो और पक्की खन्दकों को न कर दिया गया । अब हमारी फ़ौज का रास्ता साफ हो गया है। वह तेजी के साथ आ बढ़ रही है ।

भारतीय वायुसेना के विमान कल फिर सक्रिय रहे । हमारे विमानों ने कसू लाहौर सड़क पर पाकिस्तान के एक मोटर काफिले पर प्रहार किया और कम से क ३४ मे ट्रक-गाड़ियाँ नष्ट कर दी। कसूर-रायविण्ड और कई रेलवे स्टेशनों पर

गोदामो पर हमारे विमानों ने वार किया और भारी क्षति पहुँचाई। इन स्टेशनों से लाहौर मोर्चे पर लड रही पाकिस्तानी फौजों को रसद और सैनिक उपयोग का साज-सामान भेजा जाता है। कसूर और लाहौर के बीच के पुल को भी क्षति पहुँचाई गई।

कल रात जब पाकिस्तानी विमानो ने हमारे आदमपुर अड्डे पर हमला किया तो हमारे बहादुर चालको ने उनका एक बमवर्षक नीचे मार गिराया। वह बिजली की तेजी से झपटता हुआ हमारे अड्डे की ओर झपटा था। हमारे चालक पहले ही आसमान मे गश्त कर रहे थे। उन्होने उसे घेर लिया। दो उसे सामने से उलझाए रहे और दो ने उसकी दुम की तरफ से निशाना साधा। पहला निशाना उसके पख पर लगा। वह जरा टेढा होकर लडखडाया। बस फिर क्या था। नीचे गिरते हुए उस पर दूसरा निशाना दाग दिया गया। पेट्रौल की टकी फट गई और शत्रु के हवाई जहाज मे आग लग गई। वह धुँआ छोडता हुआ नीचे आ पडा।

बाज की तरह झपट्टा मारने वाले हमारे इन नैट विमानो ने जो करिश्मे दिखाए उससे पाकिस्तानी वायुसेना बौखला उठी है और अपनी खीझ उतारने के लिए उसने शान्त नागरिको पर हमले किए। पाकिस्तान कहता है कि भारत की वायुसेना का बहुत बडा हिस्सा खत्म कर दिया गया, परन्तु सचाई यह है कि हमारी वायुसेना की केवल एक कमान ने ही इस युद्ध मे भाग लिया था और हमने शत्रु की हवाई तथा स्थल सेना, दोनो को भारी क्षति पहुँचाई है।

हमारे एयर मार्शल अर्जुनसिह ने भारतीय हवाबाजो की पीठ ठोकते हुए कहा कि हमारे इन वीर हवाबाजो ने यह सिद्ध कर दिया कि भारतीय उडाके अपने देश के बने विमानो से विदेश के विमानो को तहस-नहस कर सकते है।

माँ, हवाई लडाई मे हमारे एक सीट वाले नैट बहुत सफल रहे है। हमारी हवाई सेना ने स्थल सेना को सभी मोर्चो पर जो सहयोग दिया और हवाई लडाई मे शत्रु के दाँत खट्टे किए, यह दुनिया भर मे एक बेमिसाल बात साबित हुई है। शत्रु के युद्ध-साधनों का नाश करना और उनकी प्रगति को रोक रखना नैट का ही कमाल था। नैट का ईधन-खर्च भी कम है।

नैट विमान की बनावट भी हल्की है। इसके पंख छोटे और पतले और कुछ पीछे को मुड़े होते हैं। इसकी नाक लम्बी होती है। इसी मे चालक और गोला-बारूद के लिए जगह होती है। खतरे के समय चालक के बचाव के लिए एक कुर्सी होती है जो कि बटन दबाते ही अलग होकर ऊपर को साफ निकल जाती है और उससे बँधी छतरी खुल जाती है। उसी के सहारे चालक धरती पर सुरक्षित उतर सकता है। नैट के बीच के हिस्से मे रेडियो, राडार, कैमरा तथा ईंधन आदि रखने की सुविधा होती है। नैट का वजन तीन या चार हजार किलोग्राम के बीच होता है। इसकी लम्बाई नौ मीटर तथा चौडाई पौने सात मीटर के करीब होती है।

इन्ही विशेषताओ के कारण झपट्टामार युद्ध में यह विमान बडा सफल रहा है। क्योंकि यह झट से करवट लेकर मुड़ सकता है। कूद कर शत्रु के विमान की दुम पर हमला कर सकता है और आकार मे छोटा होने के कारण शत्रु इसे जल्द निशाना भी नही बना पाता।

किसी कवि ने 'नैट' की शान में ठीक ही कहा है—

देखने में जरा सा हूँ लेकिन
शूरवीरों की आनबान हूँ मै।
आसमाँ की खुली दिशाओ मे
सारे भारत का पासबान हूँ मै॥
मै हूँ पाला हुआ 'जवाहर' का
हिन्द की खाक से है मेरा खमीर।
मुझको छोटा सा नैट मत समझो
मै हूँ सैबर गिराने वाला वीर॥

देखा माँ, यह है हमारे नैट विमान का कमाल। हम चालक तो परस्पर 'जय नैट!'

में वायु-युद्ध की अधिक से अधिक जानकारी देने की चेष्टा करता हूँ। अगले पत्र मे मै तुम्हे विभिन्न विमानो और बमो के विषय मे बताऊँगा जिनका कि इस युद्ध मे प्रयोग हुआ है।

घर पर सब को यथायोग्य कहना। सबको अलग पत्र लिखने का अवकाश नही मिल पाता अत. तुम्ही सबको मेरी कुशलता का समाचार पहुँचा देना। सादर,

आपका बेटा
जे० के०

9 युद्ध के मोर्चे से— एक पायलेट बेटे का पत्र

प्यारी मां,

जयहिन्द !

तुम्हारा पत्र मिला। पाकिस्तानी-रेडियो के समाचारों पर कभी यकीन मत करन
उनकी यह शेखी कि उन्होंने हमारी वायुसेना को युद्ध के पहले हफ्ते में ही बेकार व
दिया, बिलकुल झूठ है और कोरी गप्प है। वास्तविकता ठीक इससे उलटी है।

पाक के विमान कई बार हमारे क्षेत्रों पर आए, लेकिन इस बात के ही प्रम
छोड़कर गए कि वे अपने लक्ष्य को सही निशाना बनाने में बिलकुल असमर्थ है। उ
उनका सही इस्तेमाल ही नहीं आता।

एक दिन शत्रु के छह सेबर विमान इस अग्रिम हवाई अड्डे को नष्ट करने के लि
रात के समय चोरी-छिपे आए। इनमें से चार को तो हमारे हण्टरों और विमानभे
तोपों ने मार गिराया। बाकी दो ऐसे घबड़ाए कि बेचारे हवा में आपस में ही टक
र नीचे गिर कर नष्ट हो गए।

पाकिस्तान की वायुसेना को हमारे पायलेटो से एक अच्छा सबक मिला है और अब वे यह जान गए है कि हमारे नैट और हण्टर विमानो के पायलेटो का साहस और उनकी ट्रेनिंग पाकिस्तान के पायलेटो और उनके सेबरो व स्टार-फाइटरो की जानलेवा बन गई है। वे हमसे डरते है। क्योकि हमारा नैट उनके विमानो की दुम पर जाकर फौरन हमला करता है।

भारतीय वायुसेना के अधिकारियों और सैनिकों की इस दिलेरी और कर्त्तव्य-परायणता से ही पाकिस्तान की वायुसेना के हौसले पस्त हो गए और उन्हे अपने सेबर जैटों पर जो घमण्ड था, वह जरा-सी देर मे चकनाचूर हो गया।

अब तो पाक विमानचालक घबड़ाकर प्रक्षेपणास्त्रो का प्रयोग कर रहा है। यह अस्त्र बडा घातक होता है। क्योकि यह बड़ी तेजी से अपने शिकार का पीछा करता है और उसकी गति ध्वनि की गति से तिगुनी रफ्तार की होती है। पर वाह रे! हमारे बहादुर हवाबाज, उन्होने इससे बचने के तरीके भी निकाल लिए है। अपने अनुभव के बल पर उन्होने कुछ ऐसा ढग अपनाया कि वे क्षेपणास्त्र की चोट से बराबर बचते रहे। इस लडाई मे नैट विमानो की सफलता साबित हो गई है। हवाई युद्ध में ये सर्वोत्तम है—और शान यह कि ये विमान हमारे देश के ही बने हुए है।

माँ, अब युद्धो मे हवाई युद्ध का महत्त्व बहुत बढ गया है। जिसके पास हवाई सेना मजबूत, साधनयुक्त और सुशिक्षित होगी उसी की विजय होगी। इस युद्ध मे किस प्रकार के विमानो ने भाग लिया, इस विषय मे तुम्हे बताना चाहूँगा।

सबसे बढिया हवाई जहाज वे है जो कि ध्वनि से भी तेज उड़ते है और शत्रु की मार से बचे रहते है। इन्हे ट्रासोनिक विमान कहते है इनकी चाल 760 मील प्रति घण्टा होती है। मैक-2 विमान की गति ध्वनि से दुगनी है। पर मैक-3 की ध्वनि से तिगुनी होती है। उस श्रेणी मे हमारा मारुत विमान आता है।

हमारे यहाँ नैट हवाई जहाजो की जो स्क्वाड्रन है वह शत्रु पर मार करती है। उनके विमानों को नष्ट करती है। प्रत्येक स्क्वाड्रन मे 16 नैट विमान होते है। ऐसी हमारे यहाँ कई स्क्वाड्रने है। इसके अतिरिक्त हमारे पास कैनबरा बमवर्षकों की कई

स्क्वाड्रनें तथा हण्टर बमवर्षकों की कई लड़ाकू स्क्वाड्रने भी है।

पाकिस्तान को अमेरिका ने कई आधुनिकतम हवाई जहाज दिए है। इनमें से मुख्य हैं लडाकू बमवर्षक स्टार फाइटर (एफ 104) और सेवरजैट (एफ 86)। ऐसा ख्याल है कि पाकिस्तान के पास सेवरजैट की चार और स्टार फाइटर की एक स्क्वाड्रन है। इनमें प्रक्षेपणास्त्र भी लगे हुए है। उनके पास बी॰ 57 बाम्बर भी है। इन बमवर्षको की गति क्रमश. 600 और 1300 मील प्रति घण्टा है। ये 60 हजार फीट की ऊँचाई तक उड़ सकते हैं। इन बमवर्षको मे ऐसे इलेक्ट्रोनिक यन्त्र लगे हुए है जिनकी मदद से रात को यहाँ तक कि बादलो के ऊपर से भी बमबारी करने में सुविधा होती है। इन विमानो को ठीक से चलाने के लिए चालक के अतिरिक्त एक नेवीगटर का भी होना जरूरी है।

इसके अतिरिक्त पाकिस्तान ने राकेटो का भी अन्धाधुन्ध प्रयोग किया। इसके जरिए उन्होंने घनी आबादी, गाँवो को बस्तियो पर बम गिराए और भारत की निरीह जनता को मारा। शेष हवाई जहाजो का उपयोग वह सफलता से नही कर सका। इसका प्रमाण हलवारा और जोधपुर का हवाई अड्डा है।

ये लोग जोधपुर के हवाई अड्डे से विशेष खार खाए हुए थे क्योकि इन्हे मालूम था कि हमारे जैट चालक यही पर प्रशिक्षण प्राप्त करके इतने चतुर साबित हुए हैं। माँ, तुम्हें याद है ता॰ 8 और 22 सितम्बर के बीच जोधपुर पर पाक विमानचालकों ने बहुत जबरदस्त हमला किया था। इन हमलो मे शत्रु ने जोधपुर पर लगभग 196 बम गिराए। कुल मिलाकर जिनका वजन 2,00,000 पौंड होगा। इनमें से कुछ बम 4 000 पौंड के भी थे।

माँ, तुम तो जोधपुर तीन बार आ चुकी हो। हवाई अड्डे के पास ही जेल है। एक गनपाउडर बम को रेत की बोरियो मे घेर दिया गया था, पर बाद में जब वह फटा तो उससे जेल का थोड़ा-सा हिस्सा गिर गया। सिवाय जेल के और सभी बम खेतों, खलिहानों या जंगलों और मैदानो मे गिरे। और जेल पर बम गिराना भी कितना अमानुषिक था। बेचारे बीमार कैदी मारे गए। एक कंम्पाउंडर और सेवक भी अपना-

अपना कर्त्तव्य करते हुए परलोक सिधार गए। जिस तरह की अधाधुध बमवर्षा इन्होने की, वह तो कारयता की द्योतक है।

1947 से पहले पाकिस्तान के अधिकाश जैट चालको की ट्रेनिग जोधपुर के ट्रेनिग सेटर मे ही हुई थी। और वे ही बमवर्षक यहाॅ बम गिराने आते रहे। पाकिस्तान के कैनबरा विमानो ने लगभग सवा सौ उड़ाने यहाॅ भरी। जोधपुर पर पाकिस्तान के विमान 15 दिन तक बमवर्षा करते रहे। तुम्हारी बहू और बच्चा उन दिनो वहाॅ पर थे। याद है कितनी घबडा गई थी तुम। मुझे पपली (बहू) का पत्र भी आया था कि जब सायरन बजते थे तो हम लोग खन्दको मे उतर जाते थे। हमारे अड्डे के पास ही तो उनका बगला था। इन हवाई हमलों का बच्चो पर बहुत बुरा असर हुआ। वे सहम गए। शशाक (बच्चा) तो पपली की छाती से चिपका रहता था। अपनी पत्नी और बच्चों की फिक्र मे चालको का चिन्तित होना स्वाभाविक था। इसलिए वहाॅ के अधिकारियों ने एक काफिले के साथ सब अफसरो की बीवियो और बच्चों को यथास्थान भेज दिया। पर जो अफसर वहाॅ थे उनकी बीवियो ने वही रहने का निश्चय किया। वे अब भी वही है।

पाक-विमान की बेकाम निशानेबाजी को देखकर जनता बेफिक्र हो गई थी और वहाँ का दैनिक जीवन सामान्य गति से चलता रहा। जनता का मनोबल बना रहा। देखो माँ, पशु-पक्षी भी आने वाले खतरे को भाँप जाते है। हमले की सूचना जगल के मोर और चिड़ियाघर के पशु-पक्षी पहले से ही बराबर चिल्ला कर दे देते थे। बम गिरने पर उसकी धमक 15-16 मील तक सुनाई पडती थी और कुत्ते-सियार रोने लगते थे। जोधपुर की जनता का विश्वास है कि उनकी रक्षा राठौरो की कुलदेवी चामुण्डा ने की। रोज सुबह वे लोग चामुण्डा देवी के मन्दिर मे पूजन को जाते और धन्यवाद देते कि रात चैन से बीत गई और उनका आत्मबल वना रहा।

हलवारे पर भी शत्रुओं ने भयानक बमवर्षा की। मै उन दिनों वही था। पर हमारे एन्टी एयरक्राफ्टस गन के तोपची ने उन्हे थर्रा दिया। राजू तोपची की वहादुरी तो इतिहास मे सुवर्ण-अक्षरो मे लिखी जाएगी। उसने अमृतसर मे अनगिनत

सेवरजेट गिराए। हलवारा में तो हमने पाक विमानों की मानो कब्रगाह ही बना दी। पाकिस्तानियो को ललकार कर हमने उन्हें जिस प्रकार पैटन टैंक मैदान मे लाने का प्रलोभन दिया, उसी प्रकार उन्हें सेवरजैट भी हवाई युद्ध में झोंक देने का मौका दिया। जब हमे उनकी हवाई शक्ति का पता चल गया तो योजना बनाकर हमने उन्हे नष्ट किया। अब खूब पिट कर, दुम दबाकर वे भाग रहे है। वे हमेशा हमसे बचने की कोशिश कर रहे है। वे लोग तो राडार से बचने के लिए नीची उडाने भरकर हमारे क्षेत्र मे आते है और चोरो की तरह बम गिरा कर भागते है। पर हम तो खूब ऊँची उडान लेकर उनके क्षेत्र मे जाते है और जब उनके राडार उन्हे हमारा पीछा करने के लिए भेजते है तो हम उन्हे ऐसा मजा चखाते है कि याद रखते है। शत्रु के दो-चार विमान नष्ट करके ही हम लौटते है। हलवारे पर कई बार उनके सेवरजैटो को हम अपने विमानो के व्यूह में फँसाकर घेर कर मार गिराते है। मुझे तो उनके हवाबाजों पर तरस आता है। हम लोग जब मैदान मे आते है तो वे खदेड़े गए शिकार की तरह जान बचाते फिरते है। युद्ध मे मात खाकर अब शत्रु इन्सानियत का खून करने पर उतर आया है।

इन्होंने 'नापाम' बम, जो कि गिरते ही आग का विस्फोट करते है, गिराए है ये बम गैसोलीन से बनाए जाते है। कुछ बमो मे पेट्रोलियम ईंधन भी मिला होता है इन्हें गाढा करने के लिए इनमें नापाम द्रव्य का प्रयोग किया जाता है। हवा लगते ही ये ज्वाला की तरह जल उठते है और इनकी लपटें तेजी के साथ फैल जाती है नापाम के कारण गैसोलीन कठोर जेली की तरह हो जाता है। इन बमो का प्रयोग शत्रु ने सीमा पर किया। परन्तु लगता है उनके पास ये बम अधिक नहीं है। आम जगहों पर उन्होंने आग लगानेवाले छोटे बम इस्तेमाल किए है। इससे बचने के लि[illegible] लोग यदि अपनी छतों पर दो इंच रेत की तह बिछा लें तो काफी बचाव हो सकता है

[illegible] बम भी नीचे गिरने पर चुटकी पाकर झट बल उठता है। इस प[illegible] यदि [illegible] रेत डाल दी जाए तो बुझ जाता है। हवा पाकर इसकी लपटे फैलती है [illegible] लगभग [illegible] गज के अन्दर तक यह विनाश करता है।

इसके अतिरिक्त लम्बी दुम वाले किलो-कार्बाइड बम, मजोलिन थर्मस बम तथा धमाकेवाले बमो का भी शत्रु ने उपयोग किया। किलो-कार्बाइड बम पानी पडने पर जलने लगता है। मजोलिन थर्मस बम छूते ही फट जाता है। धमाके वाले बम अपने धमाके से घरो के शीशे, दरवाजे आदि तोड देते है।

माँ, जब भी कोई बम गिरे उसे छूना या उस पर पानी नही छोडना चाहिए। घरो मे रेत की बोरियाँ भरकर रख ली जाएँ और बम गिरने पर उन पर डाल देने से काफी बचाव होता है। फटा हुआ बम भी कभी हाथ से न उठाएं।

शिब्बू से ट्रक-कॉल पर बात हुई थी। वह मजे मे है। मौसीजी को खबर कर देना। विनोद किधर है, इसका मुझे पता नही। उसे 56 ए० पी० ओ० के पते पर ही पत्र लिखना। पपली की लखनऊ से चिट्ठी बराबर आती रहती है। कभी-कभी हफ्ते की डाक एक साथ मिलती है, घर से आप सब लोगो की चिट्ठी आ जाती है तो बेफिक्री हो जाती है। सबको यथायोग्य कहना।

आपका बेटा,

जे० के०
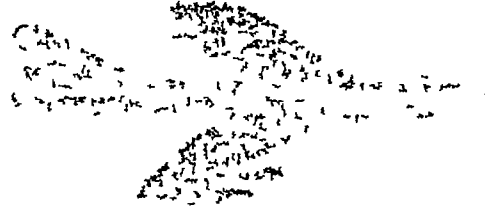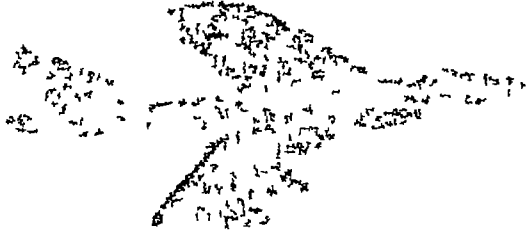
10 युद्ध के मोर्चे से—
एक पायलेट बेटे का पत्र

सस्कृति एक ही है । दुख है कि देश का विभाजन हो गया, दिलो मे नफरत पैदा कर दी गई और उसका नतीजा यह हुआ कि युद्ध हम पर लाद दिया गया । हमे तो अब वहाँ के युद्ध-पिपासु नेताओ को एक सबक सिखाना है । उनको सेना और युद्ध के साधनो को नष्ट करना है । साथ मे दुनिया को यह भी बता देना है कि पाकिस्तान इतने वर्षो से जो शस्त्रास्त्र सग्रह कर रहा था, वह चीन के विरुद्ध नही अपितु भारत के विरुद्ध प्रयोग करने के लिए ही कर रहा था । वह आधुनिक शस्त्रास्त्रो से युक्त होकर भी भारतीय वीरो के सामने नही टिक सका । हिसक और रक्षक के आत्मबल मे यही तो अन्तर है, माँ !

शत्रु को हमने परेशान कर दिया है । कल रात जब पाकिस्तानी विमानो ने आदमपुर हवाई अड्डे पर हमला किया तो हमने उनके बमवर्षक विमानो को मार गिराया। माँ, तुमने हमारे हवाबाजों की सफलता पढी होगी। यह काम समूह के परस्पर सहयोग से होता है । जब शत्रु के किसी विमान को घेरा जाता है तो जिस चालक की गोली उस पर पहले लगती है, वह उसी का शिकार मान लिया जाता है, चाहे उसे गिराने मे अन्य विमान-चालको ने भी सहयोग दिया हो । इसलिए यह नही समझना चाहिए कि जिन चालको को वीरचक्र या परमवीर चक्र नही मिला उन्होने कुछ नही किया । यह तो मौके की बात है कि शिकार हाथ लग गया । सभी चालक प्राण हथेली पर रखकर बमवर्षा करने जाते है । कभी-कभी काम बाँट भी लिया जाता है । यथा कुछ के जिम्मे यह काम सौपा जाता है कि वे अमुक ठिकाने पर बम गिराएँ । कुछ विमान-चालक उनके रक्षक बनकर उनसे ऊपर उडते है, ताकि उनके काम में यदि कोई शत्रु-विमान बाधा डालने आए तो उसे निशाना बना डाले ।

इस युद्ध मे हमारे चालको ने बडा कमाल दिखाया । उन्होने राडार द्वारा पकड़े जाने की ऊँचाई से बचने के लिए कही-कही 300 फुट तक की ऊँचाई से भी बमबारी की और शत्रु के विमानों को निशाना बनाया । अभी कुछ दिन हुए अग्रिम क्षेत्रों मे स्थित हवाई अड्डो पर से उड़कर हमारे नैट विमान-चालकों ने पाकिस्तान के चार सेबर जैट विमानों के साथ लडाई की । यह हवाई युद्ध स्यालकोट क्षेत्र के चाविदा के

ऊपर हुआ। यह जगह स्यालकोट से 13 मील उत्तर-पूर्व मे है।

एक चालक ने बताया कि मैंने सरगोधा-स्थित पाकिस्तानी हवाई अड्डे तक की 90 मील से अधिक की सारी उड़ान राडार द्वारा पकड़े जाने से बचने के लिए कम ऊँचाई पर की। और जब मै केवल 300 फुट की ऊँचाई से उस पर बम गिरा रहा था, तब सरगोधा की रक्षा-व्यवस्था को मेरे आने का पता चल सका। लेकिन तब तक मे अपना काम करके (हवाई अड्डे को नुकसान पहुँचाकर) भारत-स्थित अपने अड्डे पर पहुंच गया था।

चाविंदा के ऊपर लडाई का रोचक विवरण देते हुए कमाण्डर ने बताया कि हमारे चार नैट विमान स्थल सेनाओ की सहायतार्थ भेजे गए थे। अचानक चार पाकिस्तानी सेवर जट विमानो ने उन्हे चुनौती दी। हमारे चार विमानो में से दो ने चारों पाकिस्तानी विमानो को 1500 फुट की ऊंचाई पर लडाई मे फँसा लिया और अन्य दो स्थल सेना को सहायता देने मे लगे रहे।

लडाई की यह ऊंचाई धीरे-धीरे कम होती गई और पाकिस्तानी विमानों को 300 फुट तक ले आया गया। इसके बाद पाकिस्तानियो ने यह झड़प तोड दी। इसमें दो पाकिस्तानी सेवर विमान मार गिराए गए, जबकि भारत को सिर्फ एक नैट विमान का नुकसान हुआ।

निशाने मौके पर नही पड़ते। मुझे तो उस समय बड़ी हँसी आई जब उनके एक चालक जाफरी ने, जो कि जोधपुर का ही रहनेवाला था और बटवारे के समय वहाँ चला गया था, पाक रेडियो पर शेखी मारते हुए कहा—मैने जोधपुर पर खूब जबरदस्त बमबारी की और आगे भी करूँगा। मैने जोधपुर को धूल में मिला दिया है।

सचमुच मे यह झूठिस्तान की गप्प है। जोधपुर मे इधर-उधर खेतो तथा कुछ झोपड़ियो पर बम गिराकर जाफरी साहब शेखी मारते है। ऐसे निकम्मे शेखीखोर ही वहाँ की जनता को धोखे मे रखते हैं। जाफरी का बूढा बाप जोधपुर की क्लब में मार्कर है। वह अपने इस नालायक़ बेटे को गालियाँ दे रहा है कि यहाँ का नमक खाया, यहाँ की धरती मे लोट-पोट कर बडा हुआ—अभी तक उसके बाप-दादा इसी वतन का नमक खा रहे है—कितने शर्म की बात है यहाँ से खीखसाखकर जाफरी मियाँ अब इसी जोधपुर को तहस-नहस करने की शेखी बघार रहे है ! शुक्र है खुदा का कि यह सब शेखी झूठी है।

हमारे चालकों का मुकाबला भला वे लोग क्या करेगे ! अब ये लोग इस कोशिश मे है कि चालको का ही खातमा कर दिया जाए। पर हमारे चालक इस कोशिश में रहते है कि यदि उनका विमान घायल हो जाए या उन्हे लाचारी मे पैराशूट से उतरना पडे तो वे भारतीय सीमा मे ही उतरे। इसी प्रकार की एक ताजा घटना हुई। पायलेट गुरुबख्शसिंह को शत्रु के क्षेत्र मे उडते हुए एक तोप की गोली लग गई। उसने झट से अपना जहाज भारतीय क्षेत्र की ओर उडाया और अड्डे पर उतार दिया। ज्योंही वह विमान से बाहर निकला, जयहिन्द करके धरती पर लेट गया। इस वीर ने आखिर दम तक अपना फर्ज याद रखा। अपने देश की गोद में ही चिर निद्रा मे सोया। सख्त घायल होकर भी वह अपना जहाज बचा लाया।

माँ, वैसे तो अधिकाश व्यक्ति सोच-समझ कर काम करते है, परन्तु मुसीबत के समय जो हतबुद्धि न हो, उसे शाबाशी मिलनी चाहिए। हमारे विमानचालको की सूझ-बूझ का एक और उदाहरण पेश करता हूँ। नाम अभी बताना ठीक न होगा। यह आगरे का निवासी है। हम इसका उल्लेख साहसी चालक के नाम से करेगे। अच्छा तो यह

वीर चालक अपने अन्य तीन साथियों के साथ सरगोधा हवाई अड्डे पर बमबारी करने गया। सफल बमबारी के बाद चारों चालक अपनी हद में लौट आए। तभी इस साहसी चालक के ध्यान में आया कि अभी भी मेरे पास दो बम बचे हुए है। अरे, तो क्या इन्हे नाहक ही ढोकर वापस ले जाना होगा ? यह तो अच्छा शगुन नही है। बस, अपने साथियो के विरोध से बावजूद वह लौट पड़ा। शत्रु के दो विमानचालकों की नजर उस पर पड़ गई और उन्होने उसे घेर कर अपने हवाई अड्डे पर उतरने को मजबूर किया। शत्रुओं से घिर कर वीर चालक को पछतावा भी बडा हुआ। अरे राम ! मै यह क्या कर बैठा ! जान तो जाएगी ही, पर साथ ही शत्रु के हाथ में मेरा विमान भी पड जाएगा। उसने मुडकर देखा, शत्रु के दोनों हवाई जहाज उसे दबाते चले आ रहे थे। कुछ सोचकर वह एरोड़ोम की ओर नीचे को मुडा। शत्रुओ की बाँछें खिल गई कि शिकार पकड़ लिया। पर उस साहसी चालक ने हिम्मत नहीं हारी। अभी उसका जहाज पट्टी (रनवे) पर उतरा भी नही था कि वह एकदम से ऊपर उड़ चला। शत्रु उसकी चाल नही समझ पाए। वे भी उसका पीछा करने के लिए ऊपर उड़े, पर तब तक उस साहसी वीर का विमान उनसे बहुत ऊँचे पहुँच गया था। उसने अपने दोनो बम निशाना ताक कर अपने नीचे उड़ते हुए शत्रु विमानों पर छोड़ दिए और खुद अपनी सीमा की ओर उड़ चला। उसने मुडकर देखा शत्रु के दोनो विमान चोटीले होकर कटी पतग की तरह नीचे गिर रहे थे। अपने अड्डे पर लौट कर उसने हँस कर शत्रुओं को चकमा देने की घटना सुनाई।

माँ, तुम तो वहां बड़ी घबड़ा रही होगी कि मालूम नही देश के नौनिहाल किस मुसीबत में है। पर मुझसे पूछो तो माँ, सच बात यह है कि विरोधी का शिकार करके बड़ा मजा आता है। उन्हे मजा चखाकर, चकमा देकर, उनकी व्यूह-रचना भेद कर, उनके विमानों का नाश करके हम लोगों का उत्साह बढता है। विमान तो उनके पास हमसे अधिक उच्च कोटि के हैं, पर हमारे सेनाध्यक्ष जनरल चौधरी ने ठीक ही कहा है: "युद्ध केवल मशीनें नही जिता सकतीं, उनको प्रयोग करने और उनसे शत्रु को अधिकतम क्षति पहुँचाने में मानव-मस्तिष्क ही सर्वोपरि बैठता है।"

मुझे तुम्हारी एक कहावत याद आती है, 'नाच न आवे आँगन टेढा'; यही बात पाक-सेना पर घटित होती है। पैदल टैक्स से उन्हे निशाना लगाना नही आता। सेबर जैट का वे सही इस्तेमाल नही कर सके। अन्य युद्ध-सामग्री का भी वे कुशलता से उपयोग नही कर सके, और तब अमेरिका को दोष देते है कि उन्होने हमे बेकाम, निकम्मा माल दिया था। नही तो एक-एक पाक जवान तीन-तीन भारतीय जवानो के बराबर था।

हमारे भारतीय जवानो ने डीगे तो नही मारी, पर हाँ, यह जरूर साबित कर दिया कि एक-एक जवान का हौसला पाकिस्तानी लुटेरो के दस आदमियो को पस्त कर सकता है। माँ, विजय तो सत्य और न्याय की ही होगी। भला लुटेरे भी कभी वीरो का मुकाबिला कर सकते है ? देख लो, जितने घुसपैठिए पकड़ गए है सभी इस बात का रोना रो रहे है कि हमे बन्दूक से धकेल कर, डरा कर, प्रलोभन देकर भारत मे भेजा गया है। कइयो को तो यह भी नही पता था कि उन्हे छापामारी की ट्रेनिग देकर ये लोग किधर ले जाएँगे। काश्मीर के बार्डर पर लाकर धमका-डराकर कहा गया, 'जाओ काश्मीर मे गड़बड फैलाओ, तोड-फोड करो, अगर वहाँ से यह सब करे बिना लौटे तो तुम्हे तोप से उडा दिया जाएगा।' अब भला बताओ, भाडे के टट्टू भी कभी मजिल तक पहुँच पाये है ?

माँ, हम यहाँ सब मज़े मे है। हाँ, इतना है कि सबको युद्ध में जूझने का, कुछ कर दिखाने का बुखार-सा चढ़ा हुआ है। सभी वीरो के मुँह तमतमाये रहते है। न उन्हें अपने खाने की सुध है, न आराम की, बस शत्रुओ को लाहौर के पास पहुँचा कर ही चैन आएगी।

माँ, तुम मेरे कुत्ते शेरे को मेरा प्यार देना। तुमने लिखा है कि वह मेरा पत्र सूँघ कर ऊपर को मुँह उठाकर रोता है, इससे तुम्हे चिढ लगती है। माँ, वह रोता नहीं हैं; वह यह जताता है कि गन्ध से उसने यह पहचान लिया है कि चिट्ठी उसके मालिक के पास से आई है। उसे भी तो मेरी याद आती होगी। माँ, कुत्ते बडे वफादार होते हैं। वे मालिक का रुख पहचान लेते है। यहाँ पास के एक गाँव में एक कुत्ते ने अपने

मालिक को मौके पर खेतों की ओर चलने को बाध्य किया। उस खेत में आठ घुसपैठिए छिपे हुए थे। बस, पकड़ लिए गए। उस दिन से तो उस कुत्ते की कदर बढ़ गई। गाँव के लोग जब घोड़ियों पर या झुंड बनाकर पैदल छिपे हुए घुसपैठियों की खोज में जाते तो उस कुत्ते को जरूर साथ ले जाते है और वह आगे-आगे सूंघता हुआ चलता है। इस कुत्ते की सहायता से 25 घुसपैठिए पकड़े जा चुके है।

अच्छा माँ, अब जरा सुस्ता लूँ। घर पर सबको यथायोग्य कहना।

सादर, आपका बेटा

जे० के०
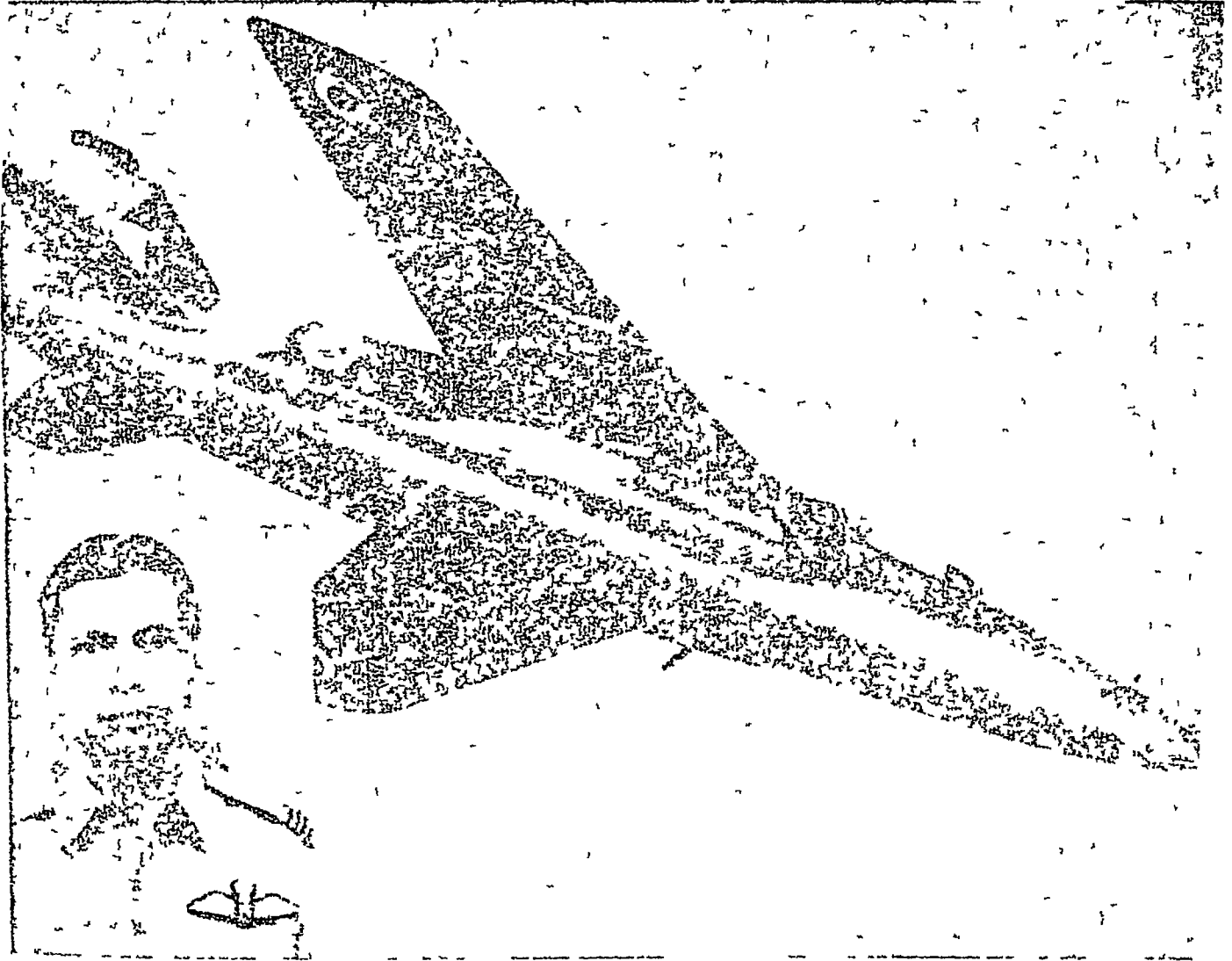
स्क्वाड्रन-लीडर ट्रेवर कीलर और उनका नैट विमान,
जिन्होने वायुसेना के लिए हाथ मे गोली खाई
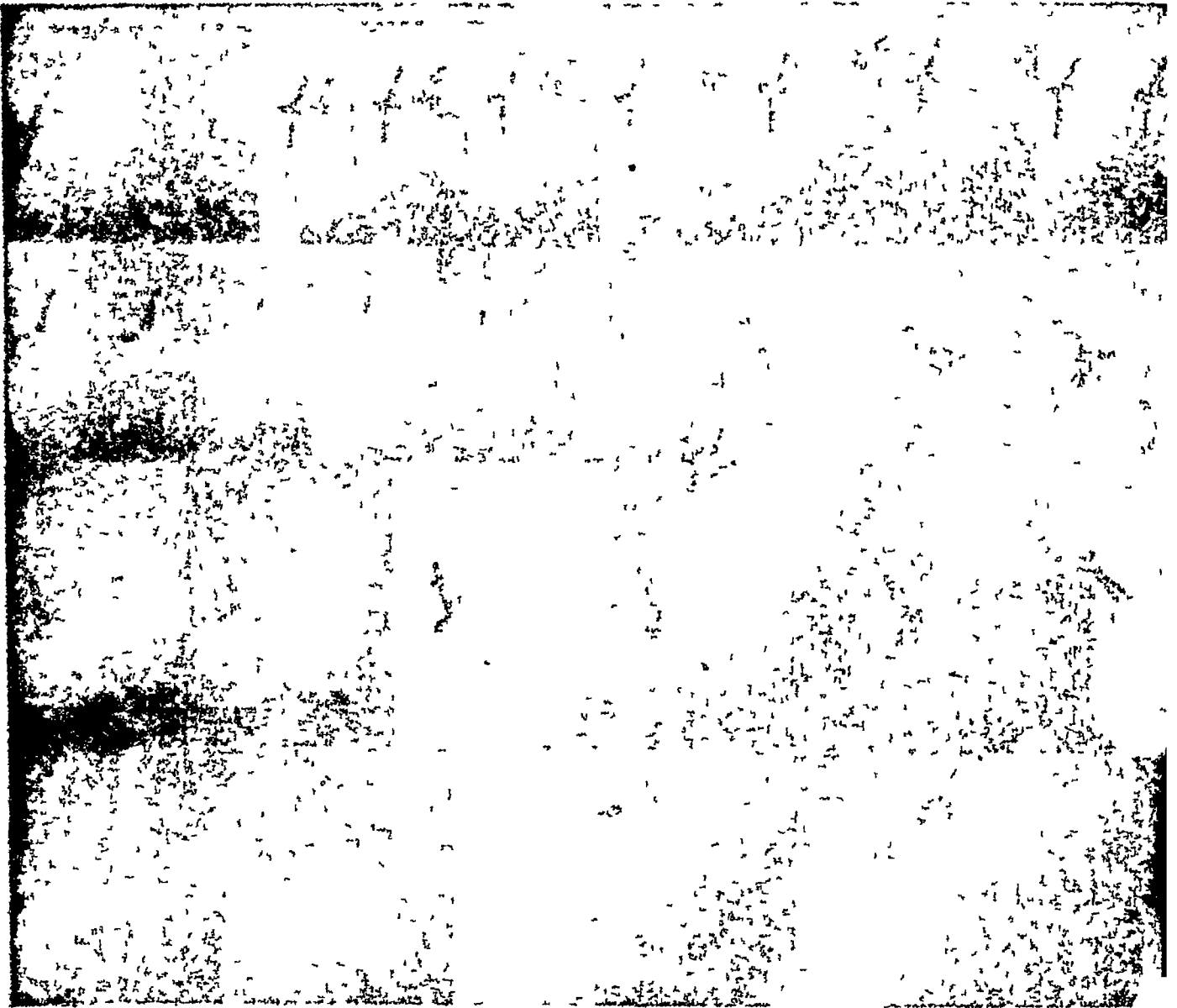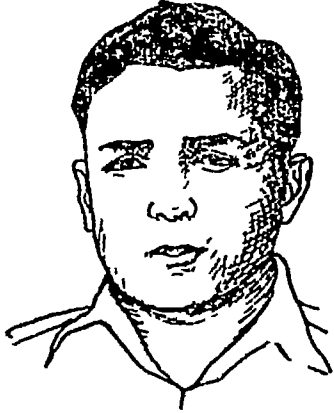
विंग कमाण्डर
भरतसिंह

फ्लाइट लेफ्टिनेण्ट
वी कपिल

स्क्वाड्रन-लीडर
पी गौतम

फ्लाइट लेफ्टिनेण्ट
ए टी कुक

फ्लाइंग अफसर
पी. पिंगले
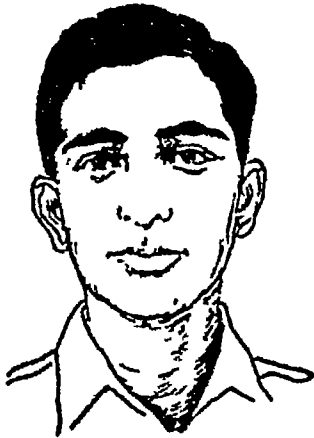
फ्लाइट लेफ्टिनेण्ट
ए के. मजुमदार

फ्लाइट लेफ्टिनेण्ट
डी एस. पठानिया
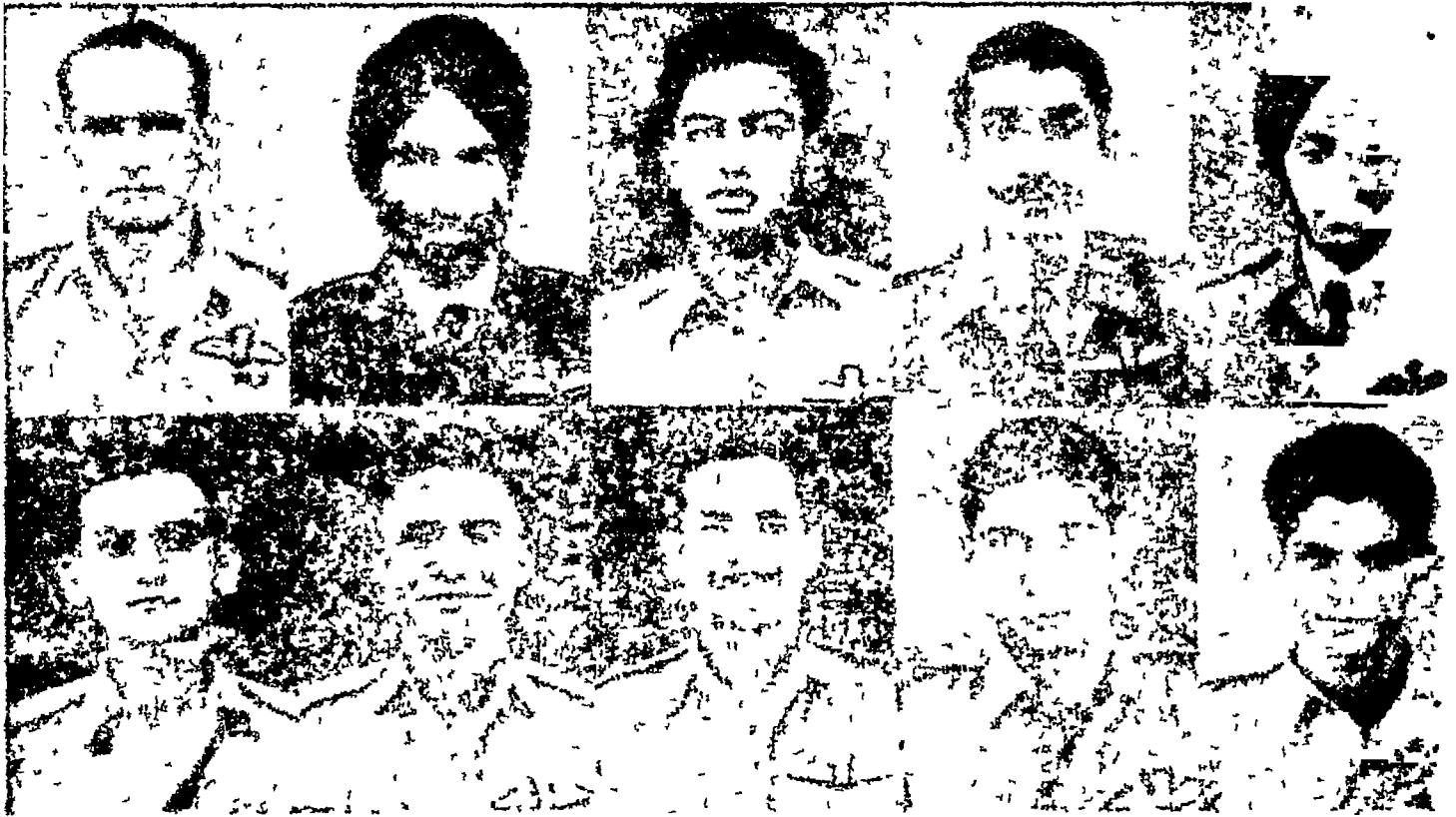
ऊपर की पंक्ति : (बायें से दायें) विंग कमांडर डब्लू. एम. गुडमैन, कमा. पी. पी. सिंह, (दोनों को महावीर-चक्र)। स्क्वा. लीडर एम. एस. जाटार, स्क्वा. लीडर एस. हांडा और फ्लाइट ले. त्रिलोचन सिंह (सबको वीर-चक्र)। नीचे की पंक्ति : फ्ला. ले. डी. राठौर, फ्ला. ले. ए. टी. कुक, फ्ला. आफिसर एम. सी. ममगैन, फ्ला. आ. ए. आर. गांधी और फ्ला. आ. सी. के. नेव (सबको वीर चक्र)।
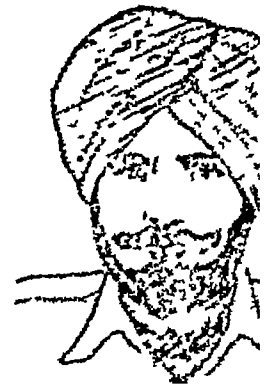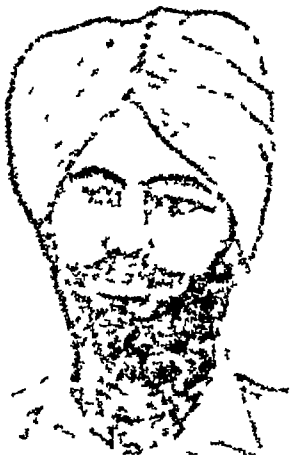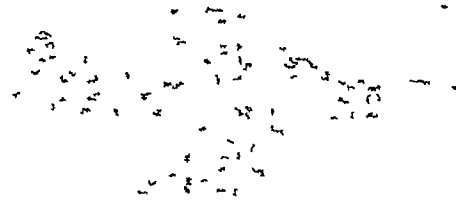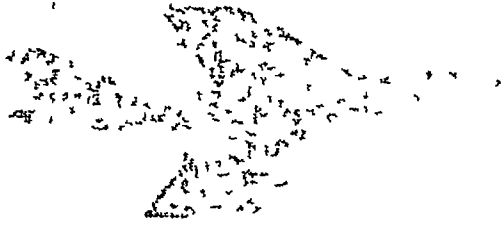
11 युद्ध के मोर्चे से—
एक पायलेट बेटे का पत्र

प्यारी माँ,

जयहिन्द !

लाहौर और कसूर क्षेत्र मे लडाई पूरे जोर पर है । हमारे विमान-चालकों के हौसले बुलन्द है । आज शाम लाहौर-कसूर क्षेत्र मे एक हवाई लड़ाई में भारतीय वायु-सेना के नैट विमान ने एक और पाकिस्तानी एफ-86 सेवर जैट को मार गिराया ।

उस क्षेत्र मे 2 वजे दोपहर के वाद 6 पाकिस्तानी सेवर जैट आते दिखाई दिए । जैसे ही वे दिखाई दिए, 4 नैट विमानो को उनका सामना करने के लिए भेजा गया । 3 नैट विमानो ने 5 पाकिस्तानी सेबर विमानो को उलझाए रखा और छठा थोड़ी देर मे भाग निकला। एक नैट विमान एक सेबर विमान से 26 हजार फुट की ऊँचाई के पीछे हवाई लड़ाई लड़ता रहा । वडा कौशल दिखाते हुए नैट विमान सेवर विमान के पीछे होने मे सफल हो गया और लगातार उसके नजदीक आता रहा । जव वह धरातल से 500 फुट की ऊँचाई पर आ गया तो उसने अन्तिम मार मारी और सेवर जैट को

ध्वस्त कर दिया और तथा वह जमीन पर गिर पड़ा।

वायुसेना द्वारा हवाई लडाइयों में ही नष्ट किया जानेवाल यह 29वॉ पाकिस्तानी सेबर जैट विमान था। भारतीय वायुसेना के जिस चालक ने आज इस सेवर को मार गिराया, उसका नाम स्क्वा० लीडर ए० जे० एस० सांधू है। यह 32 वर्ष के है और इन्होंने 11 वर्ष पूर्व भारतीय वायुसेना में प्रवेश किया था।

मॉं, हलवाड़ा हवाई अड्डे शत्रु खार खाए बैठे है। मेरी ही तरह और मॉओ के लाल भी वहीं पर है। सबका राखा साईं है। फिर तुम लोगों की दुआएँ भी तो हमारी रक्षा-कवच वनी हुई है। तुमने लिखा है कि भारतीय विमान-चालको की सफलता का समाचार तुम्हे प्रफुल्लित कर देता है। उस दिन तुम्हे ऐसा लगता है मानो सेर खून वढ़ गया। अच्छा तो मॉं, आज दो अन्य वहादुर चालको के कारनामो का समाचार तुम्हें देता हूँ। तुम जानो हवाई युद्ध का फैसला कुछ ही मिनटो में हो जाता है। हमारे वहादुर चालको ने दस मिनट के अन्दर ही शत्रु के चार सेबर जैटो को घेर लिया। एक सेवर को तो हमारी तोपो ने ही धराशायी कर लिया। शेष तीन का शिकार हमारे दो पायलेटों ने बडी शान और विश्वास के साथ किया।

फ्ला० ले० डी० एन० राठौर तथा उनके सहयोगी फ्लाइंग आफिसर वी० के० नेब को गत सप्ताह हलवाडा हवाई अड्डे की गश्त पर तैनात किया गया था। सध्या के धूमिल प्रकाश मे राठौर को, जो हवाई अड्डे से लगभग तीन मील दूर थे, हवाई अड्डे के पास कुछ चमकीली चीज दिखाई दी। गौर से देखने पर वह समझ गए कि हवाई अड्डे पर पाकिस्तानी सेबर जैट विमानों ने हमला किया है और फ्लाइंग आफिसर गाधी के नेतृत्व मे हमारे दो हण्टर विमानों की उनमें जमकर लड़ाई हो रही है। हमारे हण्टर विमान भी गश्त लगा रहे थे।

राठौर ने नेब को सचेत किया और वह हवाई अड्डे की ओर मुड़ पडे। लेकिन पहली मुठभेड़ में हमारी तोपो ने ही जमीन से वार करके एक सेवर को मार गिराया था और दूसरा सेवर जैट फ्ला० आफिसर गाधी की गोली का शिकार हो चुका था। इसमें शत्रु का हमला बेकाम हो गया।

बाकी दो सेबर जैट बहुत नीचे जाकर हवाई अड्डे पर गोलियाँ चला रहे थे और बम गिरा रहे थे। उन पर घात लगाना कठिन नही था क्योकि उनका ध्यान जमीन पर वार करने में लगा हुआ था। अपनी दायी ओर के सेबर के पीछे जाकर राठौर उसके पास 100 गज तक चले गए। और साथ ही अपने साथी नेव से उन्होंने कहा कि बायी ओर से सेबर पर निगाह रखे। अपने शिकार का तेजी से पीछा करते हुए राठौर उसके समीप 650 गज की दूरी तक चले गए और अपना पहला वार किया। निशाना ठीक लगा। पाकिस्तानी सेबर अपनी चौकडी भूल गया। तब उसके और पास आकर 500 गज की दूरी से राठौर ने दूसरा वार किया। इस वार सेबर जैट की जान निकल गई। वह बाई ओर झुककर हवाई अड्डे से 5-6 मील दूर चारों खाने चित्त जमीन पर जा गिरा और आग की लपटो मे स्वाहा हो गया।

इस बीच नेव चौथे बचे सेबर जैट के पीछे आ गए थे। पाकिस्तान का यह विमान भी बेखबर होकर बम गिराने मे लगा था। यहाँ यह बात बता देना जरूरी है कि नेव अभी नौसिखिए है। अपने विमान को पाकिस्तानी सेबर के 400 गज दूर तक लाकर उन्होने गोली चलाई।

पाकिस्तानी चालक ने तुरन्त हमला बन्द करके आसमान मे चढना शुरू कर दिया। नेव को नौसिखिया होने के कारण अपने पहले वार पर पूरा भरोसा नही था। इस-लिए वह अपने विमान को ऊपर उठाते हुए सेबर के 100 गज दूर तक ले आये और दूसरी बार अचूक निशाना लगाया। सेबर जैट का बायाँ डैना खील-खील हो गया। पहले उसमे से धुआँ फिर आग की तीव्र लपटे निकलने लगी और यह चौथा और अन्तिम पाकिस्तानी 'पछी' भी खण्ड-खण्ड होकर जमीन पर गिर पडा।

इस प्रकार पाकिस्तान के ये चार सेबर जैट विमान, जो हलवाडा पर हमला करने आए थे, 10 मिनट के अन्दर ही अन्दर धराशायी कर दिए गए।

हाँ माँ, फ्लाइग आफिसर प्रेम (रामचन्द दानी) की असमय मृत्यु का बडा ही दुख है। अभी तो वह 24 वर्ष का भी नही था। उसे पायलेट बनने का बड़ा शौक था। ता० 22 अक्तूबर को वह अपने स्क्वाड्रन के अन्य पायलेटो के साथ शत्रु-क्षेत्र पर

बम गिराने गया था। जब वे लोग बम गिराकर लौट रहे थे, प्रेम को शत्रु का कोई हवाई जहाज नजर आया, वह जाँच करने के लिए उधर मुड़ा। इससे पहले वह शत्रु के देश पर 11 उड़ानें भर चुका था, इस कारण उसमे आत्मविश्वास और निडरता थी। इतने मे उसके जहाज पर शत्रु को एण्टीएयरक्राफ्ट गन ने गोली दागी। उसके पेट में मानो बर्छी-सी कोई तेज चीज लगी। प्रेम ने जल्दी से अपना जहाज अपने अड्डे की तरफ मोड़ा और फिर पेराशूट से कूद पडा। उसे हमारी सीमा के लोगो ने उठाया और तुरन्त सैनिक अस्पताल ले गए। वहाँ उसका आपरेशन किया गया। प्रेम चार दिन तक मृत्यु और जीवन के बीच संघर्ष करता रहा। आपरेशन तो सफल रहा था, पर प्रेम के जीवन-दीप का तेल ही चुक गया था और भारत का एक होनहार पायलेट चल बसा। प्रेम का छोटा भाई राजन है। दोनों मे बड़ा प्रेम था। राजन अपने भाई को पूजता था। बड़ी मुश्कलो से प्रेम माँ को राजी कर पाया था कि वह उसे एयर फोर्स में सहर्ष जाने की इजाजत दे।

तुम्हारा कहना भी ठीक है कि पाले-पोसे बेटों का इस प्रकार अचानक मर जाना माँ-बाप को तोड़कर रख देता है। उनका बुढापा बिगड़ जाता है। उनके अरमान अधूरे रह जाते है। जीवन-भर यह कसक नही मिटती। पर सोचो माँ, आजादी हर कीमत पर सस्ती है। इस अमूल्य चीज के लिए कुर्बानी भी तो अमूल्य निधि की ही देनी पड़ती है। माँ, पत्नी और बहनो से राष्ट्र इसी कुर्बानी की आशा करता है। आज देश पर ऐसे वीरों की टोलियाँ ही सहर्ष कुर्बान होने के लिए सीना तानकर आगे बढ़ आई है। स्वतन्त्रता देवी पर ये अर्द्ध-विकसित फूल ही तो न्यौछावर होगे। पर माँ, इस बात का विश्वास रखो कि शहीदो का खून कभी व्यर्थ नही जाता।

सेना मे वे ही युवक सफल होते है जो कि स्वस्थ, चतुर, सूझ-बूझ में बेमिसाल तथा निडर होते है। यह गौरव की बात है कि हमारे देश मे ऐसे नौनिहालों का अभाव नही। विशेषकर पंजाब, रोहतक, गढ़वाल, नेपाल आदि के नवयुवक दुनिया भर में अपनी रणकुशलता और बहादुरी के लिए श्रेष्ठ माने जाते है।

माँ, हमारी सेना मे इतना उत्साह है कि जो लोग पीछे की पंक्ति में हैं, वे आगे

आने के लिए तड़प रहे है। जो आगे खन्दको मे लड़ रहे है वे आमने-सामने शत्रु से दो-दो हाथ करने के लिए उतावले हो रहे है। जो टैको मे बैठे है वे खड़े हो-होकर अपने साथियो को आगे बढते रहने के लिए प्रोत्साहन दे रहे है। जूनियर और सीनियर मे कोई भेद नही है। कन्धे से कन्धा भिडाकर सब आगे बढ रहे है। सबका एक उद्देश्य है—शत्रु को मात देना। हमारे हवाई चालक व्यूह रचकर शत्रु को ऐसा घेरते है कि उसके बच निकलने को कोई उम्मीद नही रहती। इस युद्ध मे वायु-सेना और स्थल-सेना का परस्पर सहयोग हमारी विजय का एक विशेष कारण है।

अच्छा, माँ, कई दिनो बाद यह पत्र लिख रहा हूँ। तुम जानो, एक दिन मे पत्र पूरा करने का अवकाश ही नही मिलता। संकेत पाते ही फौरन हवाई जहाज लेकर उड जाना पडता है। खैर, अबकी बार पूरे हफ्ते का समाचार तुम्हे दे दिया है।

घर मे सबको यथायोग्य कहना।

सादर—

आपका बेटा,

जे० के०
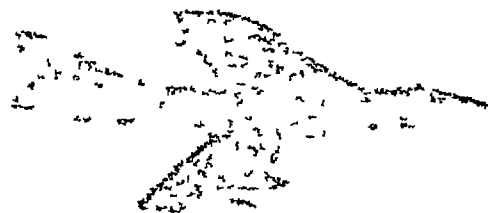
12 युद्ध के मोर्चे से—
एक पायलेट बेटे का पत्र

मेरी प्यारी मा,

जयहिन्द !

तुम्हारे दोनो पत्र आज मिले ! कई दिन से लगातार उडान पर गया हुआ था, इस कारण पत्र नही लिख सका। तुमने शायद सुना होगा कि हमारे विमान-चालकों की सफलता की एयरमार्शल अर्जुनसिह ने इन शब्दों मे दाद दी है—"हमारे विमान-चालकों और नेवीगेटरों ने युद्ध मे बडी वीरता दिखाई है। हमारे मैकेनिको ने बहुत अच्छा काम किया है, परन्तु मै इस समय यही कह सकता हूँ कि आगे हमे कठिन संघर्ष का सामना करना है और हमे अपना काम पूरा करने के लिए और भी अधिक त्याग की आवश्यकता होगी।"

उन्होंने यह बात भी स्पष्ट कर दी कि भारतीय सेना हवाई हमले मे पहल नहीं करना चाहती थी। पर छम्ब क्षेत्र मे पाकिस्तान ने हमारी सप्लाई लाइन काटने के लिए भारी टैंकों और तोपो के साथ हमला किया, इसलिए आत्म-रक्षा के हेतु हमारे

लिए हवाई जहाजों का उपयोग करना जरूरी हो गया। पाकिस्तान ने हमारे हवाई अड्डों पर हमला करके लडाई को बढ़ाया, फिर हमे भी जवावी हमला करना पडा। प्रत्येक क्षेत्र मे हमारी हवाई सेना सफल रही।

माँ, हमारे विमान-चालक शत्रु के सेबर जैट चालको को खदेड कर मारते है। पिछले दिनो हवाई अड्डे पर हमारे चालको तथा तोपचियो ने दस मिनट के अन्दर शत्रु के चार सेबर जैट गिराए। घटना इस प्रकार है—

विमान-चालक फ्लाइग अफसर ए० आर० गाधी को अड्डे पर उतरे हुए हवाई जहाजो की रक्षा का काम सौपा गया था। क्योकि शत्रु के सेबर जैट हमारे हवाई अड्डो और वहाँ पर रखे हुए विमानों को नष्ट करने के लिए अक्सर उड़ानें भरते रहते थे। विमान-चालक गाधी ऊपर गश्त कर रहे थे कि इतने मे शत्रु के चार लडाकू विमान घर्र-घर्र करते हुए अड्डे पर आ पहुँचे। फ्लाइग अफसर गाधी ने हमें वताया कि 'हमारे रक्षक विमान अभी आकाश मे ही थे कि पाकिस्तानी वायुसेना के चार सेवर जैट विमानो ने हम पर हमला कर दिया। दो सेबर हमारे पीछे लग गए। शत्रु के वाकी दो विमानो ने हवाई अड्डे पर हमला करने का प्रयत्न किया। हवाई अड्डे परहमला करने का उनका प्रयत्न विफल कर दिया गया। पर हड़बडी मे अपना गोला-वारूद फेककर उन्होने यहाँ से जब भागने का प्रयत्न किया, तो हमारे दो अन्य विमानो ने उन्हे नीचे गिरा दिया।

इस वीच मै और हमारा नेता अपने पीछे लगे शेप दो सेवर जैट विमानो से लडने लगे।

मै उनमे से एक हमलावर विमान के पीछे लग गया। उस विमान ने अपना पिछला भाग मुझसे दूर हटाने के लिए बहुत पैतरे वदले, पर मैने उसका पीछा नही छोड़ा। अचानक उपयुक्त रेंज मे आ जाने पर मैने वटन दवाकर उस विमान पर सीधी चोट की। मैने देखा कि विमान तत्काल नीचे पृथ्वी पर गिर पडा और आग की लपटो मे ध्वस्त हो गया। चौथे सेवर जैट विमान ने मेरे विमान के एक पख पर चोट की। इससे मेरे विमान का सन्तुलन विगड़ गया। मै अपने विमान से कूद पड़ा। वाद मे

मुझे पता चला कि शत्रु का वह विमान भी निकलकर भाग नहीं सका। उसे हमारी विमानभेदी तोपों ने निशाना बनाया और इस तरह हमारे अड्डे पर आक्रमण के लिए आए हुए चारों सेबरजैट विमान धराशायी कर दिए गए।

मा, जिस दिन युद्ध में हमे ऐसी सफलता मिल जाती है, मन गद्गद हो जाता है। आज गांधी की तो बाँछें खिली हुई है। उसे वीरचक्र से पुरस्कृत किया गया। वीर प्राण हथेली पर रखकर लड़ता है, पर जब वह शत्रु को मात दे देता है तो आगे बढ़कर उसे उससे भी दुगने खतरे का सामना करने मे डर नही लगता। खतरे के मैदान में बहादुरों का हौसला बुलद हो जाता है, फिर जनता भी तो ऐसे वीरों का जय-जयकार करके दुगना हौसला बढ़ाती है। इस युद्ध मे न केवल चालको ने, अपितु विमान-भेदी तोप के तोपचियों ने भी बड़ा कमाल दिखाया। अमृतसर के तोपची से वहाँ की जनता इतनी प्रसन्न हुई कि उन्होने उसके लिए लाख से ऊपर रुपया इकट्ठा किया। उसके कारण शत्रु हमारे नगर को तहस-नहस नही कर सका। इस बात के लिए उन्हे राजू की अचूक निशानेबाजी पर बहुत गौरव है। इसी प्रकार का सम्मान जम्मू के तोपचियों को भी प्राप्त हुआ है। उसे वीरचक्र से पुरस्कृत किया गया है।

जम्मू शहर मे जो विमानभेदी तोपे लगाई गई है उन्हें चलाने वाले तोपचियों की अचूक निशानेबाजी तथा चौबीसो घण्टों की निगरानी से प्रसन्न होकर शहर के लोगों ने उनके लिए कोष इकट्ठा किया है तथा उनको मिठाइयाँ तथा अन्य उपहार दिए है।

ये जवान अब तक दुश्मन के चार सेबर जैट विमान गिरा चुके है। इनकी चौकसी तथा निशानेबाजी की दहशत से पाकिस्तानी जैट विमानो मे शहर पर हमला करने की हिम्मत नहीं रह गई है और अब वे देहातों पर बमबारी कर रहे है। इस बमबारी से निर्दोष औरते और बच्चे तो मरे ही है, रणबीरसिहपुरा का गुरुद्वारा और मीरन साहब के पीर के घर जैसे धर्म-स्थान भी नष्ट हुए है।

अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा जम्मू क्षेत्र दुश्मन की बमबारी से ज्यादा सुरक्षित रहा है। जम्मू के लोगों को इन जवानों पर इतना भरोसा है कि हाल के हवाई हमले के समय छिपने के बदले जम्मू-निवासी सड़कों पर यह देखने निकल आए कि आज दुश्मन

के कितने विमान मार गिराए गए ।

माँ, तुमने पूछा है कि यदि विमान-चालक के जहाज मे गोली लग जाती है तो वह पैराशूट (छतरी) से कैसे नीचे कूदता है ? क्या वह इतनी ऊँचाई से कूदते समय गिर तो नही जाता ? नही माँ, पैराशूट से उतरने का विमान-चालको तथा पदाति सेना को भी अभ्यास कराया जाता है । मैने तुम्हे बताया था कि जैट हवाई जहाज तथा नैट मे भी चालक की सीट विशेष प्रकार की होती है । बटन दबाते ही छत खुल जाती है और पैराशूट समेत चालक ऊपर उछल जाता है । आधुनिक पैराशूट नाइलौन के बनाए जाते है। इसकी बनावट एक छाते की तरह होती है, पर आकार मे यह बहुत बडा होता है । खुलने पर इसका व्यास 16 से 20 फुट तक का हो जाता है। जब चालक कूदता है तो कुछ दूर तक तो तेजी से गिरता है, फिर कुछ सेकिण्ड बाद ही वह रस्सियो पर लगे एक यन्त्र को खीचता है। इससे पैराशूट खुल जाता है। खुलते ही इसमे हवा भर जाती है । पैराशूट पूरा खुलकर फैल जाता है । पूरा खुलने पर छाताधारी 20 फुट प्रति सैकिड की गति से नीचे को गिरने लगता है। छाताधारी अपने पैराशूट की रस्सियो को खीच-कर जिस दिशा मे चाहे ले जा सकता है। हाँ, यदि हवा तेज बहती हो, तो नियन्त्रण रखना जरा कठिन हो जाता है । जब छाताधारी जमीन पर पहुँचता है तो उसे थोड़ा धक्का लगता है । इस धक्के का दबाव कम करने के लिए वह तुरन्त जमीन पर लेट सा जाता है। इसके बाद वह पैराशूट से तुरन्त अपने को अलग करके सुरक्षित स्थान मे पहुँचने की चेष्टा करता है ।

पैराशूट के सहारे सैनिक भी दुश्मन के देश मे उतारे जाते है। जैसे कि पाकिस्तान ने हमारे देश मे उतारे थे। विश्व मे प्रथम बार 1927 मे रूसियो ने अपने शत्रु देश मे छाताधारी सैनिक उतारे थे। इसके बाद 1940 मे जर्मनो ने इस विचार को अपनाया और नीदरलैड, नार्वे तथा बैल्जियम मे उसने बहुत से छाताधारी सैनिक उतारे। इन छाताधारियो को इन देशों मे बडी सफलताएँ मिली। द्वितीय विश्वयुद्ध मे भी मित्र राष्ट्रो ने सफलतापूर्वक छाताधारियों का प्रयोग किया ।

माँ, लाचारी मे ही विमानचालक अपना विमान छोडकर पैराशूट से उतरता है।

क्योंकि जैसा किसी घुड़सवार को अपने घोड़े से प्यार और उस पर नाज होता है इसी प्रकार विमानचालक को अपना विमान प्यारा होता है, मजबूरी मे ही वह उसे छोड़कर पैराशूट से उतरता है। यदि विमान जल रहा है तो उसमें रहना घातक है। इससे तो देश का दुगना नुकसान होता है कि विमान भी गया और चालक भी। कभी-कभी ऐसा भी हो जाता है कि मशीनरी की खराबी, अथवा उतरते समय 'कैरिज वील' के अन्दर जमे रहने से भी विमान में आग लग जाती है। ऐसी अवस्था में समझदार चालक हिम्मत नही हारता। वह सूझबूझ से काम लेता है। और इस बात की चेष्टा करता है कि विमान को नीचे उतार ले और कम-से-कम इंजिन को बचा ले। अगर यह सम्भव नही होता तो वह जहाज को इतनी ऊँचाई पर ले जाता है कि वहाँ से पैराशूट लेकर कूद सके और ऐसा करने से पहले वह कण्ट्रोल-रूम को खबर कर देता है।

याद है माँ, कुछ बरस पहले जब मैं पालम पर था मेरे एक उडान मे, हवाई जहाज के इंजन में कुछ खराबी आ गई थी। उस समय मैं पानीपत के ऊपर उड़ रहा था। नीचे गेहूँ की पकी फसल खेतो मे लहलहा रही थी। जहाज छोडकर उतरने का मतलब था कि जहाँ भी जहाज गिरता, आग लग जाती। मैंने कण्ट्रोल रूम को खबर की कि मैं जहाज को ग्लाइड करता हुआ लाने की चेष्टा कर रहा हूँ। इसलिए जहाज को ऊपर ले जाकर मैं नीचे को ग्लाइड करता हुआ पालम हवाई अड्डे पर पहुँचा। किस्मत ने मेरा साथ दिया और जहाज को सही-सलामत उतारने मे मुझे सफलता मिली। शाम को जब तुम आफिस से लौटी तो मौसीजी ने तुम्हे इस घटना के विषय में बताया था और तुम कैसी सन्न रह गई थी। अगर उस समय मैं तुम्हे बाँहों में न थाम लेता तो तुम डगमगा गई थी।

माँ, विश्वास रखना इन्सान की मौत का दिन निश्चित है। उससे पहले उसे कोई नहीं मिटा सकता। बहादुर दुनिया मे एक ही बार मरते हैं, पर कायर दिन में कई बार। भारत-भू वीरों की भूमि है। हम मात कभी नही खायेंगे, पर हाँ हमें अपनी स्वाधीनता का मूल्य तो चुकाना ही होगा। सीमा पर जो नवयुवक मृत्यु का आलिंगन कर रहे हैं, उनकी माताएँ धन्य हैं। उन्होंने देश को एक ऐसी चीज़ दी जिस पर देश को गौरव
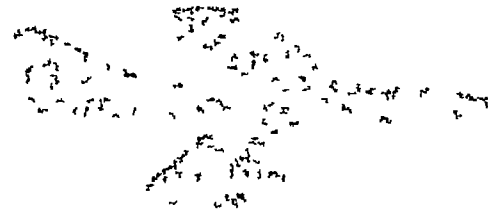
13 युद्ध के मोर्चे से—एक पायलेट बेटे का पत्र

प्यारी माँ,

जयहिंद !

युद्ध जोरों पर चालू है, हमारी अपेक्षा तुम्हें जल्दी ही ताजी खबरें मिलती होंगी। क्योंकि युद्ध-मोर्चे पर रेडियो सुनने का भी समय नही मिलता। युद्ध समाप्त होने के बाद बहुत-सी ऐसी घटनाओ का पता चलेगा जिन्हे हमारे खोए हुए वीर आकर सुनायेंगे, क्योंकि युद्ध मे कई जवान अपनी यूनिटो से बिछुडकर शत्रु से घिर जाने के बाद बच निकलने की कोशिश में रहते है। ऐसी परिस्थिति मे कइयों को बड़ा कटु अनुभव होता है। स्थल सेना के जवानो को ऐसे अनुभव अधिक होते हैं—पर विमान-चालक भी उनमे अछूते नही रहे। हमारे एक फ्लाइंग आफिसर चिनाई के संग भी कुछ ऐसी ही घटी। वह शत्रु के देश में विमान से कूद कर देश लौटे है। उनका रोमांचकारी वर्णन उनके शब्दों में ही बताता हूँ :

"[illegible] सितम्बर, 1965 मेरे जीवन का सदा अविस्मरणीय दिन रहेगा। पाकिस्तान

पर दिन मै बम-वर्षा करने के लिए अपना मिस्टियर विमान लेकर उड़ा था। इसी मिशन पर मेरे साथ दो विमान और थे। हम अपने लक्ष्य स्थल पर पहुँच गए। लक्ष्य की अच्छी तरह जॉच और निरीक्षण करने के लिए हमने अपने विमानो को 50 फुट नीचे लाकर उसका चक्कर लगाया। तभी शत्रु की विमानभेदी तोपे गरज उठी। मैने सहसा अनुभव किया कि मेरा विमान झकझोर उठा है। मुझे थप्प की आवाज भी आई और मै समझ गया कि मेरे विमान को गोली लग गई है।

"इस बारे मे मुझे जो थोडा-बहुत सन्देह था वह तब पूरी तरह दूर हो गया जब चालक-कक्ष धुँए से भर गया और पार्श्व मे स्थित आग लगने की सूचना देने वाला सकेत भी चमक उठा। मै एकदम अपने विमान को ऊँचाई पर ले गया और अपने नायक को रेडियो टेलीफोन से सूचना दी कि मेरे विमान को गोली लग गई है और वह जल रहा है। इस सूचना के साथ ही मैने अपने विमान को उत्तर की ओर मोड दिया। मेरे नायक ने मुझे पूर्व की ओर जाने का और शत्रु के क्षेत्र से निकल आने का आदेश दिया। विमान का पावर जनरेटर बन्द हो गया, रेडियो टेलिफोन ने भी काम करना बन्द कर दिया और इस प्रकार मेरा बाहरी दुनिया से सम्पर्क टूट गया।

"गहरे धुएँ के बादलो के कारण न तो मुझे बाहर कुछ दिखाई दे रहा था, न अपने विमान के उपकरण ही। मेरी आँखो मे जलन मचने लगी और साँस लेने मे भी कठिनाई होने लगी। मै समझ गया कि विमान मे बैठे रहना बेकार है तथा मुझे कूद पडना चाहिए। मैने छत खोल दी और चालक कक्ष से धुँआ बाहर निकल गया। मैने ऊँचाई नापने के यन्त्र मे देखा मेरा विमान 3.000 फुट की ऊँचाई पर था तथा गति लगभग बन्द हो गई थी। ऐसी स्थिति मे एक गहरे विश्वास के साथ मैं विमान से, जो कुछ ही देर में मलबे का ढेर होने वाला था, कूद पडा। परन्तु इसके लिए उपयुक्त समय नही था, क्योंकि मै नीचे उतर रहा था। तब मुझे भारी तोपो के गरजने और छोटे हथियारो की ठायँ-ठायँ सुनाई दे रही थी और मुझे निशाना बनाकर भी गोलियाँ छोड़ी गई। छतरी से मुझे कुछ सुरक्षा प्राप्त थी परन्तु इससे मैं एक निस्सहाय निशाना भी बन रहा था। मै जमीन पर सुरक्षित पहुँचने की मनौती मना रहा था।

"जमीन पर पहुँचते ही मैंने अपनी छतरी उतार दी और मेरे चारो ओर जो बडी-बड़ी घास खडी थी उसमे छिप गया। घास के बीच मे ही आगे-आगे रेंगता हुआ चला। जहाँ घास नही होती थी वहाँ दौडने लगता था। अस्त होता हुआ सूर्य मेरा पथ-प्रदर्शक था। मैं उत्तर की ओर बढ रहा था। धीमे-धीमे तोपो की आवाज मद होने लगी और यह सोचकर कि मैं युद्ध-क्षेत्र से दूर हट आया हूँ, मैंने कुछ देर विश्राम किया। अपने सिगरेट-लाइटर मे, जो मेरे पास था, मैंने अपने समस्त गुप्त कागज-पत्र जला डाले। केवल मैंने अपना नक्शा अपने पास रखा जिससे शत्रु के क्षेत्र से बाहर निकल सकूँ। जब मैं अपने कागज जला रहा था, मैंने बन्दूक चलने की आवाज सुनी, जो बहुत पास से आ रही थी। मेरे लिए इस स्थान से जल्दी भाग जाना जरूरी हो गया। मुझे नही मालूम था कि मेरी इस छोटी-सी आग को शत्रु ने देख लिया है और वह मेरी ओर बढ रहा है।

"मैं फिर भागा और मैंने अपनी यूनिफार्म और अन्य सामान भी हलका होकर भागने के विचार से छोड दिए। कभी दौडते और कभी चलते हुए तथा बड़ी घास में छिपते-छिपते मैं एक गाँव के निकट पहुँचा। इसके पास ही एक निर्मित स्थान था जिसके चारों ओर रेत के बोरे थे। इस क्षेत्र से मैंने जहर की तरह दूर ही रहना ठीक समझा।

"परन्तु मेरा संकट अभी दूर नही हुआ था। एक घण्टे तक दौडने और चलने के बाद मैंने एक ग्रामीण को देखा जो मेरे बहुत ही निकट आ गया था। वह इतना निकट था कि एक क्षण के लिए मेरे होश-हवास उड़ गए। मैंने उसे देख लिया था, परन्तु उसे मेरी उपस्थिति का जरा-सा भी आभास नही हुआ। मैंने ऊँची घास मे बैठ कर अपने को छिपाने की कोशिश की। दिन के उजाले मे इस घास में छिपना निरापद नही था। परन्तु मेरे लिए और कोई चारा नही था। मैं ग्रामीण के सामने आने का खतरा मोल नहीं ले सकता था, क्योंकि इसका अर्थ होता गिरफ्तारी और शत्रु के हाथ में पड़ना। मैं दम साधे प्रतीक्षा करता रहा। जब ग्रामीण मेरे पास से आगे निकल गया तब मैंने सन्तोष की साँस ली। इस घटना से मैं यह समझ गया कि मुझे दिन के प्रकाश में आगे

बढने का खतरा नही उठाना चाहिए और मैं सूर्यास्त की प्रतीक्षा करने लगा।

"धीरे-धीरे आकाश से उतरती हुई रात की कालिमा ने पृथ्वी को ढक लिया। मैंने भी अपने हाथों और मुँह पर कीचड लपेट लिया और मेरे पास जो भी चमकने वाली वस्तुएँ थी जिनसे प्रकाश प्रतिक्षिप्त हो सकता था, उतार डाली। कुछ देर बाद आकाश मे चन्द्रमा निकल आया। इसे लक्ष्य बनाकर मै आगे बढने लगा क्योकि मैं जानता था उधर ही पूर्व दिशा है। मै 5 घण्टे तक दौड़ता और चलता रहा और गाँवो, सभी मानव प्राणियो और विशेष कर कुत्तो से बचता रहा।

खेतो, नालो और घास मे 5 घण्टे तक दौडते और अपना रास्ता बनाते हुए मैंने अपने सामने एक पक्की सड़क देखी। मैंने अनुमान लगाया कि मैं अमृतसर जाने वाली मुख्य सड़क पर आ गया हूँ। मैं बडी सावधानी से सडक पर चलने लगा। शीघ्र ही मैंने एक कुँआ देखा। मै इतना प्यासा था कि मैने लगभग एक बाल्टी पानी पी डाला। मैंने कुछ देर तक कुँए के पास विश्राम किया। इतने मे ही मैंने सडक के उस पार कुछ शोर सुना। पहले तो मै सहम-सा गया परन्तु 5 घण्टे तक दौड़ते हुए मैने जितना रास्ता तय किया था उससे मैने अनुमान लगाया कि यह शोर हमारी सेनाओ का ही होना चाहिए, फिर भी मैंने उसे ध्यान से सुना और जो कुछ मैने सुना उससे बेफिक्र हुआ। ये सैनिक जिस भाषा मे बोल रहे थे वह दक्षिण भारत की थी, अत ये पाकिस्तानी नही हो सकते थे। सावधानी से मै उनकी ओर बढा और मैंने कुछ सैनिक गाडियाँ देखीं। वे सैनिक भी मुझे देखकर स्तभित रह गए। मैंने अपने दोनो हाथ ऊपर कर दिए, अपना नाम बताकर कहा कि मुझे अफसर के पास ले चलो। दो घण्टे की भारी पूछताछ के बाद वे मेरे वक्तव्य से सतुष्ट हुए। इसके बाद मुझे भोजन और पानी दिया गया। जब मुझे उन्होने जीप में बिठाया तब गत 10 घण्टो का शारीरिक और मानसिक तनाव एकदम दूर हो गया।

"जैसे ही जीप रवाना हुई मेरी अग्निपरीक्षा समाप्त हो गई। पिछले कुछ घटों की अवधि में मेरा शरीर जिस थकान मे से गुजरा था उसके लिए सुरक्षा की भावना बहुत बड़ी बात थी और मुझे तत्काल नीद आ गई। कई घण्टो के बाद जब मैं उठा

और अँगड़ाई ली तो मैं एक बार पुनः आश्वस्त हुआ कि मैं अपने लोगों में हूँ और पुन. मोर्चे पर जाने के लिए तैयार हूँ।

देखा माँ, कैसा रोमहर्षक अनुभव रहा ! मुझे तुम्हारी बात याद आई—

'जाको राखै साइयाँ, मार सके ना कोय।
बाल न बाँका कर सके जो जग वैरी होय ॥"

अच्छा माँ, मेरे कुत्ते शेरे को मेरी ओर से थपथपाना। उसे मेरा पत्र सुंघा देना, फिर देखना वह किस प्रकार मुझे याद करता है। एक बिस्कुट का चूरा उसके लिए भेज रहा हूँ। मुझे उसकी बडी याद आती है।

सबको यथायोग्य कहना !

सादर—

आपका बेटा
जे० के०
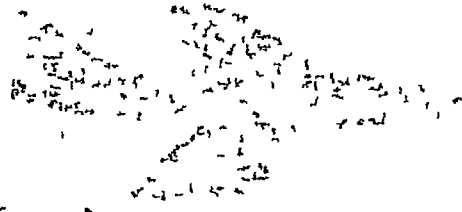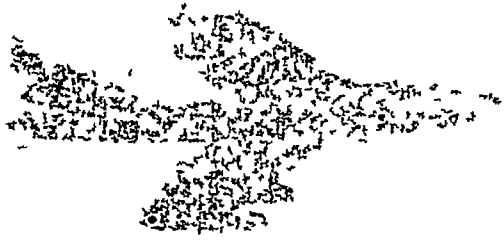
14 युद्ध के मोर्चे से—एक पायलेट बेटे का पत्र

प्यारी माँ,

जयहिन्द !

लडाई के दौरान जब हवाई हमले होते थे तो तुम हमारे लिए कितनी परेशान थी। पर आम जनता भी कहाँ सुरक्षित थी ? क्योकि पाकिस्तानियो ने हवाई युद्ध के जो अन्तर्राष्ट्रीय नियम है उनका पालन नही किया। आमने-सामने के युद्ध में—वायु-युद्ध और स्थल-युद्ध दोनो मे ही उन्होंने मुँह की खाई। इसलिए वे बहुत खिसियाने हो गए। हमारी जनता का मनोबल देखकर उन्हे और भी आग लगी। इसलिए जनता से बदला लेने के लिए उन्होंने अन्धाधुन्ध बम-वर्षा की।

माँ, अन्तर्राष्ट्रीय वायु-युद्ध के हमले के कुछ नियम है कि कोई भी देश जनता की सम्पत्ति को नुकसान नही पहुँचा सकता। अस्पताल, पूजा के स्थान तथा आम जनता के निवास-स्थानों पर बम गिराना मना है। युद्ध-नियमो के अनुसार सैनिक-स्थानों तथा अड्डों पर ही बम-वर्षा करने की इजाजत है। यदि कोई देश गलती से आबादी पर

हमला करके जान और माल का नुकसान करता है तो उसे उसकी पूर्ति करनी पड़ती है। इन कानूनों के अनुसार शत्रु द्वारा आबादी की जगह, जनता के निवास-स्थान, आदि पर जानबूझकर बम गिराना नियम के विरुद्ध समझा जाता है। यदि किसी शत्रु ने ऐसी गलती की तो उसके इन दुष्कर्मों की ससार निन्दा करता है तथा उस देश की भर्त्सना की जाती है।

परन्तु पाकिस्तान जिस अधर्म युद्ध पर तुला हुआ है, उसने इसानियत को भुला कर तमाम नियमो को ताक पर रख दिया। उसने हवाई अड्डो पर हमला करने की ओट मे जानबूझ कर मन्दिरों, मस्जिदो, गिरजाघरो, अस्पतालों, लोगों के निवास-स्थानों तथा जेलों पर बम गिराए। इस जगहो पर भला क्या सेना छिपी थी या भारत के रसद या शस्त्रों के अड्डे थे ?

माँ, असल में लड़ाई के पहले दो हफ्तों में उनकी टैंक सेना तथा हवाई जहाजो का जो नाश हुआ उससे उन्हे ऐसा लगा कि बाजी हाथ से निकल रही है। कई बरसों से उन्होंने लड़ाई की योजना बनाई हुई थी। इसका प्रमाण इच्छोगिल नहर के किनारे बने पिल-बक्स हैं। सीमेंट के ये बक्स इस ढग से बने है कि तीन ओर से शत्रु पर इसके अन्दर बैठकर गोले बरसाए जा सकते है।

पाकिस्तान ने 8 सितम्बर को जम्मू के एक गाँव पर जब बम-वर्षा की तो पाँच नागरिक मारे गए और 6 घायल हुए। रणसिहपुरे के गाँव मे एक गुरुद्वारा और स्कूल पाकिस्तानियो के राकेटो मे नष्ट हो गया। और यह उस समय हुआ जबकि पाकिस्तान सिखों को प्रलोभन दे-देकर फुसला रहा था कि हम तुम्हारे धर्म और गुरुद्वारों के रक्षक हैं।

इस अन्धाधुन्ध बमवर्षा से उन्होने अपने हिमायती यू० एन० ओ० के हवाई जहाज को भी नहीं बख्शा। यद्यपि उस जहाज का रंग भी भिन्न था और उस पर बड़े-बड़े शब्दों मे यू० एन० ओ० लिखा हुआ था, जो ऊपर उड़ रहे हवाई जहाज से साफ़-साफ़ पढ़ा जा सकता था।

दस सितम्बर को पाकिस्तान के चार विमान अमृतसर पर हमला करने आए।

उनमे से तीन मार गिराए गए। उसी दिन उन्होने बटाला, धारीवाल तथा पठानकोट की आबादी पर बम-वर्षा की। भला सोचो, इन शहरियो ने उनका क्या बिगाडा था ? उन्होने यह सोचा होगा कि जिस तरह डरपोक पाकिस्तानी लाहौर खाली कर भाग गए, उसी तरह शायद वीर पजाबी भारतीय भी भाग खड़े होंगे। पर इसका प्रभाव ठीक उलटा पडा। लोग अधिक सगठित हो गए।

सितम्बर 12 को पाकिस्तानियो ने योजना बनाकर जोधपुर, अमृतसर, सगरूर, जालन्धर, गुरदासपुर, पठानकोट और श्रीनगर पर बम गिराए। ढीठ होकर उन्होने सोचा चलो जरा बम्बई तक भी उडाने कर आएँ, पर वहाँ की एक एण्टी एयरक्राफ्ट गन का गर्जन सुनकर ही वे भाग आये। इससे एक दिन पहले वह पजाब के कई शहरो पर बम गिरा आए थे। सबसे अधिक हमले इन्होने जोधपुर पर किए। वहाँ ता० 14 सितम्बर को 32 नागरिक मारे गए।

माँ, अभी तो तुम्हे उनके कुकृत्यो का पूरा हाल सुनाना बाकी है। उन्होंने अम्बाले पर बार-बार बम गिराए और वहाँ के एक ऐतिहासिक गिरजे को नष्ट भी कर दिया। कोई इन सिरफिरों से पूछे कि क्या पाकिस्तानियों और ईसाइयो या हिन्दुओ का खुदा भी बँटा हुआ है ?

अम्बाला मे उन्होने मिलिटरी अस्पताल पर, जहाँ रेडक्रास का निशान चमकता है, इतनी भयकर बमबारी की कि अस्पताल के दो जनरल वार्ड और आफिसर वार्ड धराशायी हो गए। बेचारे कराहते, कलपते लाचार आठ मरीज वही मारे गए। 30 मरीज घायल हो गए। दो नर्सो को भी सख्त चोटे आई। इसके अतिरिक्त माडल टाउन की आबादी पर भी बम-वर्षा की गई। चार लोग मारे गए और चौदह घायल हो गए। अम्बाले मे कान्वेट स्कूल तथा गाधी मेमोरियल कालेज को भी नुकसान पहुँचा।

यह सब उस समय हो रहा था जबकि शत्रु को पसरूर मे हम भारी शिकस्त दे रहे थे। मुझे तुम्हारी बात याद आई कि 'धोबी से तो बस नही चला, गधे के ही कान उमेठने शुरू कर दिए'।

पाकिस्तान की हवाई सेना का दूसरा नृशस आक्रमण जोधपुर मे हुआ था। 22

सितम्बर को उन्होंने सेण्ट्रल जेल के अस्पताल पर तीन बम गिराए इससे कई कैदी-मरीज मारे गए और अस्पताल का वार्ड नष्ट हो गया। इन्सान इतनी नीचता पर भी उतर सकता है, यह देखकर तो शैतान को भी हैरानी हुई होगी। बेचारे कैदियों ने पाक का क्या बिगाड़ा था ? और बीमार कैदियो को मारना यह कौन-सी बहादुरी थी ? अस्पताल की इस बमबारी में 34 कैदी मरे और कई घायल हुए। इन बीमार कैदियों की सेवा करते हुए एक वार्ड-बॉय तथा एक कम्पाउण्डर भी शहीद हो गया। कैदियों ने अपने मृत साथियो को मलवे में से निकाला। उन्होने खतरे के सायरन की परवाह किए बिना अपने साथियों को बचाने की सोची। माँ, इन्सानियत इसको कहते है।

भारतीय सेना का मुकाबला करने में असफल रहने पर उन्होने छेहरटा पर बुरी तरह बम-वर्षा की। छेहरटा अमृतसर के पास इंडस्ट्रियल कालोनी है। भल्ला गली में, प्रताप बाजार में, दो बार बम गिराए गए और यह सब 'हमला रोको' प्रस्ताव पेश करने के तीन घंटे बाद तक किया गया। मजदूरो की बस्तियो, किसानो के घरों और खेतों मे बम गिराए गए। इसमें लगभग 70 घर नष्ट हो गए, 45 व्यक्ति मारे गए और सौ के लगभग लोग घायल हुए। दस लाख की प्रापरटी का नुकसान हुआ।

माँ, ये हरकते थी उन पाकिस्तानियो की जो कि पहले तो अडे रहे कि हम 'सीज-फायर' स्वीकार नही करेंगे और जब उनकी सेना का दम टूटने लगा तो सीज-फायर स्वीकार तो कर ली परन्तु बाद में भी उसका पालन नही किया। भला झूठ पर टिके रहकर किसी राष्ट्र की तरक्की कैसे हो सकती है ! अब उनके झूठ का पर्दाफाश हो गया है। पाकिस्तान ने तो अपनी जनता को भी धोखा दे रखा है। अपनी हार उनसे छिपा छोड़ी। उन्हें यह कहता रहा कि हमने दिल्ली के बाजारो को मुर्दों से पाट दिया है। शत्रु को हमने करारी शिकस्त दी है और बहुत जल्द हम दिल्ली पहुँच जाएँगे। जब 'सीज-फायर' हो गई तो उसने सोचा, अपना खोया हुआ हिस्सा हमला करके प्राप्त कर लें। शत्रु के हिस्से में कहर मचा दें। यही कारण है कि उनके विमान नापाक 'सीज-फायर' प्रस्ताव के कुछ समय बाद तक भी हवाई हमले करते रहे।

माँ, शत्रु ने अग्नि-बम (नापाम बम) नागरिकों पर फेंके। जम्मू मे ही 150 आदमी

मारे गए और घायलो की सख्या तो काफी रही। एक-एक हजार पौण्ड के बम फेंककर पाक ने काश्मीर के अनेक मकान, मन्दिर-मस्जिद ढहा दिए। एक मजिस्द में बम गिरने पर नमाज पढते हुए 50 मुसलमान मारे गए। और माँ, तुमने पढा ही होगा कि बलवन्त-राय मेहता का विमान पाक के इशारे पर ही गिराया गया था। इसमे मेहता साहब सपत्नीक मारे गए थे। तुम देखना, इन्ही कारनामो से बहुत जल्द पश्चिमी पाकिस्तानी पूर्वी पाकिस्तान का विश्वास खो बैठेगा। चीन को यह अपना दोस्त बनाकर इठला रहा है, पर इसका भी वही हालत न हो जो इण्डोनेशिया की हुई है। पूर्वी पाकिस्तान वालो को एक खतरा यह भी है कि कही अय्यूब मियाँ हमे चीन के पास बन्धक न रख दे।

माँ, पाकिस्तान के नेता घटिया किस्म की राजनीति अपना रहे हैं। काश उन्हें यह अक्ल होती कि भारत के सग अपना मित्रतापूर्ण रिश्ता रखते तो आज दोनो ही देश फलते-फूलते। मि० अय्यूब ने तो सारे देश का धन अपनी सेना तैयार करने पर खर्च डाला। इससे उनकी पचवर्षीय योजनाएँ ठप्प पडी है। देश की तरक्की रुक गई है। लोगो की आर्थिक हालत बिगड़ती जा रही है। जनता का ध्यान इस ओर से हटाने के लिए उसने 'इस्लाम खतरे में' का नारा लगाया है। उनके हृदय मे भारत के प्रति नफरत पैदा की है। पर पाकिस्तान को मिली इस करारी हार ने दुनिया के कुछ गुमराहो की आँखे भी खोल दी है, और देख लेना माँ, बहुत जल्द पाकिस्तान को किसी समझौते को अपनाकर हिन्दुस्तान से दोस्ती करने मे ही अपना कल्याण समझने की अक्ल आ जाएगी। हमारे नेता तो शुरू से ही एक अच्छे पड़ौसी की तरह रहने के महत्त्व पर जोर देते रहे है। और हरदम इस मामले मे बातचीत करने को तैयार है। हमारा तो आदर्श ही पंचशील है।

अच्छा, माँ, सबको मेरी यथायोग्य कहना। मै ठीक हूँ। बहुत जल्द छुट्टी लेकर घर आऊँगा ऐसी आशा है।

सादर,

आपका बेटा,

जे० के०
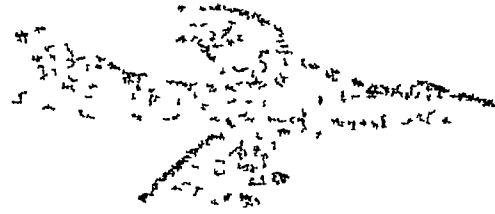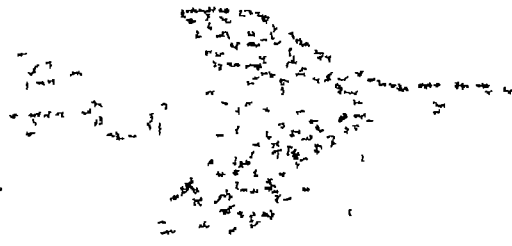
15 युद्ध के मोर्चे से—
एक पायलेट बेटे का पत्र

प्यारी माँ,

जयहिन्द !

ता० 23 की रात से युद्ध-विराम की घोषणा हो गई है। पाकिस्तान आखिरी दम तक अपनी करतूतों से बाज नही आया। वह युद्ध-विराम घोषणा के अन्तिम क्षण तक बमबारी करता रहा। हम लोग तो युद्ध-विराम के मूड में थे और उधर पाकिस्तान उस समय अमृतसर के पास निरीह जनता पर अग्निवर्षक बम गिरा रहा था। 'खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे' ऐसा ही व्यवहार पाकिस्तानियो का रहा है। उन्होने अपनी जनता को गुमराह किया, उन्हें अन्धकार में रखा और यह ढिंढोरा पीटा कि पाक ने भारत का बहुत बड़ा हिस्सा अपने कब्जे में ले लिया है। वास्तविकता यह है कि इच्छोगिल नहर तक तो हम पहुँच ही गए हैं। लाहौर तथा उसके आसपास का इलाका खाली हो गया है। वहाँ के नागरिक डर के मारे भाग गए हैं।

हमारी नभ और स्थल-सेना ने पाकिस्तान की कमर तोड़ दी है। उनकी वायु-

शक्ति और बख्तरबन्द सेना को भारी नुकसान पहुँचाया है। वे लोग न केवल अनाज अपितु युद्ध-साधनों के मामले में भी दूसरो पर निर्भर करने है, तिस पर भी उन्होंने झूठ का पल्ला पकडा हुआ है। चीन या इण्डोनेशिया चाहे इस उम्मीद से कि बन्दरबॉट मे उनको भी शायद हिस्सा मिल जाए पाक को हाँ मे हॉ मिलाते रहे हो, परन्तु उनकी भी आँखे खुल गई होगी कि भारत रूपी सोता सिंह अब जाग उठा है। ये चूहे चुपके-चुपके उसकी अयाले कुतरते रहे, इसी से उन्हें घमण्ड हो गया और नारे लगाने लगे कि 'हम टहलते-टहलते दिल्ली पहुँच जाएँगे' पर शत्रु ने सीमा पर ही पॉव धरा था कि हमने इनके जबड़े तोड़ दिये। अब दुम दबाते भाग रहे है। अब पता लग गया होगा इन्हे हमारी शक्ति का।

मॉ, हवाई जहाज का युद्ध तो फिलहाल शान्त हो गया है, पर दिखता है पाकिस्तान अपने फरेबी हथकडों से बाज़ नही आ रहा। वह सीमा पर घुसपैठ करने का दुस्साहस कर ही रहा है। परन्तु हम उसकी एक नही चलने देगे। 1962 मे चीन ने हमला कर के हमे जो सचेत कर दिया, वह भी एक तरह से अच्छा ही हुआ। उस युद्ध से ही हमे अपनी खूबियो तथा कमियों का पता चल गया था। जैसे 1962 के हमले से हमने कुछ सीखा वैसे अब इस हमले से भी कुछ नया अनुभव प्राप्त करके तरक्की करेंगे।

माँ, जब इस युद्ध का इतिहास लिखा जाएगा तो हवाई हमलो की सफलता तथा बहादुर चालकों की बहादुरी का उल्लेख स्वर्ण-अक्षरो में होगा। एक बार उस पर सिंहावलोकन करता हूँ। भारत-पाक विमानो की पहली झड़प का ऐतिहासिक महत्त्व है। हम इस मामले में भी पहल नही करना चाहते थे, जब पाक विमानो ने भारतीय सीमा का उल्लंघन करके हमला किया तो हमारे सैक्टर आफिसर कमाण्ड ने वायरलेस से हमे तुरन्त उनका मुकाबला करने का हुक्म दिया। तैयार तो हम थे ही, हुक्म मिलते ही भारतीय पायलेट अपने-अपने हवाई जहाजो पर उड चले।

यह सब काम इतनी तेजी के साथ और इतने थोडे समय मे किया गया कि क्या करना है, कहाँ जाना है, इस बात का आदेश हमे उडते-उड़ते ही प्राप्त हुआ। शत्रु के सेबर जैट से पहली मुठभेड़ तीन नैट हवाबाजो की हुई। अपना शिकार देखते ही वे

तीन ओर को बिखर गए और व्यूह बनाकर उन्होंने उसको घेर लिया। दो नेट-चालक तो सेवर के दाएँ-बाएँ हो गए और तीसरा उसके सिर पर सवार हो गया। इस व्यूह से सेवर निकल नहीं सका और स्क्वा० लीडर ट्रेवर कोलर ने उसे अपना शिकार बना ही लिया और वह घायल पक्षी की तरह नीचे आ पड़ा। इस झड़प ने भारतीय हवा-बाज़ों का हौसला बढा दिया। आकाश मे खूब मुकाबला हुआ। सेबर जैट के इस प्रकार गिरने से शत्रु दहशत खा गए। यह युद्ध ता० 3 सितम्बर को छम्ब क्षेत्र में हुआ था। इसके 16 दिन बाद इनके भाई डेजिल कीलर ने भी एक और सेवर गिरा दिया। यह युद्ध 19 सितम्बर को स्यालकोट में हुआ था। इस युद्ध का भी बड़ा महत्त्व है। स्यालकोट की लडाई आकाश और धरती दोनो स्थानों पर खूब डटकर हुई और यहाँ मात खाकर शत्रु की कमर टूट गई। इस युद्ध में उसके 6 सेवर नष्ट कर दिये गए थे। शत्रु के ये जहाज हमारे हवाई अड्डो और सप्लाई-केन्द्रो को नष्ट करने आए थे।

तीसरा महत्त्वपूर्ण हवाई युद्ध हलवारा पर लड़ा गया। इस युद्ध में फ्लाइट आफिसर वी० के० नेव ने अपने हण्टर विमान से शत्रु के एफ-86 सेवर जैट को मार गिराया था। उसने अपने पहले निशाने में ही शत्रु के विमान की दुम फोड़ दी। जिससे उसमें आग लग गई। इससे नेव का हौसला बढ़ गया और उसने 100 गज की दूरी से शत्रु के विमान के पेट्रोल टैंक पर एक गोली और दाग दी। बस, अब क्या था! आग की लपटों से घिरा जहाज हवा मे ही फट गया और उसके पुर्जे-पुर्जे बिखर गए। इससे शत्रु की हवाई सेना का मनोबल नष्ट हो गया।

हमारा नैट छोटा होने के कारण अधिक फुर्तीला और झट से करवट लेकर शत्रु के पीछे जाने में समर्थ है। इसी कारण से वह जल्द निशाना भी नही बन सकता। ऊपर-नीचे दोनों ओर उसकी गति तेज है। कुल चार मिनट में वह चालीस हजार फीट का रास्ता तय कर लेता है। जिस पर इसको चलाने वाले हमारे वीर, धीर, चतुर चालक है। यही बात हुई है कि एक तो करेला, फिर नीम-चढा। हमारे नेट ने जो कड़वाहट, झुँझलाहट और बौखलाहट पाक के विमान-चालकों के मन में घोली, उसे वे हमेशा याद रखेंगे।

अब इस बात को महसूस करने लगे है कि सेना-सामग्री के हर मामले में हमें आत्म-निर्भर होना चाहिए। नए नैट विमानों मे सुधार करके उन्हे आधुनिकतम बनाया जाए। हमारी तोपें और तोपखाना भी बढिया होना चाहिए। हमे नए हवाई अड्डे भी बनाने होंगे ताकि हमारे विमान बिखरे रहे। इन हवाई अड्डो पर बढिया किस्म की 'एण्टी-क्राफ्टगन' लगानी होगी ताकि शत्रु हमारी सीमा लाँघने का साहस न कर सके।

माँ, इनके अलावा हमे भोजन मे भी तो आत्मनिर्भर बनना बहुत जरूरी है। इस समय यदि हम स्वदेशी का व्रत ले, तो जो स्टर्लिंग बचे उसको हम अपनी सेना की जरूरतें पूरी करने पर खर्च सकेंगे। अभी खतरा समाप्त नही हुआ है। चीन और पाकिस्तान की साँठ-गाँठ सन्देह उत्पन्न कर रही है।

इसके अलावा चीन तो लोलुप दृष्टि लगाए हुए हमारी सीमाओ पर डटा बैठा है। वह तो कभी भेडो के बहाने, कभी कुछ चौकियो के बहाने सीमा पर हमेशा अशान्ति बनाए रखना चाहता है। इसलिए भी हमे अपनी चौकसी और तैयारी मे ढिलाई नही करनी है। काश, यदि पाक हमारा अच्छा पडोसी दोस्त बनकर हमारे साथ मिलकर चीन को सबक सिखाने का दृढ सकल्प कर लेता।

माँ, एक मोर्चा नागरिको ने भी सँभालना है। वह है घायल नौजवानो को प्रोत्साहन देना, अपने सहयोग से उन्हे उपयोगी जीवन बिताने के लिए तैयार करना। जिन वीरों ने इस युद्ध मे वीरगति प्राप्त की है, उनके परिवार की सुख-सुविधा की जिम्मेदारी भी तो देश पर ही है। उनके बच्चो की शिक्षा, पत्नियो को आश्रय तथा समाज मे इज्जत के साथ जीवन व्यतीत करने की सुविधाएँ भी तो देश ने ही जुटानी है। जब हमारे नौजवान सैनिक यह देखेंगे कि हमारे वीरगति-प्राप्त साथियों के परिवार की जिम्मेदारी सारे देश ने मिलकर सँभालनी है, तो उन्हे बेफिक्र होकर रक्षा-मोर्चे पर डटे रहने का प्रोत्साहन मिलेगा।

एक और महत्त्वपूर्ण बात है माँ, जिसकी उपेक्षा नही की जा सकती। वह है देश मे एकता और शान्ति बनाए रखना। इस मामले मे महिलाओ का बड़ा हाथ है। मुझे पूरी उम्मीद है कि तुम्हारे महिला मण्डल ने इस ओर जरूर ध्यान दिया होगा।

यह हिन्दुस्तान की जीत और पाक की हार नही है, परन्तु न्याय की जीत और अन्याय की पराजय है। अगर प्रजातत्र प्रणाली भारत जैसे देश में असफल रहती है तो एशिया का पतन अवश्य समझो। हम अपनी रक्षा करते हुए दुनिया मे इन्सानियत का डका वजा सकने में सफल हो सकेंगे। इस समय संसार के शान्तिप्रिय देश जो कि प्रजातन्त्र में विश्वास करते है भारत के इस धर्म-युद्ध की सफलता चाहते हैं। हममें राज्यलोलुपता नही है। पाक-जनता के प्रति हमारी पूर्ण सहानुभूति है। अगर वे गुमराह किये गए है तो इसमें निरीह जनता का क्या दोष ? यदि अब भी पाकिस्तान के अधिकारी मित्रता का हाथ बढाये तो उसे थामने में भारत को हिचक नहीं होगी। वह अपने पूर्ण सहयोग से दोनों देशों मे मित्रता व शान्ति स्थापना की चेष्टा करेगा।

सादर,

आपका बेटा,

जे० के०
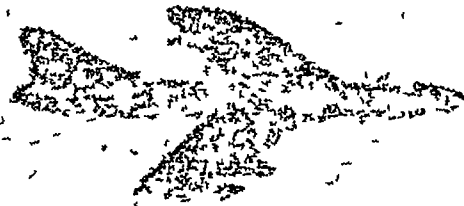
16 युद्ध के मोर्चे से— एक पायलेट बेटे का पत्र

प्यारी माँ,

जयहिन्द !

हमारी वायुसेना की श्रेष्ठता सारी दुनिया ने मान ली है। देश-विदेशो के अखबारों के सवाददाता भारत के हवाई अड्डो का दौरा करके लौटे है। उनका भी कहना है कि भारत के विमान-चालक अपने काम मे दक्ष, व्यवहार मे विनम्र तथा अपना कर्त्तव्य भली प्रकार निभाते रहे है। उन्हे अपनी सफलता पर सन्तोप है, पर साथ ही इस बात का गौरव भी है कि इस युद्ध मे वे अपने देश का सिर ऊँचा कर सके और वीरो की परम्परा को उन्होने बहादुरी से लड़कर और आत्म-बलिदान करके कायम रखा।

माँ, हमारे पायलेट बडे बहादुर है और उनमे परस्पर टीम-भावना भी बडी है। पत्रकारो ने उनकी बडी तारीफ की और वे नैट विमान की सफलता से भी बड़े प्रभावित

इन संवाददाताओं ने हवाई अड्डों के इंचार्ज से बातचीत की। हमारे अफसरो ने उनका सन्देह मिटा दिया और अब सबके सामने पाकिस्तान की झूठी शेखियों का भंडा फूट गया है। इस विषय मे तुम भी विस्तार से जानना चाहोगी।

पाकिस्तान के तीव्रतर गतिवाले और आधुनिक यन्त्रों से सज्जित अमरीकी सेवर विमानोपर भारतीय नैट, हंटर और मिस्टियर विमान कैसे हावी रहे, इस बारे में आदमपुर, हलवाडा और अम्बाला के हवाई अड्डों का भ्रमण करने के लिए गए राजधानी के पत्रकारो ने जिज्ञासावश कई सैनिक अधिकारियों और लड़ाकू चालकों से अनेक प्रश्न पूछे। स्क्वा० लीडर डी० कीलर ने, जो कि काफी समय से नैट चला रहे है, बताया कि अमरीकी सेवर विमानों का नैट से कोई मुकावला नही है। नैट हल्का-फुल्का विमान है और वह सेवर के मुकावले मे वड़ी तेजी के साथ चक्कर काट सकता है, गोता लगा सकता है और सेवर की पकड़से वचकर उसको अपनी पकड में ले सकता है।

नैट के वारे मे गर्व की यह भावना अन्य विमान-चालकों ने भी व्यक्त की और कहा कि जहाँ तक शत्रु विमानो को घेरने का प्रश्न है, सेबर विमान नैट का मुकाबला नही कर सकते।

पाकिस्तानी विमान-चालकों का प्रशिक्षण और अभ्यास भी अपेक्षाकृत हमारे चालको से कम है, इसका प्रमाण पाकिस्तानी चालकों द्वारा गिराए गए बमो से स्पष्ट मिलता है, जो कि प्राय अपने निशानों से चूकते रहे।

हमारे विमान-चालको से वातचीत करने के उपरान्त पत्रकारों ने यही अनुभव किया कि उनको अपने नैट, मिस्टियर और हण्टर आदि विमानों पर गर्व है और वे पूर्ण आत्म-विश्वास के साथ समय पड़ने पर आकाश मे उडते है।

अमरीकी सहायता-प्राप्त पाकिस्तान की शक्तिशाली वायु-सेना को पराम्त करने में अपनी सफलता के वारे में भारतीय विमान-चालक कोई शेखी नहीं वघारते। सीधी-सादी विनम्र भाषा मे कहते है कि भारतीय वायुसेना के जवान युद्ध-कौशल में अधिक निपुण है, उन्हे इस कौशल का ज्यादा अच्छा प्रशिक्षण मिला है। हमारी सफलता का सबसे वड़ा कारण है, हमारा सगठित प्रयास और कधे से कंधा मिलाकर दुश्मन से

जूझ पडने की भावना।

एक ओर हमे अपनी सफलता की खुशी है, लेकिन दूसरी ओर कुछ रज भी है। रज इस बात का कि हमे और अधिक कमाल कर दिखाने का अवसर नही मिला। यदि युद्ध एक सप्ताह भी और चलता तो भारतीय वायुसेना को और अधिक निर्णायक विजयश्री हाथ लगी होती—इसमे कोई सन्देह नही।

माँ, विभिन्न देशो के सवाददाताओ ने आँखो-देखा हाल जब दुनिया को बताया तो पाकिस्तान खिसियाना हो गया। पाकिस्तान की युद्ध-नीति के धुर्रे उड़ गए। उसमे न सगठन था, न युद्ध-कौशल। मैं तुम्हे संवाददाताओ के दौरे के विषय में पूरा विवरण देता हूँ।

सवाददाताओं का दल विमान से मोर्चे देखने के लिए गया। उनका विमान सबसे पहले आदमपुर मे रुका। आदमपुर जालधर के निकट है। इस वैमानिक अड्डे के कमाण्डर है, ग्रुप-कप्तान वाल्टर बर्टन अलेक्जेण्डर लायड। उनके सहयोगी उन्हे 'टोक' कहते है। दूसरी बार पत्रकारो का विमान हलवारा मे रुका। यह विमान-अड्डा ग्रुप-कप्तान जान की कमान मे है। तीसरी उडान मे पत्रकार अम्बाला पहुँच गए। यहाँ का अड्डा ग्रुप-कप्तान डेविड यूजिन बाच की कमान मे है।

नामो से ऐसा लगता है कि इन अड्डों के कमाण्डर विदेशी है, लेकिन है ये सबके सब भारतीय और अल्पसख्यक जाति के है। यह तथ्य विदेशी अखबारो के सवाद-दाताओ के लिए विशेष ध्यान देने योग्य है, क्योकि वे पाकिस्तान के इस झूठे प्रचार की ओर अधिक झुके दिखाई देते है कि भारत मे अल्पसख्यको की स्थिति बड़ी दयनीय है। विदेशी सवाददाता चाहे तो उसे स्वय देख सकते है, क्योकि पाकिस्तान गला फाड़-फाडकर उनके सामने भारतीय अल्पसख्यकों की दुर्दशा की मनगढ़न्त कहानियाँ सुनाता रहता है।

पाकिस्तान ने हलवाडा हवाई अड्डे को नुकसान पहुँचाने के लिए पास के मकई के खेतो मे 52 छतरी सैनिक उतारे थे। जिनमे से 25 तो वहीं पकड लिए गए। शेष भटिडा मे पकडे गए। उन्होने पाकिस्तान की योजना का भंडाफोड़ कर दिया। उनके

पास से जो हथियार पकड़े गए वे सब अमेरिका के बने हुए थे। उनके पास से शपथ-पत्र भी, निकला, जो इस प्रकार था, "मै 5 अगस्त को तीन बजे दिन में सच्चे दिल से वायदा करता हूँ कि अल्लाहताला के सिवाय किसीको पता नही है और यह भी वायदा करता हूँ कि अल्लाहताला की मर्जी के खिलाफ कुछ भी नही करूँगा चाहे जान चली जाए। दस्तखत बकलमखुद मुहम्मद याकूब।"

संवाददाताओ ने सेवर जैट विमान मार गिराने वाले बहादुर कीलर-बन्धुओं—स्क्वाड्रन-लीडर ट्रैवर कीलर और उनके भाई स्क्वाड्रन-लीडर डेजिल कीलर—से क्रमश. आदमपुर और अम्बाला मे मुलाकात की। अन्य वीरचक्र-विजेताओ से भी संवाददाताओं का परिचय कराया गया। इन वीरचक्र-विजेताओ मे स्क्वाड्रन-लीडर ए० जे० यू० सांधू, एल० डी० आर० एम०एस० जटार, स्क्वाड्रन-लीडर एस० हांडा और फ्लाइट-लेफ्टिनेण्ट त्रिलोचनसिह प्रमुख थे।

कमाण्डरो और उनके अफसरों से बातचीत करने और यौद्धिक विमानस्थलों को घूम-घूम कर देखने से निम्नलिखित बातें प्रकाश मे आईं। पहली बात तो यह है कि पाकिस्तान का यह दावा बिलकुल ही झूठा और निराधार साबित हुआ कि उसने भारतीय वायुसेना को भीषण क्षति पहुँचाई है। दूसरी बात यह साबित हुई कि पाकिस्तानी विमानों ने बड़ी गैर-जिम्मेदारी से बम बरसाए। इससे भारतीय यौद्धिक अड्डों को हानि पहुँचने के बदले निरीह जनता की जाने गईं और उनकी सम्पत्ति बरबाद हुई।

तीसरी बात यह प्रकाश में आई कि पाकिस्तान भारतीय नैट विमानों के डर से कांपता है। इसलिए भरसक ऐसी कोशिश करता है कि नैट विमानों से उसकी मुठभेड न हो। सेवर जैट विमानों के गिराए जाने के बाद उसने दिन में हवाई हमले करना बन्द कर दिया।

आदमपुर मे पत्रकारों को बताया गया कि पाकिस्तानी विमानों ने यहाँ 43 बम गिराए, जिनमें छ. बम ही लक्ष्य तक पहुँचे सके। बहुत-से बम भारतीय यौद्धिक विमान-स्थल से दूर गिराए गए, जो पास के नगरों में गिरे जैसे होशियारपुर, फगवाड़ा आदि में। अधिकांश बम हजार-हजार पौण्ड के थे। विमानस्थल पर बम के प्रहार से प्रशासनिक

कार्यालय का एक हिस्सा गिर पड़ा। विमानस्थल के बाहर दो घर गिर पड़े, जिन्हें भारतीय विमान-सेना के जवानों के परिवारो ने पहले ही खाली कर दिया था। छ: सितम्बर की बमबारी मे रास्ता ध्वस्त हो गया, लेकिन उसी रात को उसकी मरम्मत कर ली गई। पाकिस्तानी विमान अधिकाश हमले रात मे ही करते रहे।

ग्रुप-कप्तान लायड ने खुल कर यह स्वीकार किया कि मेरी समझ मे यह बात नही आई कि पाकिस्तानी दिन मे हमला करने से क्यो बचते रहे। मेरी समझ मे इसका एक ही कारण हो सकता है और वह यह कि नैट विमान दिन मे असाधारण खूबी से लड़ते है और पाकिस्तान इन नैटों की लडाई से बडा भयभीत हो गया है।

लुधियाना के निकट हलवारा के ऊपर छह सितम्बर को दुश्मन के सेबर जैट विमान चढ आए। इनमें चार सेबर जैट विमानो का भारतीय विमान सेना के युद्धक विमानो ने जमकर सामना किया और उन्हे मार गिराया। तीन विमानो को चौकसी करने वाले हंटर विमानों ने गोली मारकर गिरा दिया।

यहाँ भी पाकिस्तानी विमानो ने रात मे ही हमला किया और बी-57 से कुल 83 बम गिराए। 10 और 11 सितम्बर की रात मे पाकिस्तानियों ने आठ बार हमले किए, लेकिन इन हमलों से हल्की क्षति पहुँची। 14 सितम्बर के बाद बहुत कम हमले हुए।

अम्बाला मे पाकिस्तानियों का सबसे बुरा हाल हुआ। जनता के जान माल को पाकिस्तानियों ने बडा नुकसान पहुँचाया, लेकिन किसी भी यौद्धिक प्रतिष्ठान के निकट कोई विमान नही आ सका और न प्रहार कर सका। कुल 16 बम गिराए गए, सबके सब हजार पौण्ड के थे। इनमें तीन बम यौद्धिक विमान-स्थल के कुछ निकट गिरे। उनमे भी दो बम फट नही सके। एक ही नियन्त्रण भवन पर प्रहार हुआ। लेकिन यह ऐसा भवन था जिसे तोड़ देने के लिए पहले निर्णय किया जा चुका था। स्टेशन-कमाण्डर ग्रुप-कप्तान बांच ने मज़ाक उड़ाते हुए कहा कि यदि पाकिस्तानियो ने उस भवन को अच्छी तरह गिरा दिया होता, तो नया भवन बनवाने के लिए बड़ी आसानी से मै मुख्य कार्यालय से रुपये मंजूर करा लेता।

ग्रुप-कप्तान बांच ने कहा कि पाकिस्तानियो का यह दावा बिलकुल ही झूठा है कि

अम्बाला मे उन लोगों ने 25 भारतीय विमान ध्वस्त कर दिए। विमान-स्थल का एक भी विमान ध्वस्त नही हुआ और न कोई मरा।

17 और 19 दिसम्बर को चाँदनी रात थी। पाकिस्तानियो ने चाँदनी रात का लाभ उठाया और अम्बाला पर कई बार हमले किए। इस कोशिश में उन लोगो ने फौजी अस्पताल पर ही बम गिरा दिए। अस्पताल के दो हिस्से तो बिलकुल ही ध्वस्त हो गए। 120 वर्ष पुराने कैथेड्रल का ढाँचा मात्र रह गया। माडल टाउन मे आधे दर्जन से अधिक मकान ध्वस्त हुए। बम के विस्फोट से फौजी अस्पताल के पास का एक क्लब भी क्षतिग्रस्त हो गया।

अम्बाला स्टेशन-कमाण्डर ने बताया कि हमें यह समझ मे नही आया कि पाकिस्तानियों ने इस तरह अन्धाधुन्ध बम क्यो गिराए? हो सकता है कि पाकिस्तान ने जानबूझकर नागरिकों पर बम गिराए हों। यह भी हो सकता है कि पाकिस्तानी विमान-चालकों को रात मे बमबाजी करने की शिक्षा अच्छी तरह नहीं दी गई हो, या यह हो सकता है कि लक्ष्य पर बम गिराने के लिए आकाश में अधिक देर तक रुके रहने में खतरा देखकर वे डर रहे हो।

आदमपुर, हलवारा और अम्बाला की घटनाएँ भारतीय वायुसेना के यौद्धिक इतिहास में एक और नया अध्याय बनकर जुड़ गई है। हमारी तीनो सेनाओ (जल, स्थल और वायु) में विमान सेना की उम्र सबसे कम है। हमारे विमान-चालकों के लिए यह नया अनुभव है। जिस सफलता के साथ उन्होने युद्ध में काम किया है, उससे ऐसा लगता है कि वे भविष्य में और अधिक कौशल दिखा सकेंगे। माँ, देखा, यह है हमारी वायुसेना की सलफता का ब्योरा—जिसका लोहा विदेशी भी मान गए हैं।

माँ, मैंने पिछले पत्र मे लिखा था कि जल्दी घर आऊँगा, पर अभी कुछ दिन मुझे और यहाँ रुकना पड़ेगा। अगले मास छुट्टी मिलने की आशा है। भले ही युद्ध-शान्ति की घोषणा हो गई है, पर हम लोग अभी अपने मोर्चो को असुरक्षित नही छोड़ सकते।

पिन्टू का पत्र मुझे मिला था, उसे अगले महीने ही छुट्टी मिलेगी। टुन्नू आजकल

कहाँ है ? विनोद की अभी कुछ खबरनही मिली। मौसीजी से कह देना, घबराने की कोई बात नही। भगवान् पर भरोसा रखें। आखिरकार वीर माताओ के ही तो वीर पुत्र होगे। हमे प्रेरणा आप लोगों से ही मिलती है।

सबको यथायोग्य कहना !

सादर,

आपका बेटा,

जे० के०
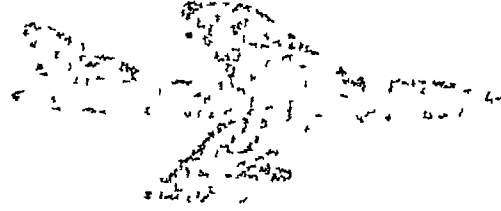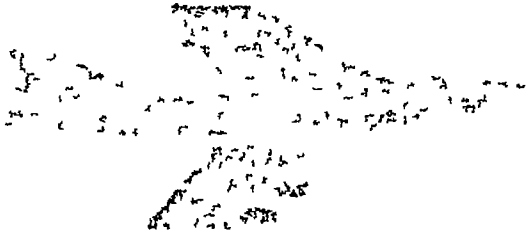
17 युद्ध के मोर्चे से— एक पायलेट बेटे का पत्र

प्यारी माँ,

जयहिन्द !

भारतीय वायुसेना की सफलता, सहयोग और चालकों के शौर्य और सूझ-बूझ की सभी जगह प्रशंसा हुई है। स्थल-सेना को उन्ही के सहयोग से आशातीत सफलता भी मिली। ठीक भी है यदि दायाँ और वायाँ दोनो हाथ मिल कर बोझ सँभालते है तो भार सिर पर सधा रहता है। वायु सेना की सफलता पर हमारे एयरमार्शल अर्जुनसिंह फूले नहीं समा रहे।

वायुसेनाध्यक्ष एयरमार्शल अर्जुनसिंह को देश के अनेक नेताओं से इस युद्ध मे भारतीय वायुसेना की सफलताओं के लिए प्रशंसा के पत्र प्राप्त हुए है।

केन्द्रीय रेल-मंत्री श्री सदाशिव कान्होजी पाटिल ने कहा है कि भारतीय वायुसेना के सभी लोगो को मेरी हार्दिक बधाई। आपने अपनी सेना का नेतृत्व किया है, वह कई पीढियों तक के लिए अच्छा उदाहरण बना रहेगा। आपकी सूझ-बूझ और सभी कठिन

कार्यो को लगन के साथ करने की क्षमता एक ऐसा हथियार सिद्ध हुई जिसे कोई शत्रु नही तोड सकता ।

लोकसभा के उप मुख्य सचेतक श्री जे० बी० मुथ्यल राव ने एयरमार्शल अर्जुनसिंह को और समस्त वायुसेना को बधाई देते हुए कहा है कि हम, और शायद पाकिस्तान भी, भारतीय वायुसेना की बहादुरी को कभी नही भुला सकते ।

श्रीमती विजयालक्ष्मी पडित ने अपने पत्र मे कहा है कि आप और आपके नेतृत्व मे वायुसैनिको ने जो महान् सफलता प्राप्त की है, उसके लिए मुझे बड़ा गर्व है। मेरे दिल मे वायुसेना के युवको के लिए बडा प्रेम और मगल-कामना है। आपको मेरी हार्दिक बधाई और शुभ-कामनाएँ !

श्री हृदयनाथ कुँजरू ने वायुसेनाध्यक्ष को लिखा—भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान के साथ लडाई मे जो महान् कार्य किया है,उसकी मै तहेदिल से तारीफ करता हूँ। हालाँकि पाकिस्तान के पास आधुनिक विमान थे, लेकिन हमारे पायलेटो ने अपनी बहादुरी, देशप्रेम और कुशलता से यह सिद्ध कर दिया है कि मशीनों से मानव का महत्व अधिक है। जिन लोगो ने देश की सेवा मे वीरगति पाई है, उनकी याद मे मेरा सिर आदर से झुक जाता है।

बम्बई से श्री के० एम० मुशी ने एयरमार्शल अर्जुनसिंह को महान् सफलता के लिए बधाई देते हुए कहा है कि हमारी वायुसेना ने अपने आपको पाकिस्तान की आधुनिक शस्त्रो और मशीनो से लैस सेना से बहुत ऊँचा साबित कर दिखाया है।

लोकसभा के सदस्य श्री करनीसिह ने अपने पत्र मे लिखा, एक सैनिक होने के नाते मुझे अपनी वायुसेना की महान् वीरता और बहादुरी पर बडा गर्व है। आपके नेतृत्व मे भारतीय वायुसेना ने जो अद्भुत कार्य किए, उसके लिए आपको और सारी वायुसेना को बधाई ! हमने दुनिया को यह दिखा दिया है कि भारतीय वायुसेना से लोहा लेना आसान नहीं है।

राज्यसभा के सदस्य श्री देवीसिह ने वायुसेनाध्यक्ष को बधाई देते हुए कहा कि हमारे युवक पायलेटो ने जो साहस दिखाया, उससे सारा विश्व चकित होकर यह सोच

रहा है कि उन्होंने किस प्रकार नैटों से भारी संख्या मे सेबर-जैटों के छक्के छुडाए। भरतीय वायुसैनिको के साहसपूर्ण कार्य स्वर्ण-अक्षरों मे लिखे जाएँगे।

पंजाव के गृहमन्त्री श्री दरबारासिह ने लिखा है, भारतीय वायुसेना ने जो अद्भुत सफलता प्राप्त की है, उसके लिए आपको और सारी वायुसेना को मेरी हार्दिक वधाई! अनेक मुसीवतों मे भी भारतीय वायुसेना के युवकों ने बडे कमाल दिखाए है और इन युवकों पर आज सारे देश को गर्व है।

माँ, हमे अपने एयरमार्शल पर अभिमान है। उन्होंने हमेशा हमें प्रोत्साहन दिया और हमारे शौर्य की बडी दाद दी। माँ, हमले की योजना ठीक से बनाई जाती रही और योग्य व्यक्तियो को जिम्मेदारी सौंप दी गई। इसी से सव काम ठीक से हुआ। जब जोधपुर पर हमला हुआ था तो वहाँ के दौरे पर एयरमार्शल गए थे, और जयपुर की एक सभा में उन्होंने कहा, था, भारत पाक-संघर्ष मे वायुसेना को जो काम सौपा गया था वह हमारी योजना के अनुसार बहुत अच्छी तरह से पूरा कर लिया गया है।

उन्होंने कहा कि भारतीय वायुसेना के हमलो से पाकिस्तानी वायुसेना की आधी शक्ति नष्ट हो गई है। पाकिस्तानी हवाई अड्डो तथा अन्य सैनिक अड्डो को भी वहुत भारी क्षति पहुँची है। भारतीय वायुसेना का मुख्य काम पाकिस्तानी सेना के खिलाफ लड रही भारतीय स्थल-सेना को मदद पहुँचाना था और इसे उसने पूरी तरह निभाया। दूसरा काम यह था कि पाक वायुसेना को भारत में सैनिक हवाई अड्डों तथा औद्योगिक संस्थाओं पर हमला करने से रोका जाए। हमारी वायुसेना की सतर्कता से पाक वमवर्षकों को इस उद्देश्य में तनिक भी सफलता नही मिली।

भारतीय वायुसेना की इस भारी सफलता का कारण वायुसैनिकों को मिला अच्छा प्रशिक्षण तथा उनका साहस और अनोखी वहादुरी है। इसके विपरीत पाक विमान-चालकों में उन दोनो वातो का अपेक्षाकृत अभाव रहा। इसके अलावा पाकिस्तानी वायुसेना के 'एफ-104' विमान लड़ाई मे ज्यादा सफलता नही दिखा पाए। क्योंकि हवाई लड़ाई ज्यादातर धरती के वहुत नजदीक हुई इसलिए इस विमान के साउंड विइर राकेट अपना असर न दिखा सके।

उन्होंने एक अन्य प्रश्न के उत्तर मे कहा कि पाकिस्तान टर्की, इण्डोनेशिया और चीन से विमानचालक तथा वायुसेना की जरूरत के अन्य औजार मॉग रहा है, इसलिए समझना चाहिए कि उसकी वायुसेना को काफी क्षति पहुँची है।

माँ, जब हमारे अफसर अपने जूनियर की पीठ ठोकते है तब उसकी हिम्मत और बढ जाती है। हमे इसी बात की बड़ी खुशी है कि इस युद्ध मे जूनियर या सीनियर का कोई भेद नही था। और जो भी काम किसी दल ने किया, उसमे प्राप्त सफलता का श्रेय भी उन सबने मिलकर बाँटा।

अपने जूनियर से काम लेने का एक खास कमाल हासिल है हमारे वायु-सेना-अध्यक्ष एयरमार्शल अर्जुनसिह को। उन्होने अपनी कार्यकुशलता की योग्यता 1963 में जब चीन ने हमला किया था तभी प्रमाणित कर दी थी। यद्यपि उस युद्ध मे हवाई युद्ध नही हुआ था, परन्तु हमारे विमान-चालको ने ठिकाने पर रसद पहुँचाने मे बड़ी तत्परता दिखाई थी। दुर्गम घाटियो मे सेना को जरूरी चीजे पहुॅचाना, घायलो को उठा कर ले जाना, घिरे हुए योद्धाओ के ठिकाने पर कम्बल, भोजन और दवाइयॉ गिराना, जरूरी सन्देशे चौकियो तक पहुँचाना, ये सब काम हमारी वायुसेना ने ही किये थे। हमारे एयरमार्शल स्वय बहुत अनुभवी विमान-चालक है। एक और एक से अधिक इञ्जिन वाले 6 विभिन्न प्रकार के वायुयानों में वह सफलतापूर्वक उडाने भर चुके है। इतना ही नही पिछले महायुद्ध-काल मे काम मे लाए गए 'हार्टस' किस्म के विमान और आधुनिक काल के 'नैट' और सुपर कान्स्टेलेशन्स जैसे यौद्धिक विमान चलाने का अनुभव भी उन्होने प्राप्त किया है।

46 वर्षीय श्री अर्जुनसिह का जन्म लायलपुर मे हुआ था, जो अब पाकिस्तान मे है। आपने शिक्षा भी पाकिस्तानी प्रदेश के माण्टगोमरी और लाहौर नगरो मे पाई।

1938 में अपने कालेज की शिक्षा तब अधूरी छोडी जब क्रामवेल (ब्रिटेन) स्थित वायुयान-चालको के प्रशिक्षण-केन्द्र मे प्रवेश के लिए आपको चुन लिया गया। इसके एक ही वर्ष बाद भारतीय वायुसेना का प्रवेश-द्वार आपके लिए खुल गया।

इसके बाद आप तेजी से तरक्की करते गए। 1946 मे आप विंग कमाण्डर बना

दिए गए और एक वर्ष के भीतर आपने ग्रुप-कैप्टन के रूप में अम्बाला-स्थित वायुसेना-केन्द्र की कमान सँभाल ली।

लगभग सात साल तक आप भारतीय वायुसेना के विभिन्न दस्तों के प्रमुख अधिकारी के रूप में काम करते रहे है। इस बीच विशेप प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए दो बार ब्रिटेन की यात्रा भी कर आए।

अपने सामरिक उपकरणों के सामर्थ्य और उनका सटीक उपयोग करने सम्बन्धी वायुसैनिको के कौशल के प्रति एयरमार्शल अर्जुनसिंह के अटूट विश्वास ने ही पिछले दिनों यह चमत्कार कर दिया है, जिससे विदेशी शक्तियाँ भी भारत का लोहा मानने के लिए विवश हो गई हैं।

माँ, तुम्हे जानकर खुशी होगी कि मुझे घर आने की इजाजत मिल गई है। आगामी सप्ताह में घर पहुँच जाऊँगा। फिर तुम्हे जो कुछ और पूछना होगा बताऊँगा। लगता है तुमने मेरे पत्रो की तो अच्छी खासी फाइल बनाकर रख ली है। बस घर आने पर दोनो मिलकर उनका सही उपयोग करने की योजना बना लेगे। उम्मीद है तुम्हे विनोद और शिब्बू ने भी अपने स्थल-सेना के योद्धाओ का वर्णन लिखा होगा। माँ, अपने वीरो ने इस युद्ध में जो हिम्मत दिखाई, वह इतिहास मे हमेशा अमर रहेगी। इसका वर्णन आधुनिक युग का महाभारत होगा। उम्मीद है, वीर चालकों की शौर्य-कथा उस गाथा का एक विशेप महत्वपूर्ण खण्ड होगा।

भारत-सरकार ने वायुसेना के जिन बहादुर चालकों को अब तक पुरस्कृत किया उनके नामो की सूची इस प्रकार है —

महावीर चक्र

विंग कमाण्डर डब्ल्यू० एम० गुडमैन

विंग कमाण्डर पी० पी० सिंह

स्क्वाड्रन-लीडर पी० गौतम

वीर चक्र

विंग कमाण्डर भरतसिंह

स्क्वाड्रन लीडर ट्रेवर कीलर
स्क्वाड्रन लीडर एम० एस० जटार
स्क्वाड्रन लीडर एस० हॉडा
स्क्वाड्रन लीडर ए० जे० एस० सॉधू
स्क्वाड्रन लीडर डेजिल कीलर
फ्लाइट लेफ्टिनेण्ट त्रिलोचन सिह
फ्लाइट लेफ्टिनेण्ट डी० एन० राठौर
फ्लाइट लेफ्टिनेण्ट ए० टी० कुक
फ्लाइट लेफ्टिनेण्ट ए० के० मजुमदार
फ्लाइट लेफ्टिनेण्ट वी० कपिल
फ्लाइट लेफ्टिनेण्ट एच० एस० मगत
फ्लाइग अफसर एस० सी० मैमगेन
फ्लाइंग अफसर ए० आर० गान्धी
फ्लाइग अफसर वी० के० नेब
फ्लाइग अफसर पी० पिंगले
फ्लाइट लेफ्टिनेण्ट वी० एस० पठानिया।

घर मे सब को मेरा यथायोग्य कहना। बस, अब अगले सप्ताह मै जरूर पहुँच जाऊँगा। बहनों को भी खबर कर देना। सब से एक बार ही मिलना हो जाएगा। एक महीने से अधिक छुट्टी तो मिलेगी नही। इसलिए सब एक ही जगह यदि एकत्रित हो सकें तो सुख-सुविधा रहेगी।

सादर—

आपका बेटा
जे० के०
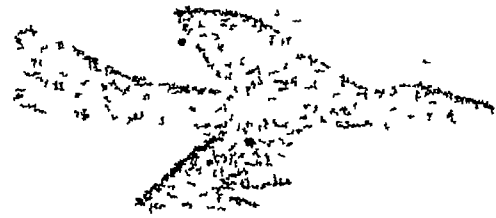
सिंहावलोकन

छम्ब के क्षेत्र मे नेटों का स्टारफाइरो और सेवरो से मुकावला आरम्भ हुआ, जिसका अन्त पाकिस्तानी बख्तरबन्द सेना और वायुसेना के बडे पैमाने पर विनाश से हुआ। यहीं पर भारतीय वायुसेना के छोटे नैट विमानों ने पाकिस्तान के ख्यातिप्राप्त सेवर और स्टारफाइटर विमानो के छक्के छुडाकर अपनी महत्ता कायम कर दी।

हमारे वायुसेनाध्यक्ष एयरमार्शल अर्जुनसिह ने बताया कि किस तरह वायुसेना को बहुत ही थोड़े समय में कार्रवाई करने को कहा गया। पाकिस्तानी टैंक छम्ब के इलाके मे घुसने की कोशिश कर रहे थे, और उन्हे हर कीमत पर रोकना था। 1 सितम्बर 1965 को शाम पाँच बजे के बाद भारतीय वायुसेना को कार्रवाई करने के लिए कहा गया। हमारे विमानो ने सूर्यास्त होने से पहले 28 उड़ाने भरी। एयरमार्शल ने कहा कि यह बड़ी शानदार कोशिश थी। हमले को विफल कर दिया गया और दुश्मन के अनेक सैनिक हताहत हुए। बड़ी तादाद मे टैंक नष्ट कर दिये गए। उन्होने कहा, मेरा विचार है कि इससे लड़ाई के रुख पर काफी असर पड़ा।

तब से, वायुसेना हमारी पैदल सेना को निरन्तर लड़ाई में अन्त तक सहायता

करती रही ।

हमारे विमान-चालकों ने जो शानदार कारनामे दिखाए, वह वर्षों से उस बड़ी योजना के ही फल है, जिसके अन्तर्गत उनको कई वर्षों तक प्रशिक्षण, युद्ध-कौशल और सामरिक दॉव-पेच के तरीके सिखाए जाते है । वर्षों के अभ्यास से हमारे विमान-चालकों ने लड़ाकू विमानों को चलाने मे निपुणता प्राप्त कर ली है और वे बड़ी आसानी तथा तसल्ली के साथ विमानों को चला सकते है, बीच-बीच मे रोक तथा उतार सकते है । वर्तमान युद्ध मे यह सारी बातें स्पष्ट हो गई है । इनमे तजुर्बे के कारण बहुत ही आत्म-विश्वास है । इसका प्रत्यक्ष प्रमाण उनका शौर्य है । यह शक्ति प्रदर्शन या दिखावे की बहादुरी से सर्वथा विभिन्न है । जब वे कैम्प मे थे, तब उन्होंने लाउड स्पीकार से आती हुई यह आवाज अचानक सुनी—"झपटो ! झपटो !!" उसके दो मिनट के अन्दर-अन्दर हमारे विमान आकाश मे पहुँच गए । नतीजा यह रहा कि आदेश और कार्रवाई के बीच लेशमात्र भी अन्तर नही पडा, कोई भी गड़बड़ नही हुई ।

पाकिस्तान के साथ हुए हाल के सशस्त्र सघर्ष के शुरू के दिनो मे पाकिस्तान के 6 सेबर जैट विमान हमारे उस इलाके में घुस आए, जिसकी रक्षा लडाकू विमान कर रहे थे । परिणाम यह हुआ कि सारे सेबर जैट मार गिराए गए और उनमे से एक भी वापस नही लौट सका । हमारे हवाबाज इतने कारगर और कुशल थे कि उनसे डर कर बाद के दिनों में पाकिस्तानी हवाई कार्रवाइयाँ केवल अँधेरे तक ही सीमित होकर रह गई थी । और वह भी इक्की-दुक्की होती थी । दुश्मन के बमवर्षको ने हमारे लडाकू विमानो का मुकाबला कभी नही किया । जिस भी क्षण उन्हे हमारे विमानों की उपस्थिति का एहसास होता था, वे अपने बचाव के लिए भाग निकलते थे ।

राडार के पर्दे पर दुश्मन के विमानों को ध्यानपूर्वक देखते रहने के लिए तैनात जवान हमारे लड़ाकू विमान-चालको की जीवन-रेखा थे, क्योकि कभी ऐसा हो सकता था कि दुश्मन का विमान अपना रुख बदल कर किसी कोने मे मुड़ जाता और चन्द सैकण्डो के लिए निगाहो से ओझल हो जाता, तो इन चन्द सैकण्डो मे ही हमारे जान-

माल को भारी क्षति पहुँच सकती थी। इसलिए राडार पर तेनात जवानों ने दुश्मन के ठिकानों का अन्दाज़ा लगाकर हमारे राष्ट्र की अमूल्य सेवा की और हमारी सुरक्षा-सेना को महत्त्वपूर्ण सहायता पहुँचाई।

भारतीय वायुसेना ने यह मालूम कर लिया कि स्टारफाइटर के साइड-विंडर प्रक्षेपणास्त्र नाक (अगले सिरे) के बल सीधे नीचे गोता लगाने वाले विमानो को नष्ट नही कर पाते। पाकिस्तान लड़ाकू विमानो के गर्मी पाकर छूटने वाले इन्फ्रा-रेड प्रक्षेपणास्त्र गर्मी पैदा करने वाले विमानों पर आकर लगते है, किन्तु यदि किसी पाकिस्तानी लड़ाकू विमान का निशाना किसी ऊपर उठते हुए भारतीय विमान की ओर लग रहा हो, तो जोड़-तोड़ करके, उसे सूर्य की ओर जाने के लिए बाध्य कर, निष्फल भी किया जा सकता है।

जब ये घातक प्रक्षेपणास्त्र (मिसाइल) छोडे गए, तो भारतीय लड़ाकू विमानों ने उनको अपने निकट आने के लिए पर्याप्त समय दिया—जो सुपर-सोनिक गति के हिसाब से एक सैकंड का भी अश होता है और तब उन्होने नाक के बल नीचे गोता ले लिया अथवा उनको धोखे मे रखने के लिए रोक लिया। अधिकाश क्षेत्रों मे शत्रु के विमानो को घातक अस्त्रों से रहित कर दिया गया और तब हमारे विमानों ने उनके निकट पहुँच कर उनके निचले भाग को अपना निशाना बनाकर उन्हे नष्ट कर दिया।

भारतीय राडार स्टेशनों को यह भली भाँति मालूम था कि भारतीय वायुसेना के कोने-कोने-से विमान कहाँ-कहाँ युद्ध में लगे हुए है, इसलिए अन्य सभी विमान शत्रु के विमान ही समझे गए।

40,000 फुट के नीचे की सतह पर जहाँ-जहाँ भी वैमानिक युद्ध हुए, उनमें शत्रु के विमान को बीच में ही रोकने वाले हमारे नैट विमान, सेबर तथा स्टारफाइटर विमानों की तुलना में अधिक युद्ध-कुशल और कामयाब साबित हुए। नैट विमान की गति सेबर विमान से अधिक तथा नीचे की उड़ानों मे स्टारफाइटर विमानों जितनी है। सामरिक दृष्टि से उन विमानों में अधिक जोड़-तोड़ करने की क्षमता है, जिसके परिणामस्वरूप, ये विमान धूएँ मे गर्म होकर स्वयं निकल पड़ने वाले प्रक्षेपणास्त्रों मे

बचने मे सफल हुए । ये प्रक्षेपणास्त्र बिलकुल ही व्यर्थ सिद्ध हुए । हंटर विमानों ने भी वैमानिक युद्ध मे अपनी कुशलता का अच्छा परिचय दिया। मिस्टियर विमान मुख्यत: पैदल सेना को सम्बल प्रदान करने के कार्य मे भी लगे हुए थे ।

वायुसेना मे कम-से-कम चार प्रकार के विमान होने चाहिए—बमवर्षक, लडाकू, परिवहन-विमान तथा जासूसी विमान ।

भारी बमवर्षको तथा जैट विमानों के निर्माण के साथ-साथ लम्बी तथा विशेष रूप से बनी हवाई पट्टियो से युक्त, अत्यन्त सावधानी के साथ बने हवाई अड्डे भी अत्यधिक आवश्यक हो गए। गुप्तचर विभाग, राडार, पुर्जो, मरम्मत तथा रख-रखाव, अन्य सामग्री की व्यवस्था आदि जैसी सुविधाओ के साथ-साथ उपर्युक्त विमानो सहित एक सगठित वायुसेना की व्यवस्था होती है ।

एक आलोचक का कहना है कि आम व्यक्ति के लिए विमान-युद्ध बहुत व्यापक, जटिल, अव्यवस्थित तथा सम्भवत. दूरगामी होता है। इसमे मोर्चे की कोई पक्ति नहीं होती, न कोई क्षेत्र ही अधिकार मे आता है और न प्रदर्शन-योग्य सैनिक तथा अस्त्र-शस्त्र ही पकड़ मे आते है। तो भी हमारी स्थल-सेना को जो सफलता मिली है, उसका बहुत-कुछ श्रेय भारतीय वायुसेना को है, जिसने उसे हवाई आड़ दी ।